राजस्थानी गद्य संकलन

सम्पादक
डॉ. कल्याणसिंह शेखावत

राजस्थानी साहित्य संस्थान, जोधपुर

प्रकाशक :
राजस्थानी साहित्य संस्थान
यू. आई. टी. के पास,
जोधपुर

द्वितीय संस्करण 1990

मूल्य : तीस रुपये मात्र

मुद्रक :
प्रिंटिंग हाउस,
जालोरी गेट के अन्दर
जोधपुर

भूमिका

ओ 'राजस्थानी गद्य संकलन' राजस्थानी भाषा रा विद्यार्थियां री जरूरतां नैं सामी राख'र त्यार करयो है। जुगां जूनी अर समृद्ध आपणी मायड़भाषा राजस्थानी आजादी रैं कई बरसां पछै भणाई-गुणाई री भाषा बणी है। विद्यालयां सूं लै'र विश्वविद्यालयां ताईं दूजी भाषावां री भांत राजस्थानी भी पाठ्यक्रम री भाषा बणी है। इणसूं महामना पंडित मदनमोहन मालवीय अर गुरुदेव कविंद्र रविन्द्रनाथ टैंगोर रा संकळप पूरा हुआ है। ईं खातर संस्कृत, हिन्दी अर अंगरेजी सूं किणी भांत हळको पाठ्यक्रम राजस्थानी रो नी व्है—आ दीठ राख'र आ पोथी त्यार करीजी है।

यूं तो राजस्थानी भाषा रा पद्य अर गद्य दोनूं तरैं रो—न्यारी निरवाळी विधावां में घणोई साहित्य मिळै पण आज रो जुग गद्य साहित्य रो जुग बाजै। गद्य री कई विधावां में जिण नुवां साहित्य रो लेखन आज हू रियो है, उणरी बानगी इण संकलन में दैवण री मैं पूरी कोसीस करी है। इण गद्य सकलन नैं ओपतो बणावण री मैं पूरी खेंचळ करी है—पण साची परख तो पारखी हीं करसी। ज्ञान-विज्ञान सूं लै'र इतिहास, साहित्य अर संस्कृति रा मनभावण चितराम दिखावणी री भरपूर कोसीस करी हां जिणसूं बाळक खुद री जलम-भोम, मायड़भाषा, उणरा साहित्य अनैं संस्कृति री छिब हीयैं अंगेज सकैं। इण संग्रै रा लेख ज्ञान-विज्ञान, जात्रा-वर्णन, धरम, इतिहास, जीवण चरित, तीज त्यूंहार, राजस्थानी जीवण दरसण अर गत गुमेज रैं सागै-सागै आज रैं जुग री जाणकारी करा सकै आ दीठ राखीजी है।

मैं आ भी कोसीस करी-हूं 'क जठाताईं व्हे सकै राजस्थानी भाषा री खास-खास बोलियां जियां मारवाड़ी, मेवाड़ी, हाड़ौती, ढूंढाड़ी, शेखावाटी आद रा ओपता चितराम इण खूबी सूं राख्या जावैं'क वा सबा रा न्यारा-न्यारा दर-साव राजस्थानी भाषा रो फूटरो अर टकसाळी रूप दरसायो जा सकै। इण खातर राजस्थानी री टाळवीं गद्य रचनावां इण संकलन मे राखीजी है।

ओ गद्य संकलन प्रांत रा विद्यालयां अर विश्वविद्यालयां रा राजस्थानी पाठ्यक्रमां राखीज्यो अर विद्यार्थियां मे, इणरी मांग वधी। इणी वास्तै इणरो ओ दूजो संस्करण निकाळ रिया हां।

ओ संकलन राजस्थानी भाषा रा विसाळ साहित्य भण्डार री की ओळ-खाण करा सकसी इणी उम्मीद सागै इणनैं पारख्यां सामी राखूं।

डॉ. कल्याणसिंह शेखावत
सम्पादक

विगत

अणोर् अणीयान्, महतो महीयान्

नरोत्तमदास स्वामी

(1)

उपनिषद में परमात्मा नै अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् कैयो है—छोटै सूं भी छोटो और बडै सूं भी बडो। पण परमात्मा ही नहीं, जिण जगत में परमात्मा व्याप्त है बो जगत भी, परमात्माआळी दाईं ही अणु सूं भी अणु और महान सूं भी महान है।

(2)

पैली आपां अणु सूं भी अणु नै लेवां—

जगत रा सगळा पदार्थ तत्त्वां सूं बणियोड़ा है। इण तत्त्वां री संख्या 92 है। तत्त्व रै सब सूं छोटै भाग नै परमाणु कैवै। परमाणु अणु वणावै और अणुवां सूं जगत रा सगळा पदार्थ वणै। अणु कई भांत रा हुवै—कई अणु अेक ही तत्त्व रै अेक परमाणु सूं वणै, कई अेक ही तत्त्व रै अनेक परमाणुवां सूं वणै, और कई अनेक तत्त्वां रै परमाणुवां सूं वणै। अनेक रो मतलब अठै अेक सूं अधिक है अर्थात् दो या दो सूं वेशी। सोनै रो अणु अेक परमाणु सूं वणियोडो हुवै; आक्सीजन रो अणु आक्सीजन रै दो परमाणुवां सूं वणै और पाणी रो अणु आक्सीजन रै अेक तथा हाइड्रोजन रै दो परमाणुवां रै मेळ सूं वणै।

पैली विज्ञान रै विद्वानां री मानता ही कै परमाणु रा और खंड नहीं हुय सकै, बो अखंडनीय और अविभाज्य है। यूनानी भाषा में परमाणु नै atom कैवै जिण रो अर्थ हुवै अ-विभाज्य। पण अबै, रेडियोधर्मिता रै आविष्कार पछै, परमाणु अखण्डनीय नहीं रैयो है। उण नै तोड़ीज सकै है। तोड़ियां सूं परमाणु मूळ कणां में विभक्त हु ज्यावै। मूळ कणां में तीन मुख्य है—प्रकण, निकण और विकण अर्थात् प्रोटोन, न्यूट्रोन और इलेक्ट्रोन। परमाणु रै केन्द्र में अर्थात् मध्य भाग में नाभिक हुवै जिण में प्रोटोन और न्यूट्रोन रैवै। परमाणु सौरमंडळ जियां हुवै। सौरमंडळ में पृथ्वी वगैरा ग्रह न्यारी-न्यारी कक्षावां में सूरज री परकमा करै जियां ही न्यारा-न्यारा इलेक्ट्रोन

न्यारी-न्यारी कक्षावां में नाभिक री परकमा करै। सौरमंडळ में ग्रहां री तुलना में अपार खाली जागां है, जियां ही परमाणु में भी घणी-सी जागां खाली हुवै।

परमाणु में ऊपर बताया तीन मूळ कणां रै अलावा और घणा मूळ कण हुवै। इणां री संख्या 100 रै भी ऊपर पूग चुकी है। इणां में न्यूट्रोन वास्तव में मूळ कण नहीं है क्योंकै नाभिक सूं न्यारी हुतां ही वो प्रोटोन और इलेक्ट्रोन में विभक्त हु ज्यावै।

सब सूं हळको परमाणु हाइड्रोजन तत्त्व रो हुवै। उण में अेक प्रोटोन और अेक इलेक्ट्रोन हुवै। उणरो परमाणविक भार लगभग 1 हुवै। हेलियम तत्त्व रै परमाणु में नाभिक में दो प्रोटोन और दो न्यूट्रोन हुवै तथा दो इले-क्ट्रोन उणां री परकमा करै। हेलियम रो परमाणु भार 4 हुवै अर्थात् हाइड्रो-जन सूं कोई चौगणो। सोनै तत्त्व में नाभिक में 79 प्रोटोन और 118 न्यूट्रोन हुवै जिण रै बार कर 79 इलेक्ट्रोन 6 कक्षावां में परकमा करै। सब सूं भारो तत्त्व यूरेनियम है जिण रै परमाणु में 92 प्रोटोन और 146 न्यूट्रोन हुवै और 92 इलेक्ट्रोन 7 कक्षावां में परकमा करै। उण रो भार 238 हुवै। परमाणु रो लगभग सगळो भार नाभिक में रैवै क्योंकै इलेक्ट्रोन में तो भार नांव-मात्र रो ही हुवै। प्रोटोन इलेक्ट्रोन सूं 1836 गुणो भारी हुवै।

न्यारा-न्यारा तत्त्वां में वै ही मूळ कण हुवै पण हरेक तत्त्व में प्रोटोन, न्यूट्रोन और इलेक्ट्रोन री संख्या में फरक हुवै। परमाणु में जित्ता प्रोटोन हुवै उत्ता ही इलेक्ट्रोन हुवै। इलेक्ट्रोनां में ऋण वीजळी रो आवेश हुवै; प्रोटोनां में धन वीजळी रो और न्यूट्रोन आवेश-रहित हुवै।

अणु, परमाणु अर मूळ-कण कित्ता छोटा हुवै ? पाणी रै अेक अणु रो अर्धव्यास 10^{-6} अर्थात् 1/1000000 सेंटीमीटर अर्थात् अेक सेंटीमीटर रो दस लाखवों भाग हुवै। दस लाख अणुवां नै कनै-कनै अेक कतार में राखीजै तो इण कतार री लंबाई मामूली कागद री जाडाई रै बराबर हुवै। पृथ्वी रा सगळा समंदरां, नदियां और सरोवरां में जित्ता गिलास पाणी है उणा सूं दो हजार गुणा अणु अेक गिलास भर पाणी में हुवै। पाणी री अेक बूंद नै पृथ्वी जित्ती वडी कर देवो तो पाणी रै अेक अणु रो आकार अेक छोटी गेंद रै बराबर हुसी।

अेक परमाणु रो अर्धव्यास मोटै तौर सूं 10^{-8} अर्थात् 1/10,00,00,000 सेंटीमीटर अर्थात् अेक सेंटीमीटर रै कोई दस करोड़वें भाग रै बराबर हुवै[1]

---

1 दवारोफ और चेंबर्स : डिक्शनरी आफ् सायंस, पृष्ठ 25

(ग्रेक इंच रै कोई 25 करोड़वें भाग रै बराबर)। इण रो मतलब ओ हुयो कै पचीस करोड़ परमाणुवां नै बराबर-बराबर ग्रेक कतार में जमायनै राखां तो कतार री लंबाई कोई दो इंच हुसी। 'पेनी' नामक ग्रंग्रेजी सिक्कै री जाडाई कोई दस करोड़ परमाणुवां री कतार रै बराबर हुवै। पाणी हाइड्रोजन ग्रर ग्राक्सीजन रै मेळ सूं बणै। ग्राधी छटांक पाणी में ग्राक्सीजन रा कोई 10^{24} ग्रर्थात् ग्रेक करोड़ शंख परमाणु हुवै।

प्रोटोन रो ग्रर्धव्यास 10^{-12} ग्रर्थात् 1/10,00,00,00,00,000 सेंटीमीटर हुवै ग्रर्थात् ग्रेक सेंटीमीटर रो दस खड़बवों भाग[1]। इलेक्ट्रोन तो ग्रौर ही छोटो हुवै। उण रो ग्रर्धव्यास कोई 10^{-13} ग्रर्थात् 1,00,00,00,00,00,000 सेंटीमीटर हुवै ग्रर्थात् ग्रेक सेंटीमीटर रो ग्रेक नीलवों भाग[2]। बराबर-बराबर जमायां सूं ग्रेक इंच में कोई सवा नील इलेक्ट्रोन हुवै।

(2) महतो महीयान्

पृथ्वी नै मही, भूमि ग्रौर ग्रनन्ता कैवै, कारण बा बडी है, लांबीचौडी है, घणी विशाळ है ग्रौर उण रो ग्रंत निजर में नही ग्रावै। पण पृथ्वी, मही, भूमि ग्रौर ग्रनन्ता कैयीजणवाळी इण पृथ्वी री ग्राकाश में दीखणवाळा ज्योतिपिण्डां में कोई गिणती नहीं है।

रात रै वखत ग्राकाश में ग्रणगिणत ज्योतिपिण्ड चमकता दीसै। ग्रै ज्योतिपिण्ड दो भांत रा है—(1) नक्षत्र ग्रौर (2) ग्रह ग्रौर उपग्रह। नक्षत्र घणा वडा हुवै ग्रौर ग्राप री चमक सूं चमकै। ग्रह ग्रौर उपग्रह छोटा हुवै ग्रौर वै नक्षत्र री चमक सूं चमकै। सूरज, ध्रुव, रोहिणी, व्याध, ग्रगस्त्य ग्रौर ज्येष्ठा नक्षत्र है ग्रौर बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगळ, वृहस्पति, शनि, ग्ररुण (यूरेनस), वरुण ग्रौर यम (प्लूटो) ग्रै नव ग्रह है जिका सूरज रै चारकर परकमा करता रेवै। चन्द्रमा उपग्रह है। वो पृथ्वी रै चारकर परकमा करै। ग्रहां में बुध सगळां सूं छोटो ग्रौर बृहस्पत सगळा सूं वडो है। बुध रो व्यास कोई तीन हजार मील है ग्रौर बृहस्पत रो कोई छयासी हजार मील। सूरज पृथ्वी सूं 13 लाख गुणो वडो है; पृथ्वी जित्ता-जित्ता 13 लाख पिंड हुवै जद कठैई जायनै सूरज रै बराबर हुवै।

सूरज ग्रहां सूं घणो वडो है पण घणा सारा नक्षत्र सूरज सूं भी वडा

---

1 उवारोफ् ग्रौर चैपमैन : विग्यानरी बारा् सायल, पृष्ठ 25

2 सामी

है। सूरज ग्रेक ग्रौसत बडाई रो नक्षत्र है, बडा नक्षत्रां में उण री कोई गिणती कोनी। सूरज सूं बडा नक्षत्रां में कई-ग्रेक इण भांत है—

नक्षत्र	सूरज सूं कित्तो बडो	नक्षत्र	सूरज सूं कित्तो बडो
व्याध—	6 गुणो	भरत	9 हजार गुणो
ग्रभिजित् —	13 गुणो	स्वाति	27 हजार गुणो
मघा—	125 गुणो	रोहिणी	54 हजार गुणो
ब्रह्महृदय—	1728 गुणो	ग्रार्द्रा	2 करोड़ गुणो
		ज्येष्ठा	11 करोड़ गुणो[1]

नक्षत्रां में ज्येष्ठा, ग्राप रै नांव रै मुजब, सब सूं वडो है। बो ग्रेकलो ही 11 करोड़ सूरजां रै बराबर है। बो इत्तो वडो है कै मंगळ ग्रह री भ्रमण कक्षा समेत सगळो सौर-परिवार उण में सोरो-सोरो समाय जावै।

सूरज पृथ्वी सूं कोई 930 लाख मील दूर है। रोसणी ग्रेक सेकंड में 1,86,000 ग्रेक लाख छयांसी हजार मील (कोई तीन लाख किलोमीटर) चालै। सूरज री रोसणी नै पृथ्वी तांई ग्रावतां कोई 9 मिनट लागै। पण पृथ्वी ग्रौर सूरज रै जिको नेड़लो-ईन्नेडलो नक्षत्र है (प्रोक्जीमा सेंटारी) उण री रोसणी नै ग्रठै ग्रावतां च्यार वरसां सूं ऊपर वखत लागै। इण रो मतलब ग्रो हुग्रो कै ग्रो नक्षत्र ग्रठै सूं कोई ग्रढाई नील मील दूर है। सूरज ग्रौर इण नक्षत्र रै बीच में दूजो कोई नक्षत्र कोनी। बीच री सगळी जागां खाली जागां (ग्रवकाश ग्रथवा थोथ मात्र) है। सगळा नक्षत्र इणी भांत ग्रेक दूजै सूं घणा-घणा ग्राधा है।

ग्रेक-दूजै सूं ग्रड़बां-खड़बां मीलां री दूरी माथै बिखरियोड़ा ग्रै सगळा नक्षत्र ग्राकाशगंगा नामक विश्व रै मांयनै है। ग्राकाशगंगा में कोई एक खड़ब नक्षत्र है।[2] ग्राकाशगंगा रो विस्तार घणो मोटो है। उण रै ग्रेक सिरै सूं दूजै सिरै तांई पूगण में रोसणी नै कोई ग्रेक लाख प्रकाश-वर्ष लागै[3] (ग्रेक प्रकाश-वर्ष कोई 58 खड़ब मीलां रै बराबर हुवै)।

इण ब्रह्माण्ड में ग्राकाशगंगा जिसा-जिसा लाखनलाख विश्व है। ग्रै विश्व नीहारिकावां रै रूप में दीसै। इण विश्वां रै बीच में ग्रपार खाली जागां ग्रर्थात् ग्रवकाश या ग्राकाश है। ग्रवकाश जाणै ग्रेक विशाल समंदर है।

---

1 मोफोकैरे : जर्नी थ्रू दि युनिवर्स।
2 गोल्डन बुक आफ् ऐस्ट्रानामी, पृष्ठ 74
3 वाही, पृ 74

समदर में जियां अनेक टापू तैरता रैवै जियांई अवकाश में अै विश्व जाणैं तैरता रैवै ।

देवयानी (अॅंड्रोमीडा) री नीहारिका आकाशगंगा रै निकट री नीहारिका है । उठै सूं अठै तांई आवतां रोसणी नैं कोई 15 लाख वरस लागै ।[1] उण सूं आगै घणी दूरी तांई करोड़ूं नीहारिकावां आकाश में विखरियोड़ी है ।

संसार री सब सूं वड़ी दूरबीण अमरीका में पलोमार पहाडी पर है । उण में लागियोड़ै काच रो व्यास दो सौ इंच है । बा मिनख री आंख री तुलना में साढी तीन लाख गुणी रोसणीं वटोरै । उण सूं दो अरब प्रकाश-वर्ष तांई री दूरी पर मौजूद नीहारिकावां देखी जा सकै है । इण नीहारिकावां रै आगै कांई है इण वात नैं जाणण रो मौजूदा हालत में कोई साधन नहीं है ।

कित्तो विशाल है आपणो ओ ब्रह्माण्ड ! और कुण जाणैं इसा-इसा विशाल कित्ता ब्रह्माण्ड है इण जगत् में, इण संसार में, परमात्मा री इण सृष्टि में ।

इण भांत आपां देखियो कै ओ जगत् भी आप रै नियामक परमात्मा आळी दाई ही, अेक ही साथै अणोर् अणीयान् और महतो महीयान् दोनूं है ।

---

1 गोल्डन बुक आफ् अॅस्ट्रानामी, पृष्ठ 77

चंदनमाळ

रामसिंह

(१) प्रेम रो दृष्टिकोण

म्हारो हृदय हूं थांरै आगै खोलनै राखतां डरूं हूं—कठैई थे आ नीं कै बैठो कै इण नै तो मैं कदैई देख चूको हूं।

म्हारै गावणै में सुरमंग क्यों हुवै इण रो कारण थांरी आंखियां री कोर सूं बूझो।

हूं थांनै म्हारो काव्य नहीं सुणाऊं हूं; मनै डर लागै है कै कठैई थे प्रशंसा रा पुळ बांधण नीं लाग जावो।

थे मनै संसार भर में सगळां सूं सुन्दर समझो इण खातर हूं थांरै आगै मूंडो लुकाय लेऊं हूं पण इण नै थे कदास लज्जा रो परिणाम नीं समझ लेवो इण वास्तै हूं थांरै आगै निशंक हुयनै आऊं हूं।

निशीथ री नि.स्तब्धता में जद थे एकांत में म्हारै सूं मिलण नै आवो तो म्हारी इच्छा भाग जावण री हुवै। थे हंस नै कैवो—आछो, जावो। जणै म्हारै मूंडै सूं नीकळै—ना ! हूं को जाऊं नी।

जे हूं आभूखण सजाय नै आऊं तो थे पूछो—आज औ आभूखण इत्ता सुवावणा क्यों लागै है ?

और जे हूं सादा वस्त्रां मे आऊं तो थे कैवो—ओहो ! आज ओ निष्कळंक चन्द्रमा धरती माथै कठै सूं ऊग आयो।

फेर थे ही बतावो, हूं थांरै कनै कियां आऊं ?

(2) प्रेम रो व्यवहार

जद हूं जाचकां नै की देवण नै जाऊं तो बै भी उणां री पंगत में आ बैसै। बै हाथ आगै करै और हूं उणां रै कानी देखूं भी नहीं हूं।

सगळा जणा दान लेयनै जावै परा जद हूं उणां नै कैऊं हूं—थे आप दे सको हो उण नै मागण नै आवो हो। हूं थांनै जाणूं हूं।

बै घोखा-चोखा उपहार लेयनै आवै और म्हारै आगै हाथ जोड़ियां ऊभा रैवै। हूं व्यंगपूर्ण हंसी हंसनै कैऊं— हूं आप दे सकूं हूं उण नै थे मनै देवण नै आवो हो। हूं थांनै जाणूं हूं।

ढळतोड़ी रात में ओस सूं भीजियोड़ै शिरीष रै फूलां री सुगन्ध लेयनै समीर म्हारै घरै आवतो हो। म्हारी आंख लागगी और मैं सपनै में उणां नै कैवता सुणिया—कांई तूं मनै प्यार करै है ?

थे इसो प्रश्न पूछो हो जिण रो उत्तर थे ही जाणो हो—मैं झुंझळायनै उथळो दियो।

फेर भी थारै देवण-लेवण में और कैवण-सुणण में अेक अपूर्व आनन्द है—इयां कैयनै बै म्हारी नींद रै सागै-सागै कुण जाणै कठीनै रम जावै।

(३) तूं और थारी बैनां

तूं चिणा चूंटै जद थारी छोटी-छोटी बैनां नींब री नान्ही-नान्ही डाळियां माथै बैठी-बैठी गीत गावै। उणां रो गीत बन्द हुसी जद ही थारो काम समाप्त हुसी और तूं उणां रै सागै-सागै आंबां रै कुंज कानी उड जासी।

वेलां सूं छायोड़ी थारी झूंपड़ी रै द्वार माथै गाय ढीकै है और थारी वाछी ऊपर लटकतै फूल नै जीभ सूं पकड़णो चावै।

धान माथै पडती थकी सूरज री आखरी स्वर्ण-रश्मियां थारै केसां और कपोलां माथै, और थारी बैनां रै कंठां और पांखां माथै पड़ै।

रात में प्रकृति थां सगळां री आत्मा में विश्राम करै और बा ही थारै दिमाग में दूर देसां रा सपना भरै।

आकाश थारै लिलाड़ नै, और निशापति थारी निमीलित आंखियां नै चूमण नै आवै।

तारा थारै अविरल घुंघराळा केसा मे आंखमींचणी रमै।

फेर उषा आयनै थारै कोमल कपोलां नै स्पर्श करै, जद तूं नदी रै किनारै माथै फूल चूंटै और थारी बैनां उण री लैरां में संगीत भरै।

(४) दरिद्र रो दान

जे जावणो ही हो तो आया क्यों हा ?

जद-कदैई थे आवो तो विदा मांगता ही आवो हो।

याचक ! मैं तो थारी दान-वीरता री घणी प्रशंसा सुण राखी ही, फेर आ उळटी रीत क्यों ?

जे जावणो ही हो तो आया क्यों हा ?

म्हारो ग्रौर थारो कोई पैलां रो सम्बन्ध है कांई ? ग्रौर जे नहीं, तो बस म्हारै ही कनै मांगण नै क्यों आवो हो ?

हूं दरिद्र, दरिद्र सूं भी दरिद्र हूं, ग्रौर ये ही म्हारा सर्वस्व। लो, देखो ! इण वार थांनै ही त्यागनै त्याग रो आदर्श देखाऊं हूं।

जे जावणो ही हो तो आया क्यों हा ?

रामजी भला दिन देवै

डा. मनोहर शर्मा

बात कहणै री चीज है। राजस्थान में बात कहणै रो शैली विकसित भी खूब होई। आज भी अठै कई इसा बातळ मिळै है जिका आपरी कळा सूं सुणबा आळां नैं चितराम सा बणा देवै। न बै बात कहता हार मानै अर न बांसूं सुणबा आळा ई उकतावै। बात सरू करणै सूं पहली बे नेम सूं आपरी भोमका बांधै—

बात में हुंकारो, फोज में नगारो।
कोई नर सोवै, कोई नर जागै।
सूत्योड़ां री पाघड़ी, जागता ले भागै॥
बातां हूंदा मामला, दरियावां हूंदा फेर।
नदियां बहै उतावली, घिर-घिर घालै घेर॥
बात का चालणा, संजोग का मीवणा।
जीवो बात का कैणिया, जीवो हुंकारा देणिया।
रामजी भला दिन देवै .. ..

औ वक्तव्य ध्यान देवण जोग है। इण मांय लोककथा रा सारा तत्व समायोड़ा है। बात कहबा आळे नैं जद ई आनन्द मिळै, जद सुणबा आळा उण री बात मे पूरो रस लेवै। जे औ ठाठ न जमै तो बात विना नगारै री फोज सी लागै। कथासरित्सागर मांय अेक कथा नायक बात सुणतो नींद ले लेवै है तो उण ऊपरां आकास री देवियां कोप करै है। लोक विश्वास रै इण कोप रो निवारण करणै खातर 'जीवो' सब्द रो प्रयोग चल्यो आवै है।

बातां री दुनिया घणी रंगीन होवै है। अठै भांत-भांत री घटनावां री झांकी आगै आवै। आ चीज नदी रै बुहाव सूं समझाई गई है। घणखरी लोककथावां घटणाप्रधान होवै है अर बां में संजोगतत्व री न्यारी ई छटा मिळै। ई तत्व री महिमा ने समझ'र ई भोमका-भाग मांय ईं रो साफ संकेत करयो गयो है। संजोग सूं कुतूहळ जागै अर बात में रोचकता आवै। मांगळिकता खातर रामजी रो ध्यान करयो गयो है। सायै ई औ बात री सुखान्त

परिणति रो सूचक भी है। इतरी भोमका बांध'र बात कंवणियो मूळ बात नैं सरू करै।

अठै बात रै मांगळिक तत्व नैं समझावण सारू थोड़ी सी चुगवां बातां सार रूप में दी जावै है। अै बातां घणी रोचक अर लोकप्रिय है।

(1)

अेक बामण भोत गरीब हो। बै री लुगाई भली ही पण घणी री कमाई बिना बिचारी के कर सकै? आखर बामण कमावण नैं घर सूं निसरयो। बैं री बिरामणी कलेवो करणै खातर रात नैं चूरमै रा च्यार लाडू बणाया अर अेक चीलड़ै में बांध'र धणी नैं सिघ करतां बखत सूंप्या। बामण मोळो हो। बो मारग मे चाल्यो अर चालतो ई रैयो। आखर बीड़ मे अेक जोहड़ पर सांझ होगी तो बामण रुकग्यो। भूख घणी जोर सूं लागरी ही पण बीड़ री झाड़ियां पर बिना रुत रा बोर पाक्योड़ा नजर पड़या। लोभ में आय'र बामण आपरा लाडू कोनी खाया अर बोरियां सूं पेट भर लियो। पछै बो जोहड़ री पाळ पर सोयग्यो।

रात नैं च्यार चोर बीड़ में घणो धन लेय'र आया अर पांती करबा बैठ्या। पण च्यारवां नैं ई भूख सतावै ही। अेक चोर सूत्योड़ै बामण री पोटळी सिराणै सूं धीरै सी काढ़ ल्यायो। पोटळी में चूरमै रा च्यार लाडू देख'र चोर भोत राजी होया अर अेक-अेक लाडू लेय'र खा लियो। लाडू खाया अर चोरां नैं नींद आवण लागी। पछै च्यारूं इसा सोया कै कदे जाग्या ई कोनी। जद बामणी आप रै घरां रात नैं चूरमो ऊंखळी में कूट्यो तो अन्धेरै मे बठै बैठ्यो अेक सांप भी सागै ई कुटग्यो अर लाडुवां में मिलग्यो। लाडू जहर रा हा। पण ई चीज रो न बामणी नैं बेरो अर न बामण नैं। चोर मारया गया।

आगलै दिन बामण उठयो तो च्यार मरयोड़ा मिनख अर घणो मान नजर आयो। बामण माल उठायो अर गांठ बांध'र पाछो ई आप रै घर रो मारग लियो। बामण पाछो घरां पूग्यो तो सांझ होय चुकी ही। उणी दिन बामण री गाय बीड मे ब्यायी अर बाछो ल्यायी। पण सागै ई अेक घोड़ी भी बठै ई ब्यायी। कोई रुखाळो हो कोनी। बाछड़ियो घोड़ी रै थणां पड़ग्यो अर बछेरो गाय नैं आपरी मा मान लीनी।

घर में आय'र बामण आपरी लुगाई रै आगै धन री गांठ खोली तो बा अचरज में मरगी। पाछै बामण सारी बात बताई अर गाय रै साथै बछेरो देख्यो तो बोल्यो—

बात भली, दिन बावड़या, वन मे पाक्या बोर ।
घर भींड़ी घोड़ो जण्यो, लाडू मारया चोर ।।

ई बात रा रूपान्तर भी सुण्या जावै है पण संजोग तत्व रै प्रभाव रो ओ अेक खासा नमूनो है। लाडुवां में जेहर रो मिलणो, बिना रुत बोरां रो पाकणो, चोरां रो माल बामण रै हाथ आवणो, गाय रै थणां बछेरै रो पड़णो, अै सारा काम संजोग सूं होया है । अेक रै पछै दूजै संजोग री कड़ी-सी जुड़ती गई अर पूरी बात बणगी । ओ दिन रो फेर है । जद आदमी रो दिन बावड़ै तो आपै ई भलेरो संजोग बैठतो जावै अर अणचींत्यो लाभ मिलतो चालै । इसै दिनां नै ई 'पाधरा दिन' कया गया है । बामण रा दिन पाधरा होया तो बो बिना चेष्टा ई धन सूं घर भर लियो ।

(2)

अेक सेठ रै सात बेटा हा अर दिसावरां में कई दुकानां चालती । सेठ रा बेटा न्यारी-न्यारी दुकान संभाळता । ल्होड़ियो बेटो घरां रहतो । ब्याह होयां पछै बो भी दिसावर जावण री त्यारी करी । उण री बहू मोत बड़ै घर री ही । दिसावर जावती बेळा सेठ रो बेटो घरकां नै समझाया कै बहू नै कदे भी महल सूं नीचे मतना बुलायो अर सारी चीजां दासी रै हाथ ऊपर चोबारै मांय ई पूगता रैयो ।

सेठ रो बेटो दिसावर चल्यो गयो अर उण री बहू कदे महल सूं नीचे ई नीं उतरी । बहू रात नै चौबारै मे सोवती जद उण नै अेक नई बोली सुणाई पड़ती—"मैं आवूं, मैं आवूं ।" बहू चतर ही । बा सदा ई चुप रहती । यूं साल भर बोली सुणती रैयी । बहू क्युं भी उत्तर कोनी दियो अर न किणी रै आगै ई चीज री चर्चा ई करी ।

पछै सेठ रो बेटो दिसावर सूं आयो । रात पड़गी ही । बहू नै फेर बा ई बोली सुणी—"मैं आवूं, मैं आवूं ।" सेठ रै बेटै री बहू मन में सोची—अब तो उण रो धणी घरां आयग्यो, अब किण रो डर है ? यूं सोच'र बा बोली—"आवूं आवूं के करै है, भलां ई आज्या ।" पण ओ तो भिखो (संकट) हो । भिखो छोटो सो गीगलो बण'र बहू री गोद मांय आयग्यो । बहू चकित होई । इतरै में ई उण रो पति महल में पग धरयो अर बहू री गोद भरी देखी तो उण रै कोप चढ्यो । सेठ रो बेटो बहू नैं पिलंग समेत ई उठाय'र ढोळी पर सूं तळै पटक दी ।

महल नदी सूं सट कर हो । बहू समेत पिलंग नदी में पड़ग्यो अर पाणी

मे वह चाल्यो। गोदी रो गीगलो गायब होग्यो। बीचारी बीनणी आपरी बोली पर घणी ई पिसताई पण अब के बणै ? बा पिलंग पर बैठी नदी मे वह चाली।

आगै जाकर माल-सी फाटी अर पिलंग किनारै लाग्यो। किनारै पर आयोड़ो अेक दूसरो सेठ पिलंग नै देख्यो तो लेवण नै मनस्या करी। जद सेठ पिलंग नै पकड्यो तो ऊपर अेक लुगाई नै सूती देखी। वो उण नै आपरी धरम री बेटी बणा'र घरां ले आयो। यूं सेठ रै बेटै री बहू नै भिखै मे दो पगां नै ठोड मिली। बा बोली--'मैं काम करे बिना पराई रोटी कोनी खावूं।' उण नै दीवै-बाती रो काम सूंप दियो गयो। बा सारी-सारी रात सेठ रै बेटा रै महल मे बारी-बारी सूं दीवै री रुखाळी करती अर दिन में आप सोवती।

यूं करता कई दिन बीतग्या। अेक दिन सेठ रै बेटै रो बहू रो भाई आपरी भैण नै लेवण नै आयो। आज ई पावणै रै महल मे दीवै री रुखाळी करणी ही। पावणो जीम'र महल में सोवण नै आयो तो दीवै आळी नै देखी अर बोल्यो कै उण नै सारी रात च्यानणै री जरूरत कोनी, बा जा सकै है। पण बा आप रो काम छोड'र गई कोनी तो फेर पावणो आ ई बात ओजूं बोल्यो। बा फेर भी कोनी गई तो पावणो उण नै नेडै-सी आय'र देखी। आ लुगाई तो उण री ब्यायोड़ी बहू नीसरी। बहू आपरै धणी नै मिखै री सारी बात बताई तो उण नै धीरज आयो। वो पूरी बात पिछवाणै बिना ई बहू नै गेर दीनी, ई चीज रो घणो पिसतावो करचो।

बात यूं बणी कै जिण घर मे सेठ रै बेटै री बहू पूगी, बो उण री नणद रो सासरो हो। नणद कदे आपरी छोटी भाभी नै पीहर माय देखी कोनी ही। बा भाई रै ब्याह पर जा कोनी सकी। जद भाभी नै कियां पिछाणै ? अर भाभी कदे आपो परगट कोनी करचो। अब भाई रो दूसरो ब्याह मंड्यो तो बो भैण नै लेवण नै आप आयो। अठै आपरी लुगाई सूं भेंट होगी अर भरम मिटग्यो तो पछै बो नयो ब्याह क्यूं करै हो ? सेठ रो बेटो आपरी भैण अर लुगाई नै सागै लेग'र घरां आयग्यो।

आ बात भी संजोग सूं ई बणी ह। सेठ रो बेटो गयो तो भैण नै ल्यावण अर आगै मिली आपरी लुगाई। बा भी संजोग सूं ई आपरी नणद रै सासरै पूगी। नदी मे बैवतै पिलंग रो के अन्दाज किसै किनारै जा लागै ? संजोग सूं ई महल मे लोग-लुगाई री भेंट होई। आखर बिगड़योड़ी बात -बणगी अर सगळा ई पाछा राजी होग्या। मिनख रो बुरो दिन आवै तो पाछो

बावडकै चोगो दिन भी आवै । धन है, बहू रै धीरज नैं । धीरज सूं ई भिखो कटै ।

(3)

अेक राजा रो कामदार भोत हुंस्यार हो । बो सदा ई नेकी राख'र राज रो काम करतो, पण दूसरा दरबारी लोग उण सूं बळना अर राजा रा कान भरबो करता । राजा बां री चुगली पर ध्यान नी देवतो । लोग कैवता–'कामदार राज री चोरी करै है अर आप रो घर भरै है ।' ईं बात री जांच करवा सारू आखर राजा अेक नई तरकीब सोची । कामदार नैं हीरै रै जड़ाव री मूंदड़ी बकसीस करी गई अर अो हुकम दियो गयो कै कदे भी कामदार उण मूंदड़ी नैं आंगळी मांय सूं परै नीं करै अर रात दिन सदा ई पहरी राखै । कामदार राजाजी रो हुकम सिर-माथै करयो अर मूंदड़ी पैर लीनी ।

कामदार नेम सूं तडकावू उठ'र नदी पर जावतो अर अन्धेरै-अन्धेरै स्नान करतो । पछै आपरी हवेली आय'र माळा फेरतो अर कलेवो करतो । पछै राजाजी रै मुजरै जाय'र आप रै काम लागतो । एक दिन कामदार राजा रै मुजरै गयो तो उण री आंगळी में मूंदड़ी कोनी ही । दरबारी लोगां राजा नैं सैन करी तो राजा भी कामदार री आंगळी कानी नजर गेरी अर उण नैं मूंदड़ी परै करण रो कारण पूछ्यो । बिचारै कामदार नैं बेरो ई कोनी कै मूंदड़ी कद आंगळी सूं नीसरी अर कठै नीसरी ? बो कै उत्तर देवै ? कामदार नाड़ नीची कर लीनी अर चुपचाप राजाजी रै आगै ऊभो रैयो । ईं सूं राजा नैं कोप चढ्यो अर हुकम हुयो कै अेक मईनैं भीतर कामदार सागी मूंदड़ी लाय'र हाजिर करै अर जे बो न ल्या सकै तो उण नैं सूळी पर चढ़ा दियो जावै ।

बिचारो कामदार घरां आयो अर मूंदड़ी री सगळै खोज करी, पूछताछ करी पण मूंदड़ी रो कठै ई ठिकाणो कोनी लाग्यो । मून्दड़ी मिली कोनी तो जिन्दगी रा बस तीस ई दिन और बाकी रैया समझो । कामदार निरास होग्यो अर आप रो ध्यान धरम-पुन में लगा लियो । बो नगरनूंत करणै रो बिचार करयो अर बारी-बारी सूं अेक-अेक जात रै लोगां नैं आपरी हवेली मे बुलाय'र जिमावणा सरू करया । कई रसोया राख्या गया । नित ताजा रसोई त्यार करी जावती अर लोग जीमण नैं आवता । यूं करतां गुणतीस दिन पूरा होया अर नगर री सगळी जातां रा लोग जीम चुक्या । तीसवें दिन नदी पर रैवणिये भीवरां री बारी आई । भीवरां रो चोधरी आपरी पूरी बिरादरी नैं सागै लेय'र कामदारजी री हवेली में जीम्यो । जीम्यां पछै बो आपरै पल्लै सूं

ग्रेक मूंदडो खोली ग्रर कामदारजी री नजर करी। कामदार मूंदड़ी देखी— ग्रा मूंदडी तो सागण ! कामदार रै प्राणां में इमरत बरसग्यो। बो चौधरी सूं मूंदड़ी मिलणै री पूरी बात पूछी तो बेरो पट्यो कै बा तो ग्रेक मछली रै पेट में सूं निसरी ही ग्रर कामदारजी री नजर करणै सारू रिपियो कोनी हो तो मूंदड़ी भेंट करदी गई। ग्रब कामदार समझग्यो कै ग्रन्धेरै में नदी-स्नान करतां बा मूंदड़ी ग्रांगळी में सूं निसर पड़ी ग्रर बेरो कोनी रैयो।

ग्राज तीसवों दिन हो। कामदार ग्रापरी ग्रांगळी में मूंदड़ी धारण करी ग्रर राजाजी रै मुजरै गयो। राजा पूरी बात पूछी तो संतोस ग्रायो ग्रर कामदार रो मान बढायो।

कामदार री बात भी सजोग सूं बणी है। कठै मूंदड़ी ग्रर कठै कामदार ! पण संजोग इसो बण्यो कै ग्राखरी दिन मूंदड़ी कामदार री ग्रांगळी में ग्राप ई चाल'र पाछी ग्रायगी। ग्रा बात धरम-पुन रो प्रभाव परगट करै है। पुण्यकर्म सूं मिनख रो संकट कटै ग्रर दिन बावड़ै। बात रो सार ग्रो ई है। पुन्न ग्राप ई सारो संजोग रळाय'र ग्रसरघा कारज सार देवै।

मूळ रूप में ग्रै बातां नियतिवाद सूं सम्बन्धित है। मिनख नियति री डोरी मे बन्ध्योड़ो है। बो ग्रापरी समझ ग्रर सगती सूं सारा काम ठीक ई करणा चावै पण नियति पर उण रो कोई वस कोनी चालै। नियतिचक्र में फस'र मिनख नै बुरा दिन भी देखणा पड़ै पण धीरज धारण कर्‌या नेकी सूं चालतो रैवै तो ग्राखर उण रो दिन भले रो ग्रावै ग्रर बो पाछो सुख देख लेवै।

कलाकार बंधुवां सूं

साने गुरुजी

तरुण कोमल हृदय ! उछळती-लहरती भावनावां रा, जिज्ञासु वृत्ति रा, ज्ञानपिपासु निराळा जीव ! आपरै आदर्श में रच्योपच्यो रैवण आळा जीव ! उमंग, तरंग, उत्साह, सगती अर अेक प्रकार री रटण—अै सगळा जवानी रा सैनाण है । नवजवान रै सामनै अणंत आकास अर अपार भविष्य फैल्योड़ो हुवै । इण आकास में तूं कठै री मुसाफरी करण आळो है ? इण अपार भविष्य में थनै कठै पूगणो है ? थारै विचारां मांय सूं, थारै सपनां सूं अर थारै आदर्शां सूं आवण आळै काल रो भारत त्यार हुसी । तूं भविष्य रो निर्माता है । थनै थारै फरज नै बराबर समझ लेवणो चाहीजै । थारी जीभ ऊपर जिका गीत, जिका सबद हुसी उणां माय सूं ई काल रो महाकाव्य, काल रो साहित्य, काल रो दर्शण अर काल रै इतिहास रो निर्माण हुसी । अेक रूसी लेखक कैयो है—'थारै बाळकां री जीभ ऊपर आज कुण-सा गीत रमै है अो म्हनै बतावो तो म्हैं तुरत थारै राष्ट्र रो भविष्य बता देसूं ।' म्हैं ई थारै गीतां री विसै जाणणो चावूं हूं । थारी जीभ ऊपर आज कुण-सा गीत रमै है ? थारी जीभ माथै प्रेयसी नै रीझावणआळा, उणरै नख-शिख रै वर्णन आळा, जी बहलाय'र मगज नै बहका नाखण आळा गीत है क देश भक्ति री भावना सूं भरयोड़ा अर रचनात्मक कामां री प्रेरणा देवण आळा गीत थारी जीभ माथै रम रैया है ? आज री कळा थनै किण तरै रो संदेश देवै है ?

क्यारं'मेर जद लाय लाग्योड़ी हुवै जणै तूं नीरो री तरै गावण-बजावण में, राग-रंग में मस्त हुय'र पड्यो रैवै है ? आज री कळा थनै कांई सिखावै है ? कांई प्रेरणा देवै है ?

'कळा रो संदेश' सबद प्रयोग बांच'र अचंभो हुवैला । 'कळा खातर कला' री बात आजकालै सगळै चालै है । पण कला कला खातर हुय ई को सकैनी । निर्विकार अर निर्विचार कला कठै है ? चित्र देखो, गीत सुणो, अभिनय देखो, पोथी बांचो; इणां रो कीं-न-कीं असर कांई आपां रै मन माथै कोनी पड़ै ? जे इण तरै असर हुवै तो इण कला रो सरूप किसोक है अो देखण री जरू-

रत है। ग्रो परिणाम साचो है के कूड़ो ? जिका-जिका बीज ग्रापां बावां हां उणां रा हजार गुणां दाणा ग्रापां नैं मिलै है। दाणो लेवणो जे ग्रापां खातर जरूरी ई हुवै तो ग्रापां नैं ग्राछी तरियां विचार लेवणो चाहीजै कै ग्रो दाणो समाज रै स्वास्थ्य नैं बधायर उण में रूप ग्रर तेज पैदा करणियै गेहूं रो दाणो है कै समाज नैं माटी भेळै करणियै ग्रफीम रो कण है।

समाज रै मंगळ री साधना करणी—ग्रो कला रो ध्येय है। पण इण मंगळ री व्याख्या कुण करै ? जिण जमानै में जिको जुगपुरुष पैदा हुवै वो ही ग्रापरै समाज रै ध्येय रो नकसो बणावै। दोनूं हाथ ऊंचा कर नैं हेला मार्‌या करै—नान्य: पथा विद्यते ग्रयनाय, एष पंथा एतत् कर्म—ग्रर्थात् जावण सारू दूजो कोई मारग कोनी, इण हीज मारग माथै इण काम नैं लेय'र चालो। ग्राज ग्रापां नैं कुण-सो जुगपुरुष दीखै है। जुगपुरुष कलाकार नैं ध्येय बताया करै है, उण ध्येय नैं कलाकार समाज री जड़ां तांई पुगावै। जुगपुरुष नैं जे ग्रापां पति मानां तो कलाकार उण री पत्नी है। जुगपुरुष द्रष्टा हुवै है, रिसी हुया करै है। कलाकार उणरै फेर्‌यां लगावतो रैवै है। ग्रेक ईज ग्रादमी कवि ग्रर रिसी हुवै इसी बात तो कदैसीक ई देखण में ग्रावै है। कलाकार ध्येयवादी हुवै जणै ई बो ग्रजर-ग्रमर कला रो निर्माण कर सकै है। व्यास ग्रर बाल्मीकि रिसी ई हा ग्रर कलाकार ई हा इण कारण ई उणां री कला ग्राज तांई जीवै है। पण तुलना करणी हुवै तो कैय सकां हां कै व्यासजी मे प्रतिभा कमती ही ग्रर प्रज्ञा मोकळी ही। बाल्मीकिजी में प्रज्ञा कमती ही ग्रर प्रतिभा बेसी ही। व्यासजी नैं कवि नीं कैय'र महर्षि रै नांव सूं बुलावणो पड़सी, बाल्मीकिजी नैं रिसी रै बदळै कवि कैवणो ज्यादा ठीक रैसी। संत ज्ञानेश्वर रिसी ई हा ग्रर कलाकार ई हा। रवीद्रनाथ ध्येय ई बता सकै हा, ग्रर ग्राप री कला नैं वै जनता ताई पूगा भी सकै हा।

पण कलाकार ग्रर ध्येय बतावण ग्राळो ग्रेक ई ग्रादमी हुवै ग्रो कमती देखण में ग्रावै है। घणी वार जुगपुरुष द्रष्टा हुया करै, विचार देवण ग्राळो हुवै ग्रर कलाकार उणां विचारां नैं जनता री भाषा में ग्रर जनता रै हिरदै माथै ग्रसर करै इसै ढंग सूं साहित्य रै रूप में सामनै लावै। विचारां री विश्वस्वरूपदर्पण जनता री ग्राख्यां सह कोनी सकै इण कारण कलाकार उणनै सौम्य ग्रर सुंदर बणावै। ध्येय नैं घर-घर में पुगावणो—ग्रो कलाकार रो काम हुया करै। गिगन रा तारा सूरज रै च्यारू मेर परकम्मा देवै ग्रर उण रो प्रकाश ग्रंधारो हुवै जणै ई लोगां में पुगावै, कलाकार रो भी ग्रो हीज काम हुवै।

जिण नैं ये जुगपुरुष मानो उण रै संदेश नैं घर-घर में पुगावण री लगन

थारै मांय हुवणी चाहीजे। इण सूं आखै देश में अेक तरै री भाव हवा पैदा हुसी। इण तरै सूं राष्ट्र बणै है। हां जुगपुरुष नै चुणणै में भूल करी नीं अर सफ्ळाई गेडिया रळपा नी : नारलै महायुद्ध सूं पैली जर्मनी में अंगरेजां सूं टकर लेवणी-अो हिटलर रो ध्येय हो अर जर्मन प्रजा हिटलर नै जुगपुरुष मान्यो हो इण कारण बठै कला रा सगळा प्रकार अेक हीज काम करता हा। नाटककार इण भांत रा ही दरसावां नै लोगा रै सामनै रखतां, कवि लोग इसा हीज गीत बणावता हा। पत्रकार इण री ई चर्चा करता-करावता। इण तरै रै आंदोलन सूं समूचै देश में अेक वातावरण रो निर्माण हुवै। पण जुगपुरुष चुणणै में आपां नै भूल नी करणी चाहीजै। ध्येय जे 'सर्वेषाम् अविरोधेन' री साधना करण आळो नी हुवै तो राष्ट्र 'राष्ट्र' बणण सूं पैली ई ठिकाणै लाग जावै। पछै दूजी रिसी राष्ट्र नै दूजो ध्येय देवै। रिसी कोई खास ई काल में जलमै इसी बात कोनी। सूरज पुराणै समै में हुतो अर आज भी है इणीज तरै रिसी पुराणै काल में हा अर आज ई है। अेक-अेक छिण सतजुग रो ही है। हरेक पळ में सत्य रा प्रयोग हुवै है—जमानै री जरूरत मुजब उण-उण जमानै में जोगा रिसी पैदा हुवै है।

आज भारत रा कलाकार जीवन सूं की अळगा हुयग्या हुवै ज्यूं लागै है राष्ट्रीय ध्येय री उणां रै जीवन मे पूजा को हुवै नी। तो पछै उणां री कलम में बळ कठै सूं आसी ? देश रे सामनै आज जिको ध्येय है वो जनता तांई पुगै—अो कलाकार रो काम है। जणै देश रो आज रो सरूप बदळसी अर नुवै भारत रो निर्माण हुसी। अेक 'वंदेमातरम्' रै गीत सूं जित्तो गहरो देश प्रेम जागै वित्तो हजारूं भावणां सूं भी को जाग सकै नीं। अेक रामायण आज हजारां नै राम बणण री प्रेरणा दी है। आज री इण भांत री विसमीं टेम में भी दया, नेह, सांच, प्रेम वगैरै रा आपणै समाज में जिका दरसण हुवै है उण रो कारण आज रामायण है।

महापुरुष आ री ध्येय आपरै जीवण में ढाळ'र जीवण री कला लोगां रै सामनै राखै है। वै आपरो जीवण ईज कलामय अर काव्यमय बणावै है।

अेकर अेक कलाकार कैयो—'गांधीजी हरिजन-आन्दोलन सरू कर्यो अर आपां रा कलाकार लिखण नै लाग्या उणीज विसै मे कहाण्यां। अेक ही चमारण, वा गयी पाणी भरण नै। रूढ्यां सूं अंमोड़िया पुराणा घमंडी लोग आया। उणरै घड़ै ऊपर उणां भाठा फैंक्या। थोड़ी-घणी उण रै लागी, अर उणरो घड़ो फूट्यो। माथै सूं लोही बैवण लाग्यो पण उणनै इण बात री कोई चिंता को ही नी, उण नै तो अेक ई धुन ही कै घर में तिसा बैठा छोरां

नै पाणी किण तरै पासूं । बस, हुयगी श्रेक कहाणी । इण में नीं तो कोई कला है अर नीं कोई तंत्र !'

म्हैं उण साहित्यकार नै पूछ्यूं हूं कै इण कथावस्तु नै लोगां सामी राखण सारू जिकै कलातंत्र री जरूरत पड़ै है उण नै वो कोनी जाणै, पण जे तूं *तांत्रिक अर यांत्रिक कला नै जाणतो ही तो थे खुद ई इण आंदोलन* रो चित्रण थारा-उपन्यासां में, लेखां में अर कहाण्यां में क्यूं कोनी कर्यो ? थैं वस्तुवां कांई थांनै महत्व री कोनी लागै ? लाखां-करोड़ां मिनखां रै जीवण री थारै मन में कोई कीमत कोनी ? मिनख नै जानवर ज्यूं गिणतां देखकर कांई थारै हिरदै में लाय-पलीता को लागै नीं ? थारी आंख्यां मे आग रा आंसू कोनी आवै ?

भारत रा कलाकार ! इण तरै रा हजारूं ध्येय थांरै अमूल-स्पर्श री आस में थांरै च्यारूमेर ऊभा है । थांरै साहू ध्येय-भगवान आपरी किरणां लियां ऊभा है । उणां रै खातर थांरो दरवाजो पूरी तरियां खोल दो । थांरा अंधारा, माळ्यां अर माछरां सूं भरया घरां में ध्येय रै प्रकाश नै आवण तो दो ! कला नै जे ध्येय री अभिव्यक्ति रो साधन नीं बणासो तो समाज में कला री कोई कीमत ई को रैवै नीं । कला देवी नै वासना अर विकारां रै मिंदर में ना बैठण दो ।

आज ई देश में *कित्ता दुख-दर्द है ! इणां नै वाचा देवणी*—श्रो कलाकार रो काम है । सुख-सूतां लोगां री नींद हराम हुय जावै – इसो की लिखो, इसा गीत गावो । इण भांत री कला कृतियां रो निर्माण करो कै समूचे देश में सामाजिक क्रांति री श्रेक लहर,ऊठ जावै ।

देश रै हजारूं-लाखूं गांवां रा दरसणां नै जावो । दरिद्रनारायण रा दरसण करो । साचो देश कालेज रा च्यार छोरा-छोरयां सूं कोनी बण्यो ! देश रा पूरा दरसण हाल थे करिया ई कोनी । देश री साधारण जनता रा महान कलाकार, साहित्यकार अर कवि बणण रो दावो करो हो ! देश रै कलाकार रो मतलब च्यार-छव सहर आळां नै रिझावण आळो कलाकार कोनी ।

आपणै श्रेक कलाकार रो उपन्यास बांचर श्रेक गांव आळै कयो—'इण में म्हारी तो कीं इज कोनी । इण में म्हारा सबद कोनी, म्हारो जीवण कोनी अर म्हारी समस्यावां सुळझावण रा रास्ता कोनी !' श्रां सबदां म्हारै हिरदै नै सीरां दाई बाळ नाख्यो ! हां, केई-केई कवि अर लेखक गांव आळां री मजाक उडावण खातर उणां रा च्यार-पांचेक सबद आपरी कृतियां में *वापरै*

अर ग्राम-कवि का लोक-कवि बणण री बातां करण लाग जावै। पण इण तरै रा सांग कर'र कोई लाखां करोड़ां री मूक जनता रो कवि कोनी बण सकै। उणां रै काठै जीवण नै देख'र थारै हिरदै में आग लागै है? बेचैनी हुवै है? इणां माथै हुवण आळा अन्यायां नै दूर करण री तड़फड़ाहट मचै है? इणां सारू सुख रो जीवण छोड'र कष्ट उठावण नै त्यार हो?

जे देश नै जगावणो हुवै तो इण रै मूळ में पाणी नाखणो चाहिजै। कमळ नै जे खिलावणो हुवै तो उण री डांडी नै है ज्यूं री ज्यूं राखणी चाहिजै अर जे टैमसर इण मूळ नै पाणी नी मिळै तो हुय सकै है कै ऊपर खिलण आळी कमळ भी धूड़ में मिल जावै।

महापुरुष इण मूळ नै पाणी पावणै सारू आपां नै हेला मारै है— इण पुकार नै सुणो। देश रा मोकळा आदर्शां नै थारी जीवण-कला रै जरियै अर थारै साहित्य रै जरियै लोगां तांई पुगावो। घर-घर मे ध्येय रा दीया संजो-संजोयर दीयाळी मनावो। अंधकार नै परो भगावो। कला रो औ हीज ध्येय है, औ हीज संदेश है।

—मूळ रो अनुवाद पुष्पा जैन रो

राखी री त्यूंहार

सौभाग्यसिंह शेखावत

भारतीय साहित्य में संस्कृति, त्यूंहार, वारां री घणी बखांण नै मान मोल मिळै है। घणाकराक त्यूंहारां रा पेटा में सामाजिक मान मोल मिळै है। दीवाळी दसरावौ, होळी नै सांवणी रा त्यूंहार तो घणा कोडीला गिणीजै है। आखा देश में औं त्यूंहारां नै सान-मान, चाव-भाव, उमंग-उछाव नै खुसी-खुस्याळी सायैं मनायीजै है। राजस्थान में त्यूंहारां सूं घणी हेत-प्रीत रैयी है। वैदिक नै पौराणिक काल रा देवी देवतां नै लोकमानस आज भूल चुको है, पण त्यूंहारां नै पूरा उछाव-उल्लास रै सायैं मनावतौ आय रैयौ है। ऊपर बताया च्यारा त्यूंहारा में सावणी पूनम री त्यूंहार घणौ पुराणौ मानीजै है। इणनै सांवणी पूनम, रख पूनम, रक्षा बंधण, सलोणौं नै राखी भी कैवै है। विद्वान कैवै है कै वेदां नै सातरसां रै पैलपोत राखी बांधीजी ही। पछै राजा बळी रै समै जद बळी नै छेतरबा-छळबा विष्णु बावनो रूप धार बळ नै छळियौ जणा बळी री बैरबानी बळी री रक्षा रै खातर उणांरै राखी बांधी अर उणां नै दैविक भौतिक संकटां सूं उबारिया नै आपरी रक्षा री चावना कीवी....

येन ब॰ो, बलिराजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
त्येन त्वं प्रति बन्धामि, रक्षमाचल माचल॥

जिण रक्षा रा धागा सूं राकसा री राजा महाबळी बळी बांध्यौ गयौ उणीज बंधण रै सूत रै तार सूं थांनै बाधूं हूं। थां थिर रैय नै म्हांरी रिच्छा करो।

रिसी-विप्रा री त्यूंहार राखी री त्यूंहार मानीजै। इणी कारण राखी रा त्यूंहार नै गुरुपूनम री त्यूंहार भी कैवै है। पण, राजस्थान तो सती-सूरां, वचन-पूरां, धरम-धीरां नै दान-वीरां री प्रांत रैयो है। अठै तो मरण नै मंगळ गिणणै री धारौ रैयो है। जद ही तो मरणां नूं मंगळ गिणै, मरणौ मंगळाचार आज मरण त्यूंहारां रै रूप मे नूंवा त्यूंहारा री कल्पनावां कीवी गई है। जठै मरण नै गमतमायता रैवै उठै सदा हीज त्यूंहार मनीजै। पुराण परम्परा सूं राखी री त्यूंहार मनीजै। पुराण सूं राखी री त्यूंहार

सांवण री पूनम नै मनायीजै है । राजस्थान में सांवण रौ मास तिवारां री मोड़ जनचावा बसंत री जोड़ । उछाव उछाव में अजोड़ । सांवण मन भावणा राग रंगां गीतां री रमझोळ । झूलां-हींडां री हिलोळ प्रिथी रै कण-कण पर हरियाळी री बौळ । पण, राजस्थान में बिना सावण रै भी अेक बार राखी रौ त्यूंहार मनायीज्यो । बैण-भाई रै इण पुनीत पर्व री भावना सूं उछाह पाय हिन्दू तीरथ चीतौड़ री राजमाता हाडी करमावती चीतौड़ रक्षा रै खातर दिल्ली महल रा पातसाह हुमायूं नै राखी मोकळी । चीतौड़ रै गौरव री रक्षा खातर राखी डोरी मेलियो । मेवाड़ रौ धणी राणेराव सांगोजी माळवा मांडव पातसाह नै रणभोम में हराय नै क्षमा दान दियौ हो । सांगाजी रै पछै उणां री बाळक बेटौ राणौ विक्रमादीत मेवाड़ माथै राज करतौ हौ । विक्रमादीत नै बाळक जांण माळवा रौ धणी बादरसाह गुजराती चीतौड़ पर चढाई कीवी । राजमाता हाडी करमावती 'हाड कटै हाडा हरखावै । गाडो टळै पण हाडो नी टळै' रै कुळ आदर्श रै बिड़द री उजाळबा वाळी । धणी मरदाणी । वीरता री कहाणी । मेवाड़ री धणियाणी । पत पाणी रखाणी । बादशाह हुमायूं नै चीतौड़ नै माळवा रा मद आया मैंगल बहादरशाह री टक्कर सूं उबारण खातर राखी मेली । चीतौड़ रौ कासीद हुमायूं कनै गयौ । राखी निजर कीन्ही अर कागद दियौ । हुमायूं राखी देख नै कागद बांच नै गज नैं ग्राह रा फंदा सूं काढ़ण नै जदुनाथ दौड़िया ज्यूं उतावळो-सो फौज नै त्यारी करण रौ हुकम दियौ । राजमाता करमावती लिखियौ हौ । उण रौ भ्यानो कवि देवतां थकां कैयो—

> कागद लिखियो कोड कर, हुवण हेत हमगीर ।
> बादरियो बद मंडियौ, आव हुमायू बीर ।।
> द्रंग मांडव माळव धणी, दाबण मो घर देस ।
> आय ऊबारो बीर अब, आ राखी है, पेस ।।

कागद हुमायूं बाँचियौ । बैण रा हिवड़ा रा भाव उणां रै उर उदध में हिलौरा उठावण लागा । मां जायी सहोदरा रै मान नेह रा, ममता रा, मोह रा भाव मचळबा लागा । हुमायूं कळाई माथै कुंकम बरणी राखी बांधी नै आपरा अढारटंकी धनख नै तांणियौ । कवच री कड़ियां खणखणी । नौबतां माथै डंडां री चोटां पड़ी । नद नाग अमरां रै हियै दहल पडी । घोड़ां री टापां री दड़बडी ऊठी । अंबर में खेह उडी । मुल्ला मौलवी बाबर सांगा री अदावट री वात कैय नै हुमायूं नै बहकायो पण भोळी रै काचा तारां री राखी धकै किण री हीज बहकावणी में नीं आयो—

मुल्ला काजी मोलवी, बाबर सांगा बात ।
अइस अदावट आपसी, बाम्बाणी विख्यात ।।

पण राखी बंध भैंण री स्नेह । सांवण मादवा री-सो मेह । दूठण लागी अछेह—

काचा कुंकम तार में, भाव भरया भरपूर ।
सेन चढाई सूर में, पण दिल्ली कोसां दूर ।।

दिल्ली नैं चीतौड़ रैं बीच घणी छेटी । उठी नैं चीतौड़ री मदत तांई हुमायूं चाल्यो नैं अठीनैं माळवा री बाईसी चीतौड़ रैं ओळी दोळी घेरो लगायौ । सेना रैं भार सूं सेस नाग रो सिर अकुळायौ । कमठ री पीठ भार नी सह पाई । बाराह री दाढ़ मचकाई नैं धवळ रो सींग तरड़ायौ । अठी नैं चीतौड़ रा किला में उछाह छायौ । राजमाता करमावती जोहर रो जलसो-सो मंडायौ । वीर जोधा जूंझण नैं कमर कसी । रणदेवी जोगणियां हड़हड़ हंसी । वीरां खागां संभाळी । घोड़ां री लगामां झाली । नौबत नीसाण घुराया । शूरवीरां रा मन उमाया । नारियां अगन में होमी काया । बीरधीर रणमोम में जलाया । बैरियां माथै खड़गां झोकी । चण्ड मुण्ड माथैं जांणैं कालिका हीज कोपी । घड़ी पलक मे शूरवीरां रण-राटक कर रण साथ रैं सूता । 'घण जीतैं सूरमां हारैं' सो मेवाड़ रा जंग जोधार रावत बाघ देवळिया रो धणी, भैरूदास सोलंखी, राज राणा सज्जा, राज राणा सिंघा, रावत दूदा, माला सोनगरा, भाणा डोडिया आद बत्तीस हजार बीर काम आया नैं तेरह हजार राणियां, रावतणियां अनळ संपाड़ो कियो ।

साका कर रण-सूरमा, जौहर झळ जळ नार ।
केसरियां बनड़ा बणीं, गया सुरग रैं द्वार ।।

बादशाह हुमायूं चीतौड़ पौंचण रैं पैलां हीज ओ अनोखो खेल पूरौ हुवौ । हुमायूं राखी बंध धरम री भैंण री रक्षा नीं कर सकियौ । समैं री छेटी नो लांघ सकियौ । पण, इतिहास में विक्रम संवत 1592 चैत सुद 5 रो दिन राखी री याद रो पर्व बणग्यौ ।

राखी राजस्थान री, साखी भरैं संसार ।
राखी रजपूतांणियां, दोयण दळां दकार ।।
राखी राखो रावतां, राखो जौहर बार ।
अण राखी राखी मती, राखी रखो विचार ।।

इण भांत राजस्थान रा इतिहास में राखी भैंण रो ओ कथानक, ओ प्रसंग आज भी जीवतो-जागतो है । भाई अर भैंण निरमळ, हेत-हिमळास री

याद दिरावै। राखी बंध भाई, आपरी धरम मैण री भलां ही समै माथै नीं पूगण सूं मदत नी कर सकियौ, पण हिन्दू-मुसलमान दोय न्यारा-न्यारा धरमां नै राखी रा तार ग्रेक ठौड़ बांधता-सा तो लखावै हीज है।

हिन्दुस्थान रै बादशाह ग्रौरंगजेब रो मोबी बेटो बहादरशाह दिल्ली रौ तखत पायौ। जवानी रा जोम में राजतंत्र री इमारत रा थाभा राजावां सूं रूसायौ। कछावां रा ग्रामेर ग्रर राठौडा री मारवाड़ माथै ग्रापरौ हांमपाव जमायौ। कछावा नरेश जैसिंघ, नैं नौकोटी नाथ ग्रजीतसिंघ रा राज नैं खालसे लगाया। जोधपुर, ग्रामेर, नागौर, सांभर ग्रादी ठौडां शाही थाणा थरपाया। ग्रली ग्रैमदखां, गैरतखां, सैयद हुसैनखां नै फौजदार, थाणेदार बणाया। राठौडां कछावां रा खून मे उफाण ग्रायौ। हाड लोही रा खाद-पाणी सूं सींचो भोम जावती लखाई। ग्रजीतसिंघ जैसिंघ दोवां राजावां मसलत कीवी। बादशाही थांणा नैं जीतवा री उपाई। राठौड़ वीर दुर्गादास, रावराजा संगरामसिंघ, उणियारा नरूका ग्राद जोधारां री भी ग्राहीज राय ग्राई। 5 ग्रक्टूबर सन् 1708 कातिक मास मे ग्रामेर नैं जोधाण नाथ री फौजां सांभर पर घोड़ां री रासां उठाई। कमठ री पीठ कसमसाई। रण बांका राठौडां नैं कळह काटा कछावां री फौजां सांभर चाल्ली। सातो ही सागर उफल्ली सेस नाग रा शीश पर थंभी धरणी हल्ली। घोड़ां री टापां सूं धूळि उडी, किरणनाथ रा सहंस किरण रज ग्रंबर सूं मिळी। ग्रग-सा मल्हपता चौकड़ी भरता सेस रा फण-सी नासां फणकरता घोडा, वाळछां नैं लळवळ फटकारता, कायरां नैं कंपावता, कहर बरसावता शाही सेना पर घायल बाघ कै रीसायो नाग कै मद ग्रायो हाथी कै जमराज री नाती री भांत झपटां मारवा लागा नैं सांभर रा थाणायत री सेना नैं सांथर पौढाय नैं थाणायत नैं कायरता रै काळै रंग रो ग्रोढणो ग्रोडायो। सैयद हुसैनखां न्हाठ नैं देवदानी मे सरण ली। पछै बीजे दिन मथुरा रो थाणायत गैरत खा, ग्रावेर रो शाही फौजदार, नारनोळ रो फोजदार, भरतपुर रो चुडामणि जाट मगळा मिळ कछावा राठौडां पर घोड़ा उठाया। गजनाळां सूं ग्रासमान गरणाया। जबरो सो राटक हुवो। *कवि कलानिधि बरणियो, इण भांत सांभर रो कजियो*—

सैदन दळ हुंके समानि बंके
 दुंदुभि डंके जोर दिये।
घर होत धमके सुरगन संके
 पर ग्रातके सोक हिये ।।
हय टापनि टुट्टे गिर तट फुट्टे
 फनपति कुट्टे सहस फना।

घूमी भर जुट्टे भंवर भुट्टे
पावस छुट्टे मनहुं घनां ।।
जयसाह सवाई पर दळ धाई
भरनि भवाई देखि सरैं ।
चढ़ंदेदळ साजै संगर गाजै
रवि ज्यौं राजै तेज धरैं ।।
संभरसर तीरनि केसर नीरनि
रंगे धीरनि धारू ठये।
दे दुंदुभि घोरनि बंके बीरनि
कूरम सौ रन करत भये ।।

भलो-सो पकावो हुवो । शाही पख प्रबळ जणाई । हजारां जोधारां नैं रण भोम सुवाई । आमेर, जोधाण पत रणखेत ऊभी मेल घरां नैं चलाया। बादशाही फौजां फतह रा सैंदाना बजाया । नौबतां पर त्रिघाई पड़ी । राजावां री फौजां में भगदड़ पड़ी । उणियारा रो राव संगरामसिंघ नरूको, अेकल बाराह, हठ रो पक्को । जलालिया री ठोकर कै जमराज रौ धक्को, कै जेठ मास री लाय रौ पलीतो कै सांपरतख आयौ भाडोवळो पगां हलीतो। पांचसौ काछी कंवारी खरगोश कथा घोड़ा । पांच सौ कुत्ता लाहोरी जाया पांच सौ हीज जोधार अेक मन्ना मां जाया, पूतां सारखा जोड़ा । जाता जमदूतां नैं बाथ घालै । मीवारज ग री भांत गजां नैं आकाश पर उछाळै । रहणी कहणी रा पूरा । रुद्रागण कै सेस रा फण । प्रळय रा मेघ कै वेह लिखिया लेख । शाही फौज पर चलाया । खून रा खाळा बहाया । साभर रा श्वेत नीर राता लखाया । च्यारूं फौजदारां नैं कब्रां में पौढाया । शंकर री माळा रा सुमेर बणाया । पांच सौ कुत्ता शाही सेना रा गज-घोड़ा नै गेलै लगाया। सांभर में गज-मोती बिखरिया । पराजै विजै हुई । हार रौ कळंक उणियारा री राव धोयौ । कंछावा धणी नरूका राव री वीरता पर मोयौ । सावणी पूंनम राखी रौ दिन आयौ। महाराजा सवाई जैसाह फरमायौ । राव संगरामसिंघ जावतां आंबेर नैं पाछी लायौ । कछावां में टणको जोध लखायौ—

ऊंचा डेरा राव का, सब सूं ऊंचौ राव ।
राखी बांधो राव कै, सब की राखो राव ।।

पछै कछावां नाथ सिरै दरबार कर राव संगरामसिंघ रैं राखी बंधाई। रावजी रौ मान बढायौ । पांच सौ कुत्तां रै खरचै तांई जैसिंघपुरो गांव, इनायत कियौ । जिको अजै भी कुत्ता रौ जैसिंगपुरो कहीजै है । उण रौ हासल

उणियारै राव रै भुगतती। इण भांत सांभर पर फतै पाई ग्रर दोवां राजावां सांभर री दोय पांतां कीवी। ग्राधी जैपुर नै ग्राधी जोधपुर लारै लीवी।

इण भांत इतिहास में राखी रौ घणौ महत्त्व है। उण नै जाणै है राजस्थान रा वासी सह। भैण भाई रौ ग्रौ त्यूंहार। पवित्रता, निरमळता, नेहता री-सिरदार। ग्रैड़ा राखी रा पर्व री राजस्थानी इतिहासकारां, कवेसरां घणी महत्ता बताई। गुणगाथां, ख्यातां, रूपकां मे गायी, जिकी थोड़ा रूप में ग्रठै जताई।

पूरण पुरुष कृष्ण

सत्यप्रकाश जोशी

श्रीकृष्ण री जीवण म्हनैं सगळा सूं ज्यादा मोह लेवैं । महाभारत, हरिवंश (अर बाद मे भागवत) ग्रंथां में जिकी जीवन्त अर भव्य व्यक्ति रेखावां, वेद व्यासजी री प्रतिभा, भारत रा जन मानस मे उकेरी है, उणां में कृष्ण री उणियारो धुरी री ठोड है । दूजा सगळा उणियारा उणां नै घेर कर उणारै सारै धरियोडा है । फेर भी हालात आ है कै जे आप महाभारत रा श्रीकृष्ण नै ध्यान सूं देखण री चेष्टा करो तो आपरी निजर में उण उणियारा री देहीबद्ध सरूप सावळ मर कोनी सकै । उण रूप नै रेखा रूप मे साकार कोनी कियो जा सकै । विराट रूप री फगत अेक उल्लेख, उण रेखा वाळा शरीर री आखो उणियारो पूंछ दियो, ढक दियो । यूं जाणैं मेघ सूरज नै ढक लेवैं । अेक सांवळो घूंवाळोरो वातावरण ई कृष्ण रा नाम मे भरयोडो है। पण जठै कृष्ण रै उणियारा री रेखा पल भर साफ दीसै, फगत कोरां मे दीस जावै, उठै उठै म्हनैं रंगां री अेक मोटी पूंजळी दीखण लागै—रंगा री छटा अेक दूजा सूं घुळती अर फेर छिटकती, न्यारी पड़ती ! अै रंग, अै छटावां, सिझा रा मेघा ज्यूं अलौकिक नाचणहार है—दौड़ता भागता रंग ! कृष्ण रै व्यक्तित्व रै आभास रो औ रूप म्हनैं आखर साझ रा रंगा ज्यूं लखावै । म्हनैं केई बार लागै जाणै अै रंग, हीया रा अेक अेक कण मांय सूं उफण'र छळक रह्या है ।

जद इतिहास या साहित्य री अगणित व्यक्ति रेखावां म्हारा मन में सं-जीवण होय बैवण लागै तो म्हैं भांत भांत रा आभासा मूं घिर जाऊं । उण वगत अै व्यक्ति रेखावां उण ग्रंथां अथवा इतिहास रा अंश कोनी रै जावै । कोई सुन्दर रेखावां मे घड़ीज'र आवै कोई फगत आख व्है, तो कोई काम करण वाळो सुंदर हाथ । कोई री वै आंख्यां म्हारो लारो करै, कोई रा वै हाथ म्हनैं झाला देवै । कोई रा होठ कीं कैवण नै उतावळा व्है तो कोई विना रोकटोक म्हनैं चिडावै । बुद्ध जैड़ा लोग शिलाखड ज्यूं जड होय म्हारै साम्है बैठ जावै । कौ अेकदम मूंडो फेर लेवै । कृष्ण री रंगाकृति अैडा अेकलापण री आभास कोनी देवै । आ रंगाकृति गंर जैडी दूजी कोई जाण्योड़ी गघ कोनी,

पण आ गंध हद उत्तेजक है। आ तीखी है अर घणी ताळ म्हनैं घेरयोड़ी रेवैं। की इण भांत री है आ गंध जाणैं सृष्टी रा सगळा मरदां री प्राण सगत री गंध नैं भेळी कर समस्त फूलां री गंध में घोळ दी व्है। अर म्हनैं दीसैं उण गंध रा गरम में सुरा रौ अेक हरियौ अंकुर फूट पड़यौ है। जांणै धैवत मार्थ ऊंची कोमल निसाद रा कोई रेखायोड़ा सुर!

अर विराट रूप रौ आभास देवण वाळो आवरण कदेई कदेई पड़दां ज्यूं बीच में फाट जावैं। अलेखां पुराणकथावा मे, आंधी श्रद्धा में अर नारी री नस नस में जिको अेक नामहीण अनुभव झपकारा लेवै, वो अेकाकार व्है जावै अर उण मांय कर अवतरीजै अेक ऊंचो पूरण पुरुष! वो आदम सूं सगपण जोड़ै शरीर अर वासना में! पण वौ आदम करतां अलेखां दैविक उपहारां री हकदार है। आदम री कोई संस्कृति कोनी ही, पण इणमे संस्कृति साकार व्है इण रैं ओळूं दोळूं सुख री क्यारियां खिल्योड़ी है। बापड़ो आदम बगीचा सूं बारैं निकळयौ अर आ जाणण रैं पैलां कैं औ बगीचौ है धूळ खावतौ फिरण लागग्यौ। इंद्रिया रैं फणां रा चाबका खावतौ घूमतौ रह्यौ। पण औ जीवतौ रह्यौ पौरुष री, मिनख जात री सम्पूर्ण मस्ती नैं पी, पचाय'र अर मरण री विजोग री अेक-अेक पीड़ नैं होळैं-होळैं परस कर जीविया गयौ। इण में भरयोड़ो हौ परस रौ सम्पूर्ण लालित्य, सगळो नखरो। व्यासजी रैं हाथां रचियोड़ा रंगां री झलकियां मे औ दूजा धरातल वाळो पुरुष रूप इदको, मनमोहक अर घणी रेखावां में बध्योड़ो उभर्‌यो है। वो साख्यातकार रा चमत्कार सूं मुगत व्है जावै, पार्थिव जीवण रैं सारैं हिलण डुलण लागैं।

कृष्ण रौ चरित किणी अेक ग्रंथ में बंधियोड़ो कोनी। अलेखां ग्रंथ, काव्य अर नर नारियां री जीवण उण नैं तिल तिल दे कर रच्यौ है। कृष्ण रौ नाम जीवै है आज लग, जीवण नैं च्यारूं कानी सूं परस करण वाळा, जण जण रैं सुख दुख रा झपकारां नैं खुद भोग कर अर उण नैं सैंजीव अर कृतार्थ करियां। इण कारण कै कृष्ण मिनख है, फगत मिनख ई नहीं, पूरण है, पूर्ण पुरुष।

कृष्ण रौ जलम मौत री छीयां मे, डर रा भंवर में अर [illegible]
भरोसा मे हुयौ। राम रौ बाळापण कोई नैं याद कोनी आई [illegible]
मे बद पड़यौ है। ईसा अर बुद्ध रा टाबरपण माथै बैरी [illegible]
हुयगो। पण कृष्ण रो बाळापण घर घर मे [illegible]
अनुभवां मे थिर हुयग्यो है, वो बाळकियो, जिको [illegible]

जामण री गोदया सूं आगो चल्यो जावै, अर विरह री आंच में बळतो जावै। औ बाळवियो, दूजा बाळकां ज्यूं विराम कोनी पावै। वो जसोदा रै दाभता हीया माथै हरियाळी बण छा जावै। वो गुडाळयां चालै, पालणै में पड़यो रोवै, जाणै उण में कांटा विछ्या व्है अर पपरणा गीला कर देवै। उणरो बाळहठ विख्यात है। वो कूटीजै, ओवरी में बन्द करीजै अर बोछरड़ायां कर मौत नै नेड़ी बुलावै। वो मोटो वधै, मां नै पल पल याद करावतो कै म्हारो लाल अेकदम मक्कार है, इणी कारण उण सूं अछेही प्रीत है।

इणरै पछै दूजो पर्व ! ग्वाळ बाळां सूं दोस्ती, खेल, चोरी, व्रज री गोपियां सूं छेड़ छाड़, काची ऊमर मे राधा सागै प्रेम क्रीड़ावां। पहलवानी में प्रवीण ! कांई कोनी हो जवान होवता कृष्ण मे ? अेक कानी कंस हो, सिसपाळ हो, झाळोझाळ बैर पळतो हो अर दूजी कानी मोळा ढाळा टाबर अर गोपियां ही जिको उण सारू हथेळी मे प्राण लियां घूमती ही। बडी माई उणरो दास हो। गायां उणरा बछळ परस सूं हरखावती, तगड़ी होवती। वैरी प्रसूती वधती ही, दूध री नदियां वैवती ही।

उणरी मुरली जवानी रा सवेगां नै झाला देवती। अर इसो जादू हो उणरा संगीत में कै गोपियां लट्टू ही मुरली बजावणवाळा माथै। वैरी जोबन फकत उणरै सारू खिलतो पण जिको कदेई सार्वजनिक स्वैछाचार में कोनी बदळीजियो। समदर री छोळां जिसो हो वो खिचाव, जिको ज्वार आवतो बगत घेर लेवै अर पाछो आपरी प्रेरणा सूं ई उतर जाया करै। खिचाव जिको कृष्ण सूं आगो हट, कृष्ण मे ही समा जांवतो। औ वो सनमन हो जिको अेकदम मीठो हो, इणी कारण मजबूत हो। इण सगपण रो सब सूं ऊंचो प्रतीक है राधा। द्रौपदी नै कृष्ण सूं बैन रा रूप में बांध'र परम्परा, व्यवहारिक नीत नै प्रतिष्ठा देवण रो सफळ अर असफळ प्रयास कियो है। आगै चाल'र राधा जद पुराणां मे अवतरीजी तो वा औ सगळा बंधण तोड दिया। कोनी रोक सक्या उण प्रीत नै ब्याव रा बंधण अर ऊमर ! अणबंध अर नाजुक रेसमी सिणगार री वा इसी अनुभूति है जो कदेई जूनी कोनी पड़ै।

भारत री संस्कृति प्राय: लालित्य में कोनी खिलै। वा अेक वार भरपूर खिली। राधा अर कृष्ण री प्रीत री बसंत अेक बार ई आयो अर पाछो गयो परो। गयो तो परो पण की इसो छोड़ कर जिको सदा खिल्यो रैवै अर अणछक महकतो जावै। भारतीय पतिव्रत धरम री कठोरता नै अणहद चुणौती देकर राधा मे अेकनिष्ठ प्रीत री चादणी सूं रंग्योड़ी पूर्ण सुन्दरता नै उदघाटित कर दी। राधा ई ही जिकी प्रेमानुराग रा दमकता लाल वरण नै

ठावो लीलो रूपाळो बरण दियो। इरणी सोवरणी प्रीत नैं आपरैं मांय अेकाकार करतां करतां कृष्ण री व्यक्तित्व प्रकाश सूं असीम होवतो गयो। वो अणूतो मीठो अर निगूढ बरणग्यो, रात रैं उनमान। कृष्ण अर राधा री प्रीत सूं भारतीय प्रेम-कथावां नैं नई कवळास मिली। वौ भाव मिल्यां जिको गिरस्थी रा बोझ सूं भी बासी कोनी हुयो। प्रीत री पूर्णता अमर यौवन रो मूंडो भाळथा करैं। उणनैं सिद्ध करण नैं ओ आदर्श प्रेमी जाणै खुद नैं राधा रा विजोग सूं बांध राख्यो है।

कांई वौ दिखावणो चावै कै मौत में लीन अमरता ज्यूं प्रेमी भी आपरी सार्थकता तद पावै जद वौ प्रिय रा संवास सूं सदा रैं वास्तै वंचित व्है जावै? कांई वौ आपरा अनुभव रैं आधार माथै आ बतावणो चावै के अेडी चिर विरह ही प्रेम री सफळता रा अशरीरी रूप री उत्कटता रो विश्वास करावै? राधा अर कृष्ण कद अेक दूजा रै साथै रह्या? वैरो सहवास छिण भर रो है, पण ओ छिण घणो मुखर है। इण मुखर भाव नैं पुराण अर कथा काव्य घणी संभाळ सूं राख्यो है। वैरी संजीवणी प्रीत री प्रतीक है मुरली। अर पछै आवै अणंत विरह? जिको मून है, निगूढ़ है। वौ कदेई कोनी ग्रहण करैं नाद रंग रूप रा आभरण। वौ विरह कळह, उपेक्षा अर मौत री संकेत भी तो कोनी देवै। इण अनामता रैं कारण वौ अेकदम सजीव हुयोडो आवै। अेड़ो कोनी दीसै कै कृष्ण कदेई राधा री ओळूं में आकळ बाकळ होय राम ज्यूं खुलै आम शोक मनायो व्है। कांई वौ इण कंवळी प्रेम री खोज नैं हिवड़ा रा कोई अेकान्त खूंणा में इण भांत छिपाय राख्यो हो कै कोई पिछाण भी नी सकैं? दुनियादारी रा संकेत उणनैं परस ई कोनी कर सक्या?

राम मरजादा-पुरषोत्तम है अर कृष्ण हर व्यापार में सींवा लांघण में प्रवीण। कृष्ण हर बात नैं निपुणता दी। उणमें अमरजाद, सुंदरता अर चेतना भर दी। वौ पवन रा आंधी झपाटां रा सरणाटां रो जीवण जियो। टाबरपणा में वौ खेलण में प्रवीण हो, प्राणपण सूं खेलतो। चोरी नैं रमणीक बणाय दी। हास्य-विनोद नैं वौ जतनां सूं पाळयो। भारतीय दार्शनिक अर हास्य-विनोद, दोनां में इतरो आंतरो है जित्तो धरती रा दोनूं छेड़ा में— संसार में सगळा ई दार्शनिकां माथै आ बात लागू व्है। फगत अेक अपवाद है कनफ्यूसिरस। वौ आ थापना करी कै जिको आदमी हंस कोनी बण सकै वो संत कोनी बण सकै। कृष्ण री गीता में हास्य विनोद कोनी। आ अेक गम्भीर सिरजण है। पण कृष्ण रा प्रारंभ रा जीवण मे कौतुकी विनोद भरयो पड़यो है। वौ नी होतो तो गीता री गंभीरता ओछी पड़ जाती।

कृष्ण मूळ रूप सूं कळासवत आदमी है। वो संगीत रो उपासक है। उणरी कळा आसक्ति भी प्रीत ज्यूं धरती मांयं पग रोप्योड़ी ऊभी है। वो वीणा धारण कोनी करी, बांसरी उठाई। प्राणपण सूं बांस रा टूकड़ा मे मीजर उगाया। कृष्ण री लहरी मुरली री मिठास अमर है। म्हांरा रो मामूली बाजो। पण श्रीकृष्ण उणनें सप्राण कर दियायो। अेकदम प्राकृत, टेढी-बांकी चीजां नें चिरंतन कळात्मक मानां सूं सजावणो फगत कृष्ण ही जाणतो। कळाकार रो उफण उफण बेवण वाळो अर खुद नें होम करण वाळो व्यक्तित्व कृष्ण रै जीवण रो प्रमुख अंग है।

अो उफण कर बेवणो, अो विसरजण री गुण की इण भांत दुरनिवार है कै कृष्ण देखतां देखतां अेक भूमिका सूं दूजी भूमिका मे बेरोक-टोक प्रवेश कर जावै, नई भूमिका मे तन्मय व्है जावै; पर इत्तो ई नहीं, नई भूमिका नें निभावतो थको, पाछली भूमिका सूं जुड़योड़ा लोगां नें होम देकर अळगो व्है जावै। देवकी नें मां रा पद सूं सिणगार वो उणनें छोड़ आगै बध जावै। जसोदा अर नंद री सभाग की न्यारो कोनी है। अो ई हाल गोप-गोपियां रो हुयो। अै तो सब ठीक पण कांई वो मुथरा री प्रजा माथै, कंस नें मारियां पछै चिप्योड़ो रह्यो? बिलकुल नहीं। मुथरा छोड वो द्वारका पूगग्यो। महाभारत रा जुद्ध मे शस्त्र रो परस नी करण री प्रतिज्ञा लेय, वो जुद्ध रा रूप में कमायोड़ी आपरी ख्यात नें विसरजित कर अर अेक दार्शनिक री भूमिका निभाई। इणनें स्वीकार करतो वेळा वो जादवां नें त्यागण री तैयारी दिखाई, वांरी उन्मत्त अवस्था देख वो जादवां रै विनाश रो कारण बण्यो।

कृष्ण जैड़ा मनासवत जोगेसर सारू समाध लेय मरणो ठीक व्हैतो। वो इण परंपरागत भूमिका नें भी त्याग दी' वो मरण सूं साख्यातकार कियो निरजन मे व्याध रा तीर सूं। पूत, भायलो, सारथी, बंधु, संगीतकार, प्रेमी, जोद्धा, पति, राजा, राजनीत रो धुरंधर, वक्ता, दार्शनिक इत्याद सगळी भूमिकावां में अपरंपार रस घोळ, कृष्ण अंत वे सामान्य मानव ज्यूं आपरो मरण स्वीकार कर जाणै सगळी भूमिकावां नें हराय दी। ईसा मसीह मरती बगत कह्यो हो, *'हे ईश्वर म्हैं वो कुणसो पाप कियो जिको थूं म्हनें आ सजा दी?'* म्हारा विचार सूं ईसा री वाणी उणरी विनम्र मानवीयता प्रगट करै। सूअर रा मांस री सेवन करण सूं अतिसार रोग रै कारण गौतम बुद्ध री संसार लीला पूरी हुई। इण सूं आ बात समझ मे आवै के जोग री सिद्धि पावण वाळा महात्मा भी मामान्य मिनखां रै शरीर री नियति सूं मुगत कोनी हो सकै। *कृष्ण रा नग्न मरण री भी आ ई कथा है।*

कृष्ण रा गोपिया साथै कियोडा 'व्यभिचार' रो हाऊ हमेस ऊभौ कियौ जावै। साची वात है कै कृष्ण जिका मी जीवण नै अंगीकार कियो, उणनै सामान्य मिनख री भात स्वीकार कियौ, पण साथै साथै आ भी भूलण री बात कोनी कै कृष्ण में की इण भांत री निपुणता ही कै वौ सामान्य मिनख री नियति-मे लूण रा कण री ज्यूं घुळ जावतौ अर उण माथै आपरी छाप छोड जावतो। अबोध टाबर, ढोर, डांगर, गणपढ, छोटी वडी, सुरूप कुरूप नारियां—वो सगळां नै समान रूप सूं ग्रहण करी वांरो आपरो बण'र ग्रहण कियो अर मंडो लाग्यो जांणै वो थोडो ताळ उणमे पूरी तरियां उळझग्यो, पण जद उण सूं आगौ जावण री जरूरी छिण हाजर हुयो तो दूजी वार मुड'र उण साम्ही कोनी देख्यौ। किशोर अवस्था पार करतां करतां जिको आदमी राधा सूं मूंडो मोड़ लियो वौ भलां गोपिया कांनी देखतो? बरस बीतयां वो गिरस्थी भी वण्यो।

अर छेला दिन तांई कुटुंव वातसल्य रो व्यवसाय भी ईमानदारी सूं करतो रह्यो। *पण वो आपरै वंश रो विस्तार कोनी होवण दियो। वो अपत्य* मरण री वेदना अेकाकी रैय भेल ली, चुपचाप अर अष्टनायिकावां सूं घिरियोड़ो भी वो अेकलो ई रह्यो।

आसक्ति अर विरक्ति दोनां री पराकष्टा वौ चतुराई सूं हासल करली। वो मेघ ज्यूं वरस कर रीतो होय गयो परो। द्वारका बळनै भसम हुयगी। पांडव भी राम ज्यूं राजसुख कठै पा सक्या? महाभारत रै जुध रो दुख उणनै जीवण भर बाळतो रह्यो। कृष्ण रो भी कांई वच्यो? की कोनी। बचगी फगत वळता कपूर री सौरभ। आपरा व्यक्तित्व नै आपरा ई हाथां सूं पूंछण री पूर्व कळा ही कृष्ण में!

अर फेर भी म्हनै लागै कै श्रीकृष्ण आज रै संसार री विसाळ अनुभूति में कोनी मावै। लागै कोनी कै कृष्ण नै आज रा जुग में जीवत रूप मे फेरूं विचरण करतां देखूं—कै वो जीवतो होय'र आवै अर ससार में सुख बांटै। बल्कि ओ ई ठीक है कै वौ पुरातन साहित्य रै घूंघटा में छिप्यो है क्यूंकै इण सूं ही उणरी चिरंतनता अमरता बणी रैसी। जंतरजुग आयग्यो है, जगत सावधान हुयग्यो है। इदको जाणकार हुयग्यो है। अबै तो इत्तो सीधो कोनी रैयग्यो है कै किणी री अेकाकी पगचाप सुण उणरै लारै हालै परो, उणरो मूंडो भाळ आपरो चक्कर चलावै। व्यास रा जुग में, लोककथा रा किणी अेक कल्पित काळ में भलांई कृष्ण रो जीवण संसार व्यापी वणग्यो व्है, आज जद व्यक्ति रा जीवण री सगळी इयत्तावां फैल चुकी है, तो अेक सरब संपूर्ण

आदर्श पुरुष आज रा सुसंस्कृत जीवण नै व्यापार भी दस आंगळ ओछौ पड़ैला। वो महान बण सकैला, इसो लागै कोनी। हां, हो सकै पुराणा धरम चलावणिया—इत्ता मोटा व्यक्तित्व मात्र उण आंदोलनकारी जीवण रा हरावळ मे सोमा पावै। ओ भी कोनी लागै कै कोई अेक आदमी, संपूर्ण मानवी जीवण रो तात्विक अरथ समझावण री हिम्मत करैला। कृष्ण रो प्रेम सुंदर हो आपरै जुग मे, उणरी राजनीति री चतराई आज रा गणराज्य में पूरी कोनी सिद्ध व्है सकै। उण महामानव रो जिको भी निजी सत्व हो, वो आज री संस्कृति री प्रगल्मता सारू पूरो कोनी पड़ै। वो बिना संदेह अेक खेतीकरसण री संस्कृति रो प्रतीक हो। जे वो वर्तमान यांत्रिक नागर संस्कृति में रह्यो तो फगत मरामल मंदयोड़ी मजूस रो सिणगार बण कर; पौरुष, प्रीत, संगीत अर दर्शन रो प्रतीक बण कर। समझदार काळ सैकड़ां बरसां लग करोड करोड़ मूडां सूं कृष्ण री कथा रो गान करवा कर, कृष्ण नै प्रतीक रूप में जीवतो राख्यो है। चोखा चोखा लोग महामानव रा सपना देखै, पण जंत्रयुग मे महामानव विसरजित व्है जाया करै, जीवित कोनी व्है। कारण ओ कै, आपां मानव मन री मूळभूत कमजोरी नै जांणग्या हां। कांई महामानव रो मांयलो मन किणी दूजा गुणां अर वरणां सूं बणण वाळो है। क्यूं कै आपां जांणां कै अबै आपां रै बीच अैड़ा महामानव कोनी जलमैला, इण कारण आपां अतीत री महानता रा रूपां रो गरब करां, प्रतीकां रा रूप में उणांनै जतन सूं राखां अर सावधानी बरतां। कठै ई इसो नी व्है कै वैरे अर आपा रै बिचै कोई आंतरो ई कोनी रै जावै।

गोगाजी रा घोड़ा

डॉ. नेमनारायण जोशी

आई साल मादवा बदी आठम—जलम आठम—रै दिन सिंझ्या पड़्यां पैली-पैली परजापत री घरआळी काळी चीकणी गार रा फूटरा घड़ियोड़ा दोय गोगाजी रा घोड़ा पूरा सूक्योड़ा, कदे अघगीला ई—हैली पुगाय जावती। दादी वां नै उठा'र रसोई आळी अंधारी साळ मे मेलै, जा पैली तो टाबर-टीगर आय'र घेरो घाल देवता। वां री मोळी आंख्यां मे आयोडी चमक जांणै बूझती कै औ कांई है? टीगरां रै बात समझ मे नी आवती जरै टाबरां मायलो कोई बडगर हृथ मे मालो झाल्योडा असवारां अर घोड़ा रै बारी-बारी सूं हाथ लगावतो कैवतो कै औ तो है गोगाजी अर औ है आंरा घोड़ा। कहबाळो तो बुझागरजी री तरज में कैवतो पण सुणबाळा कोरा रा कोरा ई रैय जावता। घर रा बूढा-दानां सूं बूझ लेवतो कोई कै गोगाजी कुण-कठै रा हा, अर क्यूं आवै है वां रा घोड़ा सालोसाल, तो जवाब मिलतो चुवांण हो, चुवांण; गोगोजी तो हो चुवांण अर पाबूजी हो राठोड़। सुणबाळां रै मन मे फेर भी चांनणो नीं होतो। उण बगत तो खैर मैं टीगर हो, पण आज घर रा दानां लोगां में म्हारी गिणती हुवै। टाबर-टोळी जै वा ई बात आज म्हनै बूझ लेवै तो मुस्कल पड जावै। गोगामेडी रा चुवांण राजा गोगादे री सात सै बरसां री धुंध मे डूब्योडी का'णी री बिगतां सायत ई बता सकूं। इतरो जरूर ध्यान है कै का'णी में देवळ चारणी अर पाबूजी राठोड रा नांव आवै पण वै क्यूं आवै अर नी आवै तो काई नुकसाण है, आ मैं नी जाणूं। जिण में गोगाजी रो नाम आवै इस्यो अेक दूवो पण कदे सुण्यो हो। उणरी भी अेक खूणो कद टूट'र खिरगो, म्हनै वेरो नी। ....

करि राखो नेड़ांह। ढळिया हाथ न आवसी, गोगादे घोड़ांह।

अर म्हनै लागै, कै का'णी री बिगतां रा वै घोड़ा साच्यांणी ई ढळगा है अर अब आपणैं हाथ भी नी आवणा।

पण दादो नै काणियां सूं कांई मतलब, जलम आठम आई, तो इणरो मतळब हो उपास राखण आळा रै खातर सेगार बणाणो—सिंघाड़ा री सीरो

अर पळीचो री पुड़ियां, सो आज बणाय नांख्यो ही । इबै आयगा गोगाजी रा घोड़ा, मतलब तड़कै गोगा नम हो जासी । गोगा नम, मतलब खीर बणाणी अर मेदा री बिलोवणा माथै बटघोड़ी सेवां, जीं पर कड़कड़ खांड अर पिलोड़ी । टाबर-टींगर समझ जावता कै परभातै तीन कोस आधूणै गांव पादू में गोगाजी रौ मेळो भरीजणौ, अर खरची हाथ आ जावै तो देखण नै चालणौ । पण खरची कठै ? आज रिपिया पीसां री घणी मोकळ है । पण वीं वगत देखबा नै ई कठै हो पीसो ? जारज पंचम अर रांणी री फोटू आळो तांबै रौ पीसो जद गाडी रा पेड़ा जितरो लूंठो दीसतौ । रास्तै चालतां कदै कोई छोरा-छापरां नै लाघ जावतौ तो सगळा साथी सायनां नै दिखातौ फिरतौ । छीतर माळी नै तळाव री पाळ पड़ता अेक आंनी काई लाधी, आखो गांव वीं नै तकदीर आळो मानण लागौ । गांव रौ ई भादवा सुदी तेरस रौ मेळो व्हैतौ बालाजी रौ, तो जोसीजी खुदोखुद मेळा में जाय'र मीड्यां री दुकान सूं दोय रिपियां रा पीसा खुल्ला करा लावता अर पांती आयां सै नै बांट देवता । पांती में कदै च्यार पीसा आवता, कदै पांच टाबर-टींगर दोय दिन तांणी मगन रैवता । पण वी मेळै रै आडा तो हाल घणा दिन पड़्या है, अर इण पराये गांव रा मेळा खातर खरची देवै भी कुण ?

म्हनै वीं वगत नवमो (बरस) चालतो । बडै बाप रा बेटा भाई रामचंदरजी—म्हारै सूं बरस-खांड बडा, म्हारा जोडीदार हा । आधी रात रा भिझोड़'र वै म्हनै जगायो तो च्यारूंमेर झालर, टिंकोरा अर नगारां री गूंजती आवाज सुण'र मैं हाफाचूक व्हैगो फेर याद आई कै बजार आळो चारभुजा रौ मिंदर है जठै म्हैं दोयूं भाई उमाव में भर्योड़ा, मिंदर रै पुजारी अर मदन दरजी रै सागै नीं समझ में आवण आळा भजन घणी देर ताणी गळो फाड़-फाड़'र गावता रिया हा—या जांण'र कै म्हारै गळै रै जोर सूं ई भगवान रौ जलम होसी; अर जे भजन गाबा मे चूक रैयगी अर जलम नी होयौ तो पुजारी फेर पंजीरी नी देसी । सेवट जलम हुयौ अर हथेळी माथै दई रौ चिरणामत आयौ । वीं नै चाख्यो तो मूठी पंजीरी सूं भरीजगी । बारी बारी सूं पंजीरी अर नींद रा झोका खावतो मैं भाई रै सागै हेली कांनी चाल्यो तो अेक'र फेर म्हनै पादू रा मेळा रौ ध्यांन आयौ ।

दूजे दिन घड़ीक दिन चढ्यां, न्हाबा खातर तळाव में कड़्यां सूदा पाणी में ऊभ'र मैं भाई नै बताई कै म्हारै कनै अेक पीसो है, तो वै हाथ सूं नाक पकड़्यां चिमखी मारता-मारता रैयगा । नाक छोड़'र दोयूं हाथां सूं कड़्यां रै चौफेर ऊजळो पालर पांणी काटता थोड़ी आंख्यां सूं वै म्हारै कानी यूं देख्यौ जाणै मैं कोई जादू रौ खेल दिखा दियौ होऊं । मुळकता होठां वै थोड़ी

देर म्हारी बात री सच्चाई री था लेवता रिया। विश्वास आयौ जरै बोल्या–तो आज तिरां कोनी –चालो मेळै। अर झट नाक पकड़'र बै बैगी-बैगी दोय तीन चिमरुयां मारी, मैं भी चिमरुयां खाय'र बारै आयगो।

सांवटपोडी आली घोत्यां बारलै चौक री तरणी मायै उछाळ'र मैं दादी नै थाळी पुरमण री कैयी, तो दादो कह्यो कै पैलो डागळै जाय'र ईं साळ रो मोखो उघाड़आयो अठोनै भाई नाळ कांना चाल्या, अठोनै दादी थाळी में पूजा री सामान मेल'र साळ में बड़ी, जद मैं भी लार-रो-लार परो गयौ। अंधारी साळ में चांणचकी चांनणो होयगो अर साम्हला आळ्या में आगूणो मूंडो करयां गोगाजी रा घोड़ा दीस्या। घोड़ा अर असवारां री घांटयां, काल करतां आज, क्यूं बेसी तण्योड़ी लागी अर भाला पण वां रा आज क्यूं बेसी लांबा अर तीखा दीस्या। दादी वां रै पाणी रै कळसयै रा छांटा दिया, मोळी बांधी, कूंकू री टीक्यां लगाई अर खीर सूं मूंडो जुठार'र हाथ जोड़ लिया।

जीम-जूठ'र म्हे दोयूं भाई पाटू रै गेलै बहीर पड़्या। गांव रै गोरवै ईं परजापत्यां रा न्यावड़ा कनै पूगतां-पूगतां जद भाई म्हनै बूझ्यो कै पीसो कठै है तो मैं डावै हाथ सूं कमीज रो पागट में पड़ी माचिस री डाबी नै हिलाय'र बजा दी। भाई मुळक'र कैयो कै खाली डाबी मे कांकरो पण इस्यौ ई बाजै; जरै पेटी नै खोल'र रांणी छाप आळो पीसो वां नै आस्यां दिखा दियो। अब थावस आयां बै जमा-जमा'र पग मेलण लागा। जीवणा हाथ नै माजीसा री बंगलो लारै छोड'र म्हे मगरै चढ्या तो आथूंणी पून रा फटकारा लागण लागा। लारै सूं गुल्लो भाई—गुलाबजी भूतड़ो—आयो लांबा-लांबा डग मेलतो अर धोती रै चिल्लां रा सरड़ाट उड़ातो। 'आ ज्यावो रै मोटियारा'—कैय'र बिना चाल धीमी करयां वो आगै नीकळगो। आखै गांव मे वीं सरीसो आघतो चालणियो नी हो; बगूळ्यां ई देख ल्यो जांणै। म्हे वी रा बेंत री कामडी जिस्या डील नै लबळका खा-खाय'र आघरो होतो देखता रिया।

अब भाई नै भी मेळो तेजी सूं खीचण लागो, अर बै म्हारा सूं, पैली दो-तीन पांवडा, फेर आठ-दस पांवडा आगै ई चालता रिया। कांई बेरी पून रा फटकारा लागण सूं, कै आघतो चालण सूं म्हारी धोती चांणचुकी खुल'र उडण लागी। माय आय'र मदद नी करता तो पून रा वी वेग में अेकला सूं पाछी बंधीजती भी कोनी। ओस्या देखतां कद भी म्हारो वी बगत छोटो हो। मैं बांवन्यो नी रैय ज्याऊं, इण फिकर सूं घरआळा दो महीणा तांणी घणौ ई दूध-मसाल्यो पायो पण म्हारो गांठ नी खुलणी ही, सो नी खुली। फेर भी धोती तो म्है म्हारै सायना-सारू छह वारै री ईज पैरतो, जिण सूं लांग

टांकतां-टांकतां लारै ढीमड़ो बण जावतो । भाई कैवता कै तिलंगी पैरया कर, तिलंगी; पण तिलगो पैरो चावै चुलंगी, ढींमड़ो तो बण्यां विनां रैवतो ई कोनीं ।

मगरै री ढलाण उतरया तो बायरो बंद होय'र ग्रमूझो होवण लागो अर तिस लागी जोर री । ग्राथेटाळा नाड़या मे रातोपीळो माटी री रंग लियां पालर पाणी मरयौ हो—गैरो दूध नांख'र उकाळ्योड़ी चाय जिस्यौ । पाळ पर ऊभा बवळ्यां री छांग्योड़ी सूळासूदी डाळ्यां पांणी में डूब्योड़ी, तीर पर मूंडो काढयां पड़ो ही । वां नैं टाळ'र जुगत सूं पाणी पीयो । फेर पाडू रा तळाव रै उतरादा ताल मे भरीजण ग्राळै मेळै री सोय बांध'र उठै सूं ऊजड़ चाल्या । पालर पाणी थोड़ी देर तांणी पेट में डबळक-डबळक बोलतो रियो। कोस-ग्रेक चाल्या हुस्यां कै ग्राधा सूं ई डोलर-हींडै रा घूमता पालणा दीसण लागा । भीणैं बादळां री पूठ माथै चितरांम-सो दीसतो डोलर पैली तो फरदां सूं बण्यो नान्हो रमतयो-सो लाग्यौ पण साकड़ै पूगतां-पूगतां पूरो कुंमकरण होयगौ । जमी सूं सुरग मे जावता, ग्रर सुरग सूं जमीं माथै ग्रावता पालणां मे हीडा खाता रंग-रंगीला गावा पैर्यां मोटयार, भीणा मोट घूंघटा काढयां लुगायां ग्रर उघाड़ै मूंडै झांकती डावड़्यां मुळक-मुळक'र मन रो हुरख-उछाव बिखरै ही ।

पागट मे पीसो ग्रब पेटीसूदो कूदण लागो । हाथ मे जाडा कपडा री लांबी कोथळी लटकायां, जिण मे कांई बेरो कितरी रेजगी भरी ही, गंजी पैरयोड़ा ग्रर तैमत मारयोड़ा डोलर-हीडै ्ळा नैं भाई बूझ्यो कै ग्रेक पीसा मे म्हां दोयां नै हिंडाय देई कै नो - वो बिना हां-नां करयां हाथ पसार दियो । मैं पीसो काढ'र झट बीरी हथेळी माथै मेल दियो, जिको म्हारै देखतां-देखता लांबो कोथळी मे जाय'र हळकी-सी ग्रावाज करतो गुम होयगौ । गोळ उतरयो जरै पैंनो पाजणो खाली होना ई म्हे दोन्यूं वी मे जा बैठ्या । राता पोत्या बांध्या ग्रर हाथा मे डांगडा लिया दोय गूजरा रा डावड़ा ग्रोरूं ग्रायगा । फेर चरड़क-चूं री ग्रावाज रै सागै पालणो ऊचानी चाल्यौ ; पण ग्रां-टै ई जायर ठैरगौ । हेठानी झाक्या तो ठा पड़ी कै दूजोड़ो पालणो भरीज रियो है । फेर जरड़ाट ऊठयो ग्रर म्हे मथारै पूंचगा ।

निजर च्यांरूमेर घुमाई तो दिखणादै पसवाडै गांव रो लूंठो तळाव कटोरा ज्यूं पोळांपोळ भरयौ दीस्यौ, जिणरै बीचूं-बीच बगरूडा माथै ऊभा ग्रेकला रूंखड़ा री लांबी परछाई पाणी रै काच माथै पळकै ही । ग्रगूणै पसवाड़ै सोयेक पावंडा छेड़ै सरू व्हेय'र दूर तांणी खेता मे ऊभी कड़्यांसूदी बाजरी

रौ गैरौ हरयौ रंग भरयौ हौ जिण में कठै-कठै जुंवार रा खेतां री हळकी धौळाम बापरयौ हौ। उतराद मे मेळा री जगा अर खेतां रै बिच्चै दो-तांने'क कुत्तरडा अेक मरयोड़ा जिनावर रै मास माथै बिलग्या हा, अर चील-कागला माथा बैठ्या आप री बारी आवण री इंजार मे नान्ही-नान्ही फुदक्यां लेवै हा। आपूणै पसवाड़ै ताल में मेळो भरयौ हौ घेर-घुमेर जिण रै बिच्चै-बिच्चै मीड़यां री चिलकती धोळी छोलदारयां रै मूंडागै फिरता भात भतीला स्याण, पोत्यां, पागड़यां, टोप्यां अर लूंगड़्यां में बाण्या-बिरामण, जाट-गूजर, रजपूत-क्यामखानी, भांबी-रेगर न्यारा-न्यारा नी पिछाणीज'र अेक ई रंग-बिरंगी छींट रा छांटा हो रिया हा।

चांणचको पालणो हेठानी चाल्यौ तो म्हांरो काळजो ऊंचौ—मूंडै कानी आयो अर पालणो नीचानी चाल्यौ तो काळजो हेठानी सूंडी-नैड़ो बोल्यौ। दोयेक आटा काट्या पछै वो ठिकाणै आयौ अर फेर तो वै चक्कर चाल्या अर वो मजो आयौ कै कैवण मे नी आवै। सावण मे नीमड़ा रा ऊंचा डाळा में घाल्योड़ा नांवै दाव रा हींडा रौ मजो पण कमती कोनी, पण इं हींडै रो मजो न्यारो ई हौ। म्हनै लाग्यौ जाणै मैं सूंसाड़ करतो गोफण मे मेल्योड़ो माठो हूं पर जै छूटगी आ गोफण तो ? आगै मैं सोच नीं सक्यौ। डील री रूंआळो घड़ी-घड़ी मे ऊभी होती रैयी अर मैं इष्ट देव नै सुमरतो रियौ।

गांठ री पूंजी तो खतम होयगी अर मेळो हाल पूरौ ई बाकी पड़्यौ हौ। मेळा मे बडता ई डावै पसवाड़ै मेडताळा हलवाई री दुकान हो जठै भांत-भात री मिठायां अर लोग दबादब खा रिया हा। भाई आगै होय'र भाव बूझयौ तो हलवाई कैयौ कै पीसा रा दोय घेरा। भाई मुळक'र म्हारै कानी देख्यौ। मूंडा मे आयोड़ा पाणी नै घूंट'र मैं डावै हाथ सूं पागट मे पड़ी माचस री डाबी नै हिलाई पण वा बाजी कोनी : झूंमळ भाई म्हनै जिको डाबी नै काढ'र परी बगाई अर हारयोड़ा जुवारी सा म्हे दोयूं आगै चाल्या। मींड्यां री दुकाना मे रब्बड दड़्या, सलेट रा बडता री डाब्यां, जोर सूं बाजबाळी सीट्यां, फूंक सूं फूलबाळा बब्बू अर दूजी भांत-भांत री चीजां भरी पड़ी ही पण वै मुनाणी भी नी आई। मन मे औ हिसाब लगाता रिया कै हीडां खावण मे नी खरच कर देता पीसो तो आ मे सूं कुणसी चीज आंपणी होती !

अेक नीमड़ै री छीयां में लोग हाथां पर पक्का नांव खुदावै हा। नांव में जितरा आखर, बितरा ई पैसा। जाणी 'ॐ' खुदावो तो अेक पीसो। कळाई पर पट्टामूंदो पड़ो, जिण मे हमेस ब्यार ई बण्योड़ा रवै, कुरावो तो दो आना।

नुवीं बीनण्यां माऊमाव खुसपुस करती, मांय सूं उछाव मरी ग्रर ऊपर सूं सरमाती, कै तो हाथ माथै दूजी लुगाई रै मूंडै सूं बतायोड़ो ग्राप रै बींद री नांव कुरावै ही, कै ठोडी ग्रर गालां माथै बिंद्यां लगवावै ही । बेमाता जिण जगां तिल बणाती-वणाती रैयगी, उठै गूंब मैं हरी टिपकयां लाग रैयी ही। नांव खुदाबा खातर म्हारो भी जीव मांय सूं ग्राकळ-वाकळ होतो रियो । ग्राज म्हनै साम्हो पीसा देय'र कोई म्हारै हाथ पर म्हारो नांव खोदणो चावै तो मैं राजी नी होऊं पण वी बगत बात ई ग्रौर ही । छेवट लांबी सांस छोड़'र म्हांनै उठा सूं भी चालणो पड़ग्रो । मन उदास व्हैगो ग्रर हाथ-पग ढीला पड़गा । हकनाक ग्राया मेळै !

मूंडागै ग्रेक लूंठा नीमड़ा हेठै गोगाजी रो थांन हो । ग्रेक ऊंचा चांतरा माथै पक्की साळची में मकराणा रा भाटां सूं तरासियोड़ी गोगाजी री घोड़ै-चढी मूरत ही जिण रै चैरै माथै नीं तो उदासी ही ग्रर न थाकेला रो कोई निसांण । मालो ताण्यां निरमै घोड़ा री पूठ माथै जम्या हा । मूरत रै डावै पसवाड़ै खुणा मे धूंप्या मूं धुग्रै री लीक ऊठ रैयी ही ग्रर मूंडागै बदारघोड़ा नारेळां री डांड्यां ग्रर टोपाळ्यां रा टुकड़ा बिखर्‌या पड़्या हा । चिटक तो भगत लोग गळनी सूं भी नी छोड़ी ही । कमर पाघरी करण सारू म्हे चूंतरा माथै पसर्‌या ई हा कै भाई पाछा ऊठ'र बैठा व्हेगा । बोल्या — गांव में छापणी दादी रो पीर है, बोराजी रै ग्रठै, जिको उठै चाल'र ग्रासयां ।

घरै पूग्या तो बोराजी दादोजी बारै नीमड़ै री छियां में मांचो ढाळ्यां ग्रकरोड़े ई बैठ्या हा । निजर कमती रैयगी ही, जिको धोक देय'र नांव बताया घणा राजी हुया डोकरो । धोळी भोपण्या नै हिलाता म्हां कांनी देख'र बोल्या — मेळो देखबा ग्राया दीसो; जावो पैली मांय जाय'र दोपारी करथावो । खीर-पुड़ी खाय'र बारै ग्राया जरै दादोजी सांकड़ै ई ऊभा ग्रेक ग्रादमी नै कह्यो — यूं मेळा में तो जावै ई है ग्रां नै दुकान सूं ग्रेकेक ग्रांनो दिराय दीज्यै । भाई म्हनै कान मे कह्यो कै दुरगा काकाजी है । म्हे दोयूं बारी-बारी सूं धोक दी ग्रर वा रै सागै होयगा । मेळा मे बोराजी री पीतळ रै बरतणां री दुकान ही जठै सूं म्हांनै न्यारी-न्यारी ग्रांनी मिली ।

ग्रबै तो म्हारै घूघरा बंधगा । थाकेलो भूल'र चकरी बण्या चारूंमेर ग्राटा काटण लागा । पैली तो लाग्यो जाणै ग्राखै मेळै नै खरीद लेस्यां पण मिन्ट दस-पांचेक में ई जळेबी रा घेरा, मेड़ता रा पेडा ग्रर पोकर जी सूं ऊंटां लद'र ग्रायोड़ा जामफळ खायां पछै म्हारा गोज्यां मे ग्रेकेक पैसो रैयगो । म्हे बिचार करै हा कै कुण कुण सी जिनस लेवा जितरै तो ग्रेक पौसराळो ग्रोटो घारा ग्रर

जम्योड़ी मेळो इयां खळबळीजगो जाणै मुवाळ माख्यां रै छातै में कोई भाटो मार दीयो व्है। मेळा रा ताल मे बैंत-बैंत पांणी बैवण लागो जिण में छपळक-छपळक करता धोती रा खोजा टांक्योड़ा मोट्यार—अेक हाथ मे डांगडो लियां अर दूजोड़ै मे जूत्यां लटकायां, बैगा-बैगा पिरण लागा। गोडां तणी घाघरी उठायां, उजळी पीडयां चमकती गोरड़्यां छाती रा उठाव नै आनी ओढण्यां में लुकाबा री बिरथा कोसीस करती सरमां मरती सम्हाळ-सम्हाळ पग मेलै ही।

मेळा री कोरां सूं उतरादा, अगूणा अर दिखणादा—भांत-भांतीला गैणां पैर्‌योड़ा मिनख-लुगायां रा रेला चालगा। मेळो तेजी सूं बिखरबा लाग्यो जरै भाई भी खोजा टांक'र पगरख्यां हाथ मे ले ली अर म्हारै कानी देख'र बोल्या- तो फेर आपां भी अब टुळां। मैं भी सजगो। जितरै तो गूलगरी रा सांटा बेचवाळो जीवणै हाथ कांनी सूं बोल्यो—ले ज्यावो अेकेक पी.सो। भाई पीसो देय'र एक जाडो-सो सांठो भारी मांय सूं खींच लियो। मैं भी पीसो काढण लागो जरै आ कंवता कंवता कै के करसी, घणो अेक ई, डावा पग रै नीचै दाबर भरड़-सै बी रा दोय टूक कर नाख्या अर अेक म्हारै कांनी आधो करता बोल्या— अब मोड़ो मती कर, खावतों खावतों पग उठाय'र भाज्या म्हारै गैल-गैल।

माथै बरसता अर हेठै बैवता पांणी सूं लड़ता रहे गांव कांनी बहीर पड्या। मैं थाक'र चूरो होयगो हो। आधेटाळो नाड्यो कांई मुस्कलां सूं लियो, म्हारो जीव जाणै है। मैं तो पाळ पर पसरगो अर कैय दियो कै म्हारा सूं तो अब आगै कोनी चालीजै। पाळ पर पैली सूं पूगोडा ओर लोगां रै सागै म्हारै ई गांव रो राऊ हेरड़्यो अर छींतर दरजी भी ऊभो हो। छींतर म्हारो पड़ोसी हो। बोल्यो—आव-आव, म्हारै खांदा पर बैठज्या। म्हनै वो खांदा पर बिठा लियो अर मस्ती मूं चान पड़्यो। राऊ हेरड्यो चालतो-चालतो गाणो सरू कर दियो :

> *मेळा थारो मजो घणो आयो....*
> बरस्यो धारांधार ताल मे पाणी भी आयो।
> लैरयो भीज्यो टपक-टपक रंग गालां पर छायो
> मेळा थारो....

फेर मेळै सूं खरीद्‌योड़ा बंसरी रा जोड़ा सूं ज्यांरै रंग-रंगीला फुंदा लटकै हा, झूम-झूम'र इणीज गाणा री धुन काढण लागो। मगरो चढ्या जरै डावै बाजू बिरखा मे भीज'र काळो पड़्योड़ो माजीसा रो बंगलो अर मूंडागै थोड़ा

ग्रांतरै गांव रा घेर-घुमेर रूंखड़ा दीसण लागा । छींतर म्हनै गादा सूं नीचै उतारघौ बोल्यौ—*ग्रब चाल परो मोट्यार, ग्रौ रियौ गांव मूंडागै ई ।* खैर, जियां-तियां घरै पूग्या । पग थाक'र इस्या होयगा हा जांणै ग्रडाणै मेल दिया व्है । ग्राला गाभा खोल'र सूका पैरघा । केलड़ी री गरम-गरम रोट्यां ग्रर बळबळती दाळ घणी सुवाद लागी । ब्याळू कर'र मांयला तिबारा में ग्रकगोड़ै माचा माथै ग्राड-टेढ करण खातर थोडोक ढोढो होयौ ई हो कै ग्राख चिपगी ।

लारली रात रा सपनौ ग्रायौ । माखर उठायोड़ा हड़मानजी दीस्या ग्रर मैं पाछौ मेळा मे पूंचगौ । *गोख्या सूं डीढ ग्रानो काढ'र दियौ ग्रर हाथ माथै* नांव खुदायौ । कांई सोवणा ग्राखर हा ! इस्कूल रा साथी सायनां नै दिखातौ फिर्‌यौ । फेर कांई देखूं कै ग्रेक गोरी डावड़ी रैं मूंडागै राऊ हेरडघौ भूम-भूम'र फूंदाळी बंसरी बजातौ ग्रर गावतौ जा रियौ है—मेळा थारौ मजो घणौ ग्रायौ ऽऽऽ। मैं राऊ नै ठैरबा खातर हेलौ पाडघौ पण वौ कदाच् सुण्यौ नीं ग्रर गावतौ रियौ । जितरै तो साम्ही सूं गोगाजी ग्रायगा—काळा भुजंग घोड़ा माथै ग्रसवार ग्रर धोळा बुराक गाभा पैर्‌यां । ग्रांख्यां रा मोटा-मोटा डोळा ग्रर ऊंची सूंतवां नाक । पळपळाट करता चैरा पर लांबी त्रिच्योड़ी मूंछयां । कागरयौ कर्‌योडी दाढी पर बध्योडो धोळौ सपेत जाड़्यौ । माथै उजळी पाग ग्रर कांधै चमड़ा री रखी । डावै हाथ मे लगाम ग्रर जीवणै में चमाचम करतौ भालो । ग्रांख्यां सूं ग्राग री चिणगारी काढता वै जीवणै हाथ मे भाला नै तोल्यौ । जितरै तो म्हारी नींद टूटगी । डील पसीना सूं पाणी-पाणी व्है रियौ हो ।

पाछौ सोयगौ । ग्रैरेक दिन चढ्यां ऊठ्यौ ग्रर हाथ मे लोटौ लेय'र तळाव कांनी जावण री सोची । बारलै चौक में ग्रायौ तो कांई देखूं कै हळकी बूंदा-बांदी मे भीजता गोगाजी रा घोड़ा पड्या है । ग्रेक घोड़ै री टांग टूट जावण सूं घोडो सवार समेत मूंढो टेक'र पाणी पी रियौ है ग्रर दूजोडै घोड़ै सूं ग्रळगो होयर सवार टूट्योड़ा भाला पर भुक्यौ है । म्हारी छोटकी बैन कदाच् काल सिंभ्या खेलती-खेलती ग्रां नै ग्रठैई छोड़गी ही ।

ढूंढाड़ महातम

श्री गोपाल नारायण बोहरा

म्हांका देखबा में अबार अेक पोथी आई। ईको सिरनामो छै 'पोथी ढूंढार महातम की।' पोथी में भविष्य पुराण में सूं मत्स्य देश को महातम लिख्यो छै। मत्स्य देश मे ही ढूंढाड सामल छै। ईं मे ईं देश का तीरथां, नंद्यां और परवतां को बरणन और उत्पत्ति लिखी छै। पोथी की भाषा संस्कृत छै जीको सार पढबाळा का मनबेलाव और जाणकारी कै तांई अठै उतारां छां।

इन्द्र बोल्यो 'हे बिरमा जी आप मनैं मत्स्य देश को महातम तो बतायो पण म्हारी संका या छै कै ईं मे कस्या-कस्या बड़ा तीरथ छै, रिस्यां मुन्यां का आसरम छै और वै कय्यां उत्पन्न हूया।' बिरमा जी कही— 'हे इन्द्र मत्स्य देश में विराट राजा को पवित्र नगर छै ईं कै नजीक ही बाण गंगा प्रकट हुई। या बाण गंगा पाताळ में सूं निकळी छै, विराट नगर सूं दक्खण दिशा में पांच जोजन दूर छै। अंडै सब देवता जींकी पूजा करै असी जाम्बवती देवी विराजमान छै या देवी जठै बिराजै ऊं पर्वत की परकम्मा करबा सूं महान पुन्य होय। ईं पर्वत का पश्चिम मे दो जोजन की दूरी पर अम्बिकेश्वर भगवान की अंबावतीपुरी छै जठै साक्षात अम्बिका देवी बिराजै छै। अंबावती सूं दक्षिण की तरफ चम्पावतीपुरी छै जठै चम्पा कुंड और चम्पकेश्वर महादेव को अस्थान छै। या पुरी चम्पा नाम की राजकुमारी बसायी छी। अठै ही गोदावरी नाम की बावडी सरस्वती को अस्थान और ब्रह्मशिरा कुंड तथा तिलोद की बावड़ी छै। ईं तरै ईं देश में अनेक तीर्थ छै। पत्र वन नाम का सुहावना वन में दर्भशिरा मुनि तपस्या करी और सिद्धि पाई। नजीक ही शीतला देवी छै जीका दरसण कर रोगी निरोगा होय। ईंका उत्तर में विजय और दुर्जय नाम का पर्वत छै।'

ब्रह्मा जी फेर बोल्या— हे इन्द्र अब मैं यां सब की उत्पत्ति बताऊं छूं सो सावधान होकर सुणो। जद दुर्बुद्धि दुर्योधन गायां को हरण कर्यो तो विराट राजा को कवर वां नै छुड़ावा गयो। ऊं बखत अरजुन नादर रो रूप धर कर विराट के नोकरी करै छो, सो यो भी उत्तर राजकवर को रथ हांकबा नै

बैठ्यो । कौरवां री सेना देखकर उत्तर तो घबरा गयो और पाछो भागवा लाग्यो । जद अरजुन ऊ नैं जबरदस्ती थाम्यो । ऊ बगत अरजुन पैड़ पर टांक्योड़ा अपका धनुष बाण नैं लेवा गयो तो आकाशवाणी हुई कै 'हे अरजुन बाण चला कर पाताळ मे सूं भोगवती गंगा निकाळ और ऊं में असनान कर और आचमन कर जद थारो नादरपणो दूर होसी और तूं गांडीव धनाबा लायक होसी ।' या सुण कर अरजुन आपका धनुष सैं बाण छोड्यो तो पाताळ मे सूं भोगवती गंगा परगट हुई और वो ऊं में असनान कर गांडीव धनुष लीनो अर विराट राजा की पते कराई ।'

ब्रह्मा जी फेर कही अब जाम्यवती की बात सुणो· पुराणा जमाना में अेक देव द्विज नाम को मुनि छो । वो निराहार रह कर घोर तपस्या करी । कई बरसां तक तो वो ठूठ की नांई ही खड़ो रह्यो । हवा के सिवाय और कुछ खाबा-पीवा को काम नहीं । ईं सूं देवतां नैं भोत चिन्ता हुई और वह सब म्हारे कन्नै आया जद मैं लोक माता चंडिका देवी की प्रार्थना करी । माता प्रगट होर मनै बरदान मांगवा बेई कही । मैं सारा समाचार देवी नैं अरज कर्‌या और देवतां को संकट टाळवा की प्रार्थना करी । देवी राजी होर मनैं वर दियो । फेर वा देवी गुवाळ्या की लड़की को भेस बणार उठै ही गाय चरावा लागी । ऊंका हाथ में जामूण्यां छी । वा ब्राह्मण कन्नै गई । वो आंख्यां मीचर ध्यान लगायां बैठ्यो छो । देवी कही अरे ब्राह्मण तूं बिना बात ही क्यों काया नैं कळेश दे छै ? बड़ा लोग कही छै अक काया रासर धरम करणो चायज्यै । तूं नैं खावै, नैं पीवै और सूखर कांटो हुयो जाय छै । बड़ा लोग ईंनैं धरम नहीं मानै । लै ये जामूण्यां लै और बेखटकै यांनैं खा ।

पुराणा जमाना सूं रिसी मुनी फळ खाता आया छै । अे बातां सुणर ब्राह्मण का ध्यान में बिघन पड्यो । वो आंख्यां खोली तो सामनैं अेक गुवाळी नैं ऊभी देखी ज्यो हंस रही छी और गाय बछड़ा नैं चरा रही छी । वो मुनी तपस्या का जोर सूं जाण गयो अक या तो साक्षात चंडका देवी छै । रोस की मारी ऊंकी आंख्यां लाल हो गई अर वो बोल्यो 'हे देवि, मैं कोई अपराध तो कर्‌यो कोनैं, फेर भी तू जामूण्यां देर म्हारो तप भंग करबो चायो । जा, तू गाय बछड़ा समेत भाटा की होजा, थारो नांम जामवती व्हे लो, यो ही म्हारो वचन छै ।' देवी हंसबा लागी और बोली हे ब्राह्मण तूं म्हनैं सराप दियो ज्यो मंजूर छै पण मैं भी सराप द्यूं छूं अक तू जम्बू पर्वत हो जा [illegible] रा ही खोळा मे बिराजूंली । अयां ब्राह्मण तो पर्वत [illegible] और [illegible] समेत जाम्बवती की मूरत बण गई ।

अब अंबावती की उत्पत्ति सुणो- सतजुग में चन्द्रचूड़ नाम को राजा छो ? ऊंको राज समन्दरां तांई फैल्यो हुयो छो शृंगारकपुर को राजा ताराधिप ईंको बैरी छो। सो वो ऊंका राज नैं जीतबा नैं बर-बर मे हमलो करतो। ईं सूं ऊं को नगर खंड-खंड हो गयो अोर खजानो भी रीतो ह्वै गयो। या देखर वो राजा आपकी राजधानी सूं भाग निकळ्यो अोर मत्स्य देश का डुंगरां का बीच में बीहड़ जंगळां में तपस्या करबा लाग्यो। वो महादेव जी का पांच आंकां को मतर जपतो (नमः शिवाय)। जिद भौत समै हो गयो तो शंकर भगवान परगट हुया। राजा अस्तुति करी। शंकर भगवान बरदान दियो, हे राजा थारै तांई अठै हीं अेक सुन्दर नगरी बस जावैली जीं में शत्रु घुस नही सकैला। न थारी कदै हार होली। मैं भी म्हारा गणां समेत अठै ही निवास करूंला। साथ मे अम्बिका देवी भी रहैली। म्हे यां दक्षिण अोर उत्तर मे खड़ा नील अोर मेघ नाम का पर्वतां मे बिराजांला। या कह कर शिवजी उठै ही लिंग रूप सूं खाड़ा में बिराज गया। राजा भी आपको नगर ऊंडै ही बसायो अोर ऊं नगरी को नाम अम्बापुरी राख्यो।

अब आगै चम्पावती नगरी की उत्पत्ति को हाल सुणो। आगला जमाना में काम्पिल नाम को राजा छो। वो बड़ो बली, दयालु अोर विष्णु भक्त हुयो। अेक बार शांडिल्य मुनि ऊंके घरां आया। राजा सब तरै सूं वांको आदर सत्कार कर्‌यो अोर फेर वांका आबा को कारण पूछ्यो अोर अरज करी कै हे रिषी मैं आपको उपदेश सुणबो चावूं छूं। रिषी बोल्या हे राजा थे विष्णु भक्त छो। थां जस्या भगवान का भगतां सूं कुण मिलबो कोनै चावै। विष्णु भगतां का दरसण सूं सभी पवितर हो जाय छै। अब म्हारा आबा को कारण सुणो-- मैं थांनै भगती का उपदेश देबा नै ही आयो छूं। ईंनै सुण कर थे जयां उचित समझो सो करो। ईं सूं सब तरह का आनन्द ह्वैला अोर थांको राज अविचल ह्वै जायलो। या कह कर रिषी अन्तरध्यान हो गया। अेक बार तो राजा मोत दुखी हुयो पण फेर सावचेत होर विष्णु भगवान की स्तुति करी। जद मधुसूदन परगट होर बोल्या-- हे राजा थारी स्तुति सूं मैं प्रसन्न हुयो, अब तू वर मांग। राजा कही हे प्रभो आप सबका मालिक छो अोर सबका मन की जाणो छो। भगवान फरमाई-हे महीपाल थारा मन में ज्यो कांटो छै ऊंनैं मैं जाणूं छूं अोर जल्दी ही ऊंनै दूर करूंला। तीन्यूं काळां की आगली-पाछली जाणबाळा मुनि मनैं सांची-सांची बात बतायी छै। पुत्र तो कोनै पण पुत्री सूं थारा कुळ को उद्धार ह्वैलो। बेटा सैं भी ज्यो काम न हो सकै सो थारी बेटी करैली। या कह कर भगवान अन्तरध्यान ह्वै गया। राजा का मन को सारो संताप मिट्यो।

समै पार राजा कै रूपवती राणी सूं अेक रूपाळी कन्या जनमी । ऊंकै जनमतां ही सारा घर में उजाळो ह्वै गयो । राजा का मन में बड़ो आनन्द हुयो । चम्पा का सा रंग की ऊं रूपवती कन्या नैं देखर राजा ऊंको नांव चम्पा ही काढ दियो । अब वा कन्या दिन-दिन बड़ी होवा लागी । पण जद वा ब्याव लायक हुई तो राजा काळ बस हुग्यो और ऊं की मा भी राजा की साथ ही सुरग मे चली गयी । राजा का देश पर वैरी कब्जो कर लियो । जद राजकंवारी की धाय ऊंनै लेर मत्स्य देश में आ गयी । ऊंठै जद वा दस बरस की हुई तो धाय भी भगवान नैं प्यारी ह्वै गई अब वा राजकंवारी विलाप करवा लागी । हे भगवान म्हारा ही हीण भाग सूं ये सब काळ बस हो गया . अब मैं दुखयारी कोड़ै जाऊं और काई करू ।

सब बातां को कारण भाग ही छै ज्यो मैं अब भी जीऊं छूं और डोलूं फिरूं छूं । मनैं धिरकार छै ज्यो मेरेसूं पहली ही म्हारा मा-बाप मर गया और अब वे बिचारा बिना पाणी पियां सब नरक में चल्या जासी । विधाता मनैं कांई काम नैं पैदा करी छै । अब मैं कुण की सरण मे जाऊं । वा अैयां विलाप कर रही छी जद हीं आकामवाणी हुई—कन्या तू भगवान की उपासना कर वै ही थारा मन चाया पूरा करसी । वा बोनी मैं बाळक छूं और स्त्री होवा कै कारण अज्ञानी छूं । मैं तपस्या करबो कांई जाणूं मैं तो या भी कोनैं जाणूं कै कस्या देवता को ध्यान करूं और कांई तरह सैं तपस्या करूं । जद आकास-वाणी फेर हुई । थारा हिरदा मे भगवान ही ज्ञान उत्पन्न करैगा और जैयां भगवान की आग्या हो ऊंयां ही कर । प्राणी तो अग्यानी ही हो छै । भगवान की प्रेरणा सूं ही वो स्वर्ग मे या नरक मे जावा का काम करै छै ।

ऊं राजकंवरी नैं सामनै ही बडो शोभायमान वन दिखाई पड़यो, जो मे तरह-तरह का पंछी बोल रह्या छा । कदम, आम, दाड़यूं, आं का पेड़ झूम रह्या छा । उत्तर दिशा में अेक बावड़ी छी जी मे कमल खिल रह्या छा । ऊं बावड़ी मे संपाड़ो कर वा राजकुमारी आपका माता-पिता और सभी लागती-बिनागती का नैं जलांजली दी । फेर बावड़ी मे ऊठर वा चांक वन में गई और ऊंडै घास और पत्ता अेकठा कर आपका हाथां सूं परणकुटी बणायी और ऊ मे ही बैठ कर सात अक्षरां का मन्तर को जप करवा लागी (नमो नारायणाय) । कदै पेडां का पत्ता खार रह जाती, कदै कोरी हवा, कदै शाम को पाणी पी लेती, कोई दिन निराहार ही निकळ जातो । ऊंकी तपस्या मे विघन भी भोत आया । अेक बार बावडो और तलावां को पाणी सूख्गो । जद वा दूर दूसरी बावड़ी मे गई । वा भी सूखी-सट्ट मिली । पण वा आपको धीरज नहीं छोड़यो और ऊंडै ही खडो होर गंगा, गोदावरी और सरस्वती को आवाहन करयो और

कही - ज्यो मैं सत्रु ँजय राजा की बेटी छू ँ और सांचा मन सैं तपस्या करी छै तो सत्र पापां का नाश करबाळी नद्यां को पाणी भ्रां बावड्यां में भ्रा जावै । या कहतां ही बड़ा जोर सू ँ पाणी वां बावड्यां मे डावयो भ्रौर राजकंवरी भ्रसनान, ध्यान भ्रौर तरपण करके भ्रापकी कुटी मे पाछी भ्रायी । यो भ्रचरज देखर देवतां फूल वरसाया भ्रौर ऊंकी भोत बड़ाई करी । सारा ही नाडा, खाडा भ्रौर तळाव पाछा भर गया । चंपा फेर तप करवा लागी । ऊंकी घोर तपस्या नै देखर देवता चिन्ता करवा लाग्या भ्रौर तक्षक नाग नै बुलार कही—थे सब सांपां नै लेर जावो भ्रौर चंपा का तप में विघन पैदा करो । ऊनैं डरपावो । या सुणर महा जहरीलो सर्पराज सभी सांपां नै लेर चपा की कुटी पर गयो । पण वा सांपां की फू ँकार सू ँ डरपी नही भ्रौर श्री नारायण का ध्यान में बैठी रही । भगवान विष्णु या देखर गरुड़ नै भ्राग्या दीनी । गरुड़ जी जावो—तक्षक नाग चंपा की तपस्या में विघन करै छै । म्हारा भगतां नै ज्यो दुख दे छै वांको थे नाश करो । चाहे वो दुखदायी गणेश्वर ही क्यो न हो । भगवान की भ्राग्या सैं गरुड़ जी गया भ्रौर कोस भर का फासला सैं देखतां ही सारा सांप भाग छूट्या । गरुड जी भी सांपां नैं भागता देखर भ्रेक सीस्यू ँ का पेड़ पर थोड़ी देर बिसराम कर्‌यो भ्रौर फेर वापस भ्रा गया । जी जगां सीस्यू ँ का पेड़ पर गरुड जी विसराम कर्‌यो छो वो भ्राज भी गरुडावास बाजै छै । सारा विघन दूर होबा पर चंपा फेर भ्रापकी तपस्या मे लीन होगी । फेर भ्रेक बर बड़ा-बडा बाळां हाळी भ्रेक मोटी स्त्री भ्रायी भ्रौर बोली तू राजा की बेटी छै, ईं सुन्दर शरीर नैं क्यू ँ कळेस दे छै । ठंड भ्रर पाणी का दिनां मे ईं बन में क्यां रहली । कोई राजकु ँवर, गंधर्व या देवता सू ँ ब्याह करलै । ईं काया नैं कळेस देबा मू ँ कोई फायदो नहीं । या कह कर बा स्त्री भ्रेक खाडा में बिलायमान हो गई । फेर की समै बाद दुर्जय भ्रौर विजय ऊका तप में विघन करबा नैं उत्तर सू ँ भ्राया । पण वै चपा का तेज सू ँ पर्वत हो गया । वांकी चोटी पर सीतला देवी बास करै छै । यां पर्वतां की परकम्पा भ्रर जातरा करवा हाळां का सब रोग दूर व्है जाय छै ।

भोत बरसां तक तपस्या कर्‌यां पछै सारा संसार की भ्रातमा स्वय भगवान, ऊं राजकु ँवारी नै दरसण दीना । वा मन मे जी सरूप को ध्यान करै छी ऊंनै साक्षात सामनै देखर भोत खुशी हुई भ्रौर भ्रानन्द को मार्‌यो बोल्यो भी नही गयो । भगवान कही —वर मांग, थारो बाप भी म्हारो भगत छो । थारी तपस्या सू ँ प्रसन्न हुयो । जद चंपा कही—हे भगवान मैं तो भ्रापका दरसणां सू ँ ऊपर कोई भी बात कोनै जाणू ँ । भगवान बोल्या-या ठीक छै पण फेर भी कोई तो वर मांग । तनैं भ्रंडै ही वृहदश्व नाम को श्रेष्ठ पति मिलैलो

भोर भ'डै ही श्रेक श्रेष्ठ पुरी बस जावैगी। ऊँ में भांत-भांत की श्रटारयां, महल-माळिया, बाग-बगीचा श्रौर सड़कां हो जायली। चंपापुरी का नाम सूँ ही या पुरी प्रसिद्ध व्हैली श्रौर थारा नांव सूँ ही चंपा कुंड, सरोवर बाजैलो। बावडी को नांव तिलोदकी होलो। जठै माघ सुद 5 नै तिल श्रौर पाणी की जलांजली देबा सूँ गया मे पिंड देबा बरोबर फळ होलो। या कहर भगवान तो श्रन्तरध्यान हो गया श्रौर चंपा ऊं सुन्दर नगरी नै देखर श्रचरज में भर गई। फेर वा महल का ऊपर ही ऊपर का खंड में जार रहबा लागी। कोई समै वृहदश्व नाम को इक्ष्वाकु कुली राजकुंवार शिकार खेलतो-खेलतो उंडै श्रायो श्रौर पूछी—या सुन्दर पुरी कुण की छै। सब जणां कही या चंपा राजकंवरी की चंपापुरी छै। चंपा दूर सूँ ही राजकंवार नै देखर महल में बुलायो श्रौर सुखसाता पूछी। ऊंको कुळ श्रौर देश तथा श्राबा को कारण पूछ्यो। जद ब्राह्मण लोग ऊंनै सारी बातां बतायी। ऊंनै भी भगवान की बात याद श्रायी। वा कमलां की माळा राजकुंवार नै पहरायी श्रौर ऊंनै श्रापको भरतार मान्यो। मोत समै तक श्रानन्द सूँ भोगविलास करता हुया वै सौ पुतरां का माता-पिता हुया श्रौर फेर भगवान में लीन हो गया।

ब्रह्माजी श्रगाड़ी कही हे इन्द्र श्रब श्रेक श्रौर पवित्र तीर्थ को बरणन करूं छूं जंडै दैत्यां का डर का मार्‌या देवता जार सरण ली छी, वो ब्रह्मशिरा नाम को कुंड छै। हे इन्द्र थानै याद होली ऊं कुंड मे ही श्रसनान करकै थे बडो पद पायो छो। ऊंही श्रस्थान पर ब्रह्मशिरा दैत्यां नै हराया छा। कुंड का पश्चिम भाग मे सतदंड नामक श्रस्थान छै ऊंडै साक्षात नारायण देव विराजमान छै। ऊंका उत्तर पश्चिम मे दर्भ नाम को ग्राम छै जठै दर्भवती नदी श्रौर पत्र वन छै। कळजुग का पापां को नाश करबा हाळा महादेवजी को श्रस्थान भी ऊंडै ही मौजूद छै ज्यांकी स्थापना दर्भशिरा-नाव का मुनी करी। वै सरस्वती नदी को श्रावाहन करकै कही तू श्रंडै थिर होजा। फेर वै मुनी कठोर तपस्या करी। महादेव जी प्रसन्न हुया श्रौर कही - वर मांग जद मुनी श्ररज करी—हे पंचानन श्रंडै सरस्वती थिर रहै श्रौर श्राप भी श्रंडै ही निवास करो। जद शिवजी कही श्रयांई होली या सरस्वती कळजुग में भी लोप नहीं होसी। ईं को नाम दर्भवती होलो। बैसाख का महना मे श्रंडै श्रसनान दान करबा सूँ पुन्य प्राप्त होलो।

हे इन्द्र यो मत्स्य देश को महातम मैं थांनै सुणायो। ईंका सुणबा सूँ बहुत श्रानन्द श्रौर सुख की प्राप्ती होसी।

ईं महातम में ढूंढाड़ राज में सामल केई ठौर-ठीड़ां का नाव श्राया-छै,

जियां बिराट नगर (बैराठ), बाण गंगा, जाम्बवती (जमवायमाता), आम्बावती (आम्बेर), अम्बिकेश्वर महादेव (आँडा म्हादेव), चम्पावती (चाटसू), शीतला (शील माता की डूंगरी), गरुड़ावास (गरडवासो गांव), दर्भशिरा ग्राम (डाबच गांव) आद। पण ई में ढूंढाड़ नांदें को कोई हवालो कोनं आयो। ईंसूं मालम होवै छै कै यो नांवें पाछै पड़्यो छै।

म्हारी जापान-यात्रा

लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

---

(1)

जापान रो असली नाम जापान नी है। उणरो असली नाम निप्पोन है। जापानी आपरा देश नै निप्पोन कैवे। परदेसियां रा अशुद्ध उच्चारण सूं निप्पोन जापान बण गयो।

जापान देश चार टापुवां सूं बणयोड़ो है। आंमे होन्शू टापू सबसूं मोटो है। टोकियो, ओसाका, क्योटा, हिरोशिमा वगैरा जापान रा खास-खास शहर इणहीज टापू में बसियोड़ा है। बीकिनो रा तीन टापू इणसूं चिपियोड़ा है। उतराद मे होकायडो टापू है, दिखणाद में सिकोकू अर क्यूसू। इणां रै अलावा जापान रै समदर में छोटा-छोटा हजारूं टापू बिखरियोड़ा बसिया है।

टोकियो रै हेनेडा हवाई टेसण पर उतरतां ई घड़ी साम्ही भाकी। कळकत्तै रै ओर वठै रै टैम मे तीन घटां रो फरक हो। आ बात कैवणी पड़ैला कै अठै रा कस्टमवाळा भला आदमी हा। कांई आतां, कांई जातां सामान रैं हाथ ई नी अड़ायो, कांई पूछताछ ई नी करी। पासपोर्ट देख भटपट छाप लगा, सीख दे दी।

म्हांनै प्रिंस होटल में उतारिया। भ्रो तो मैं टोकियो में पूगतां ई देख लियो कै अठै नकसां रो जोर है। म्हारै कमरै में नकसो टांगियोड़ो हो। कान्फ्रेंस री भ्रोर सूं म्हांनै कागजात दिया हा उणा मे ई नकसो मेल्यो हो। गैलै मे जिण किणी नैं ई मैं गैलो पूछियो उणं भट कागद पेंसिल काढ नकसो मांड म्हनै गैलो बतायो। टैक्सी ड्राइवर नै कठैई जाबा नैं कहियो तो भट देसी नकसो जेब सूं काढ म्हारै मूंडागै राखियो जिण जागां जावणो हुवै, नकसै में बता देवो। बठै नकसै सिवाय कोई बात ही नी। रेलां मे सफर करबावाळां लारैई नकसा मौजूद।

(2)

उण ईज दिन सांझ री गाड़ी सू म्हांनै हिरोशिमा जावणो हो। टोकियो

टेसण मायँ पूगिया । टेसण री इमारत में वड़िया पण बठै नीं तो प्लेटफारम ई दीस्यो, नीं गाड़ी दीखी, नीं इंजन नजर आयो । अचंभै में पड़गी—च्यारू' पासी दुकानां ई दुकानां ।

जापान कौंसल वाळा म्हांनै कयो हो कै आपनै हिरोशिमा तक पुगाबा नै म्हांरो आदमी सायँ दे देवांला । वो आपनै सांझ नै टेसण पर मिल जावैला । गाड़ी छूटण री वेळा नजीक आयगी । म्हे उडीकता उकतायीजग्या । टेसण पर भीड़ घणी ही । नीं तो गाइड म्हांनै ओळखै नीं म्हे गाइड नै ओळखां । अैन वकत पर गाइड हांफतो थको आयो । आंवतां ई मनै देख बोलियो—भलो हुवो थांरी इण साड़ी रो जो इण नै देख मैं थांनै ओळखिया ।

गाइड म्हांनै लेय ऊपर चढियो । हूं सोचण लागी—आपांनै तो गाडी चढणो है । ओ ऊपर कठै ले जावै है ? ऊपर आंवतां ई देखियो कै प्लेटफारम पर आयग्या हां । गाडी मूं डागै ऊभी ही । समझ में नही आयी कै ऊपर चढिया गाडी किण तरै आयी । नीचै भांको । बाजार, सडक, दुकानां नीचै ही । टोकियो में आबादी घणी होवासूं रेलां दुकानां री छातां पर चालै । टोकियो शहर में रेलां रो जाळ सो गुंथियोडो है—आगै-पाछै, डांवै-जीमणै, ऊंचै-नीचै धड़धड़ करती रेलां चालती रैवै ।

जापानियां नै आपरी रेलां रो टाइम री पाबदी रो घणो आंजस है । बठै रेलां लेट नीं हुवै, कदेई हुवै तो कुछ सेकंडां सारू ईज । म्हांरी गाडी हिरोशिमा आडी भागी जावै ही । रेल री पटडी रै दोनां कानी नै खेतां में घर जगळ तक में बिजळी रा तारां रा खंभा रुपियोड़ा बतावै हा कै अठै उद्योग रो कित्तो बिस्तार है । घरां मायँ टेलीविजन रा अेरियलां रा खंभा साम्हो आंगळी दिखाता जापानी सज्जन श्री फुकुसिमा बोलिया—अै अेरियलां रा थोक देखनै आप अन्दाजो लगा लिरावो कै जापान में कितरा टेलीविजन है ।

सैंकड़ां कोसां री मुसाफरी मे देखियो कै जापान में अेक आंगळ धरती बेकार कोनी पड़ी । मान लो कठैई जमीन खेती रै लायक कोनी, पाणी रो खाडो ई है, तो उणनै ई काम में ले राखियो है । बीं खाडै में कमल ई बाय दिया । कमल री डांडी, बीज, पत्ता फूल, पांखड़ियां रो साग बणावै ।

(3)

ता. 31 जुलाई, 1959 नै सुबह 10 बजियां हिरोशिमा में विश्व सम्मेलन सरु हुयो । प्रतिनिधि टैम सूं पहलां ही भेळा हुवण लागा ।

हूं बारै बरामदे में ऊभी ही । अचाणचक अेक सांबी बाड रा सरदार

टोप उतार माथो झुकाय मुजरो करियो। बोलिया, आप जरूर हिन्दुस्तान सूं आया हो, मैं आस्ट्रेलियन हूं। पांच वरस दक्खण-भारत में रियोड़ो हूं। आप किसै प्रदेश सूं आया हो।

मैं कैयो— मैं राजस्थान री हूं ?

'आछो ! आछो ! उदैपुर तक मैं ई ग्योड़ो हूं, म्हारो नाम ऍड्यूज ह्यूज है। मनैं मराठी बोलबा री घणी मन में आय रयी है। आप रै साथवाळां में कोई मराठी बोलणियो है कै नीं ?

दूजे दिन मैं उणां नै म्हारै प्रतिनिधि मंडळ रा नेता श्री हिरे सूं मिलाया। ह्यूज वासूं मराठी मे धड़ाधड़ बात करबा लागा। मराठी रै 'ळ' आखर रो उच्चारण वै घणो शुद्ध करता। मनैं उणां रै 'ळ' रै उच्चारण पर खुशी हुयी और अचम्भो ई आयो। आपणैं अठै रा हिन्दी बोलणियां भायां सूं ख्वासकर उत्तर प्रदेश अर बिहार वाळां सूं 'ळ' बोलणी नीं आवै। 'ळ' रो प्रयोग राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती अर मराठी में तो खूब हुवै।

इण 'ळ' नै लेय नै मनैं अेक जूनी बात याद आयगी। बीकानेर राज में महाराज गंगासिंह जी रै बगत मे महाजन रा राजा हरीसिंह जी ठावा सरदार हा। बीकानेर राज मे उणां दिनां अेक हुकम निकाळियो कै राज नौकरियां में बीकानेर रा लोगां नै ई राखिया जावै। फलाणों बीकानेरी है कै नीं इणरो इम्तिहान घणीं विरियां महाजन-राजा साहब लिया करता। इण इम्तिहान री जरूरत यूं आयी कै घणा जणा नकली सर्टीफिकेट ले बीकानेरी बण जावता। उम्मेदवार री जांच करबा वै राजा साहब उणनैं पूछता—बोलो खळळ-खळळ। बाहरवाळां सूं शुद्ध उच्चारण नीं करणो आवतो अर वै बोलता खलल-खलल। उणई बगत राजाजी आपरो फैसलो सुणा देता—थारै बीकानेरी होवण में खलल है भाया।

श्री ह्यूज महाराष्ट्र री मायली वातां री घणी जाणकारी राखै। बठै री जनजातियां रै बारै मे उणां रो घणो ज्ञान है। जद वै महाराष्ट्र री जन-जातियां रै जीवण अर संस्कृति री वातां सुणाबा लाग्या तो मन में मनैं घणी सरम आई। मैं तो यां जनजातियां रो नाम ई नी सुणियो।

(4)

कान्फ्रेंस हाल रै बारै ऊभा प्रतिनिधि लोग गप्पां लगाय रया हा। गर्मी तेज पड़ री ही। जापान में छातां रा पंखा तो हुवै ई नीं। सब जणा हाथां में जापानी कागज रा पंखा लोधां हिलाय रया हा। सूडान रा प्रतिनिधि इजिप्ट

री लुगाई प्रतिनिधि मिस करम नै बतळायी—गर्मी तो अठै ई आपां जिसी पड़ै है पण जापानी आपां जिसा काळा क्यूं कोयनी ? पश्चिमी जर्मनी री प्रतिनिधि हाफू-हाफू करतो फूंकां देतो फिर रयो हो—'मर गयो गरमी आगे, मैं तो काले परो जावूं'ला।'

यूरोप री अेक जवान लुगाई प्रतिनिधि आपरै बटवै सूं काढै यूडीकोलन री सीसी नै छांटै माथै पै। हूं कनै बैठो, म्हारै ई ललाट रै उण यूडीकोलन लगायो। मैं कहियो- -मनै इसी ज्यादा गरमी कोनी लागै। हूं राजस्थान री अर बाई तपतै बीकानेर री रैवणवाळी, जठै इणसूं बेसी गरमी पड़ै।

जिण भवन में कांफरेंस हुई उणरै भेळै ईज शान्ति-स्मारक म्यूजियम हो। घणाखरा म्हे वो म्यूजियम देखण लाग गया। इण म्यूजियम में हिरोशिमा में जीं अैटम बम सूं तबाही हुई ही उणरी तसवीरां, नकसा अर आंकड़ा जमाय राखिया है। पूरो विवरण उण अठै रो दे राखियो है। उण महानाश रा रावमी कर्मा नै देख वजर री छातीवाळां रै ई आंसू आयां विना नीं रैवै। भींत पै अेक मोटी सारी तसवीर लाग री। उणमे धूंवै रो मगरो रो मगरो लपकतो लगो ऊंचो चढ़ रयो है। अैटम बम रै फूटता ई हिरोशिमा नै आपरी काळी छाया में ढांकतो ओ फोटू चार हजार मीटर दूरां सू खैंचियो हो। 1945 री छै अगस्त सुबह अैन आठ बज'र 15 मिनट पै अेक अमेरिका रै विमाण बम फैंकियो। बो सत्यानामो विमाण बम फैंकतां ई नटाटूट पाछै पगां भागियो। वो इसो तेज भागियो कै बम फूटै-फूटै जी रै पैलां 16 किलोमीटर भागनै दूर निकळ गयो।

बम जमीन सूं 570 मीटर ऊंचो आकाश में फूटियो। धरती पर पड़'र फूटबा सूं इतरो नास नी हो सकै क्यू कै बम में इतरी ताकत ही कै जमीन में धंस जावतो। जां मिनखां बम नै आकाश मे फूटतो देखियो वां बतायो कै बम फूटतां ई इसो लागियो जाणै परचंड सूरज धरती पै उतर रयो है। बम फूटियो जिण वेळा उणसूं गरमी निकळी, वा दो लाख सेंटीग्रेड ही। सौ सेंटीग्रेड गरमी में पाणी उकळबां लाग जावै। वा गरमी ही दो लाख। भूंगड़ा तिड़कै ज्यूं मिनख तिड़क गया। वो धूंवै रो बादळो, जिणनै आणविक बादळ कैवै, अड़ताळीस सेकिंड में तीन हजार मीटर ऊंचो चढियो। साढ़ी आठ मिनट में तो नौ हजार मीटर ऊपर चढ गयो। पंद्रह मिनट पछै इण बादळै मे सूं बरखा होण लागी। दो घंटा तांई बराबर कादो बरसतो रयो। रेडियो सक्रियता रा जो कण धूंवै रै सागै ऊपर परा गया हा उणां नै बरखा पाछा नीचै ले आई।

बम फूटबा रै 20 मिनट पछै नीचै जमीन पै लाय लागगी। लकड़ी रा भर मांसड़ां रा जंगळ भभक-भभक बळबा लाग गया। छोटा-मोटा सब घर भसम हो गया। भार्खं ई शहर में खाली छाईस घर अध-बळिया रैय गया। नदियां रा पुळ टूट गया। गाडी री पटड़ियां बांकी हुगी। गरमी इतरी हुई कै लोह कांई पत्थर पिघळ गया। हिरोशिमा लाय रा लपटां में समाय गयो। तीन दिनां तांई धूं-धूं बळतो रयो। हरियो-भरियो जंगळ भर शहर राख रो ढिगलो हो गयो।

(5)

इण कयामत में लोग-लुगाइयां, टाबर-टीकरां री दुरदसा हुई उणरी बात तो कैवण जोग ई कोयनीं। आंखियां देखियोड़ा हाल,बैठवाळा सुणाय रया हा। म्हारै में तो सुणबा री हीमत ई कोयनी ही, काळजो कांप-कांप जातो। लपटां भामै रै अड़ री ही, मिनख बरळाय रया, टाबर चरळाय रया, कुण किणरी सुणैं, कुण किणनैं बचावै मरिया-बळिया ! लपटां में भसम ! इण भयंकर कांड री याद सूं ईंज मिनख री चेतना परी जावै। 2 लाख 40 हजार लोग-लुगाई भर टाबर बरळावता थका जीवता बळ गया। 51 हजार बुरी तरह घायल हो गया। अेक लाख भासरै मामूली घायल हुया।

इण नरमेध में जळ नै मर गया वां तो सुख पायो। पण जांरी सांसां बाकी रैगी वै जीवती लासां 'पाणी पाणी' कर री ही, पण पाणी रै जबाब में काळ उणां नै लाय री लपटां में छानो कर देतो। डील रा गाभा बळ गया, डोल भूज गया, केस बळ गया, चामड़ी भोर हाडकिया बळनै लटक गया। भै नर कंकाळ चेतो भावतां ई करळावता—'पाणी-पाणी'। पाणी कठै ? पावा वाळो कुण ? भापणै पुराणां में जो रौरव नरक रो वर्णन कीधो वो इणरै भागै तुच्छ है। जो हाल तसबीरां में देखियो भर जो देखणवाळो रा मूंडा सूं कांनां सुणियो उणनैं लिखबा नै भर कैवा नै कोई लबज ई नी। म्यूजियम मैं देखतां मन दुख, गलानी भर अन्तर्दाह सूं बळबा लाग गयो। मन में रैय-रैय भो सवाल ऊठतो—मिनख इसो हत्यारो हो सकै है ? भै देख रया हां जो सांची तसबीरां है ? हे भगवान ! मिनख रै सार्थं भो बरताव कीधो ? मिनख ई इसो हो सकै तो पछै राखस, पिशाच, दैत्य इणमूं ज्यादा कांई हुवैला ?

(6)

हिरोशिमा रै सत्यानाश रो जापानियां रै दिल भर दिमाग पै घणो असर

पड़ियो। बठै रा साहित्यकारां रै माथै तो आज ई हिरोशिमा यूं हीज बळ रयो है अर राष्ट्रीय चेतनावाळा जापानियां रा काळजा मे तो आ होळी पीढ़ियां तांई सुलगती रैवैला।

अेक चितराम हो 'भूतां री सवारी—हिरोशिमा में लाय लागबा रै तुरन्त पछै री छिबी ही। धूंवै सूं काळा पड़ियोड़ा नर कंकाळां रो झुंड ज्यांरा कपड़ा बळ गया; नागा, चामड़ी फाटियोड़ी, गाभा ज्यूं लटकियोड़ी, हाथ मूंडा सूजियोड़ा, दुख सूं होस-हवास गायब, ज्यां मे मत सूझै न गत, विचळायोड़ा, ढंढा ज्यूं वीरान हुयोड़ी गळियां में बेमतलब भटक रया। उण वखत री असली हालत ही आ। अेक चित्र और हो। अेटम बम सूं निकळी बेहिसाब गरमी सूं लोग घबराय गया।

घायल 'पाणी-पाणी' कर रया। पाणी कठै? नळां री लैणां टूटगी। चारूं आडी नैं लाय लागरी। तिसिया मरतां कठ सूख रया। शरीर घावां सूं चिरीज रया। 'पाणी-पाणी' करता नदी साम्हां दौड़िया। दौड़णी वांसूं आय नीं रयो, सांस लेणी नीं आय रयो। उठता-पड़ता नदी रै किनारै जाय पाणी रै होठ लगायो। हा बठै रा बठै ठंडा पड़ गया। नदी रै किनारै लोथां रा ढिगला लाग गया। हिरोशिमा शहर रै मांयनै सात नदियां वैवै अर सातूं नदियां लोथां सूं भरगी।

सुबह रो वखत हो। टावर पढण नैं गया हा। अेक दिन पैलां हवाई हमले सूं टूटियोड़ा घरां में मदद सारू जाबा रो स्कूल रा टाबरां रो प्रोग्राम हो। मास्टरां रै सारै स्कूलां रा टाबर टोळा रा टोळा मदद सारू जाय रया हा। उणहीज वखत वो हत्यारो पापी बम पड़ियो। 'मां-मां' करता भोळा-भाळा मूंडा र' टाबर बठै रा बठै संभ गया। उण वेळा रो चितराम देखणी नीं आवै। आज ई हिरोशिमा री मांवां आधी रात रा 'सणण-सणण' करतै वायरै मे 'मां-मां' रोवता टाबरां रा हेला सुणै।

म्हारै सूं तो बै चितराम देखणी नी आया। आंखियां मीचनै बैठगी। चितरामां नै देख-देख हिरोशिमा री जापानी लुगायां रोय री ही। उणां रै मूंढागै उणां रा टावर यूं ही 'मां मां' करता, बळता-बरळवता मरिया हा। कितरा ई टावर बठै ऊभा-ऊभा आपरा मां-बाप नै याद कर रोय रया हा। हे भगवान्! वो नजारो याद आवै जद आज भी म्हारो काळजो थर-थर करवा लाग जावै।

(7)

इण विश्व सम्मेलन में संसार रा सारा ई देशां सूं प्रतिनिधि आया हा।

अमेरिका सूं ई पांच-सात सरदार आया हा । उणां में डा. पोलिंग ई हा ।

डॉ पोलिंग अमेरिका रा नामी रसायन शास्त्री है । आणविक अस्त्रां नैं काम मे लेबा पछै उणां री कोई-काई असर दुनिया माथै हुवै, इण विषय में डॉ पोलिंग घणी शोध कीधी है । इण ईज काम माथै आंनैं नोबल पुरस्कार मिलियो ।

डॉ. पोलिंग सम्मेलन में घणा जोरदार बोलिया । डा. पोलिंग रो भाषण सुण, सुणबावाळा रा कानां री खिड़कियां खुलगी । आगै दुनियां अंधारी दीखबा लागी । म्हारा रामजी ! आं मोटा देशां रा मोटा लीडरां नैं जे कुबुद्धि आयगी तो आ दुनियां, जिणनैं हजारां बरसां सूं मानवी सजावतो, सिणगारतो खप गयो है, अेक पळ में गारत हो जावेला ।

जापान रा लोगां इण अणुबम-विरोधी विश्व सम्मेलन रै मोकै पै बडो जबरदस्त शांति मार्च कीधो । दूर-दूर सूं मिनख पगां चालता, मार्च करता, हिरोशिमा तक आया । तावड़ै सूं छाया राखबा नै चारै रा गूंथियोड़ा मोटा-मोटा टोप माथै मेल राखिया हा । लांबी, खूब लांबी सवारी निकळी । सगळां सूं आगै तो पैदल मार्च करनैं आवणियां, उणांरै लारै विदेशां सूं आयोडा प्रतिनिधि; पाछै हिरोशिमा री अणपार जनता ।

भरी दुपैरी । कोई तीन बजियां रो तावड़ो तड़क रयो । सूरज कड़क रयो । सवारी चाली । म्हां लोगां रै आप-आपरा देशां रा झंडा हाथ में । पसीनो टपक रयो । गेलै रै दोई आडीनैं मिनख भरियो । थाळी फैंकै तो भांगणी नीं पड़ै । दुकानां री, घरां रै छतां मिनखां सूं लद री । छतां पर सूं आदमी-लुगायां फूलां री बरखा कर रया । रंगियोड़ा कागजां री करतण री पुष्प-वरखा करणै री बठै रीत है । ऊंची-ऊंची हवेलियां सूं कागज रा फीता नीचै म्हांपै लटकाय रया । फूलां सूं सड़क भरगी । माथा पै रंग-रंगीला कागज रा फीता लटक रया । टेलिविजन वाळा तसवीरां खैंचवा नै हेलीकाप्टर माथा पै भाय-भाय, उड-उड जाय रयो ।

यो उछाह भर स्वागत जापानियां उणां लोगां रो कीधो जो आणविक अस्त्र पै पाबंदी लगावा री आवाज उठाबा नै देश-विदेश सूं समंदर लांघ नैं आया—पैदल चालता, शान्ति मार्च करता, देश रा खूणा-खूणां सूं, टापू-टापू सूं अठै आया । यूं तो चाहू कानी हरख-उछाह नजर आय रयो हो, पण जनता पै जमनैं नजर नाखबावाळां नैं अतस में और ई बात दीखी । सड़क रै दोई कानी ऊभी लुगायां रा रुमाल आंसूड़ां सूं आला हा । यो मार्च देख उणां री आंखियां आगै चवदा बरसां पैलां रो नजारो छाय गयो । वानैं घर बीती

याद आय री ही। वांरा हिवड़ा हबूका लेबा लाग गया। वै आंसूड़ा पूछती जाय री ही, अर फीका-फीका मूंडां सूं मुळक नै शान्ति-सैनिकां रो स्वागत करती जाय री ही। उणां री अन्तर रो अन्दाजो लगाणो कोई कठण नीं हो। सगळी जापानी मावां री अेक आवाज ही—म्हांरा टाबरां री खैरियत सारू शान्ति री आवाज उठाओ।

मार्च कर नैं आवणियां अर परदेशां सूं आयोड़ा प्रतिनिधियां सारू उणां रा मन में घणो मान हो। मार्च करणियां नै रोक-रोक पाणी री गिलासां लुगायां झलाय री ही। मनैं तावड़ै मे बळमळाती देख अेक लुगाई आपरै माथै रो टोप उतार म्हारै माथै पै मेल दीधो; अेक जणी आप रो पंखो म्हारै हाथ में झलाय दीधो। मनैं कड़कड़ते तावड़ै में तपती अर पसीनै सूं लथपथ देख उणां नैं दुःख हो रयो हो यूरोप सूं आयोड़ा प्रतिनिधि तो तावड़ै सूं लाल बम्ब पड़ गया। उणां रा कान तो इसा राता हो गया कै जाणै अबार लोही टपक पड़ैला।

सवारा सूधी जूझारां री देवळी पै गई। अेटम बम सू मरियोड़ां री याद में काळे भाठै री समाधि बणायोड़ी है। सगळा जणां बठै जाय माथो झुकायो, ढोल पै ताल लागी। ताल रै सागै बैंड री धुन गगन गूंजाय दीधो—

Never again the Atom Bomb

कदैई नी, अबै अेटम-बम कदैई नीं।

सुर में सुर मिलाय लाखां कंठ गावा लागीया—

अेटम-बम कदैई नी, कदैई नी।

कदैई खाली बैठी रैऊं तो उण सांझ री वै गहरी भावनांवां याद आय जावै अर मैं वां मे गम जाऊं।

थोड़ी है कोरै थूल पर ग्रौर ग्रास्था उण री ग्राधी उधार पर, ग्राधी हुवा पर। दृष्टि उण री टेलीविजन रै काच पर जादा ग्रौर मानखै रै प्रेम पर कम। कान उण रा टेलीफोन पर घणा ग्रौर गरीब, ग्रसहाय रै दुखी सुर पर कम। ग्राखी चेतना उणरी ग्रनासक्त सेवा मे कोई तावभाव, ग्रौर प्रोपेगेंडा में बेहद। इण खातर ही तो ग्रेक वर्ग सार्थ, ग्रेक धर्म दूजै धर्म साथै, ग्रेक राष्ट्र दूजै राष्ट्र साथै, ग्रेक पार्टी दूजी पार्टी साथै, ग्रेक वाद (साहित्यिक हुवो चावै राजनीतिक) दूसरै वाद साथै सावळ सुखदाई सूं धिकणा ग्रौखा हुयग्या। धिकै है, मरता-डूबता, पण संसै री नाव रो कांई भरोसो, जठै ही थोडै-सै स्वार्थ रो मार वध्यो, खुद री रोटी नै सिकताव कम लाग्यो (Interest clash) तो सळू सटै मैंस मारतां ताळ ही कित्ती ? ग्रा समस्या गणित री नही, इण ग्रांधे जुग री ग्रर उण में जलम्यै ग्राखै मानखै री है। सै देखै, सै भोगै; माय रा मांय कूकै, कोसीस कम रोळो घणो ही करै। घणी दाया जापो बीगड़ो भलां ही, सुधरण नै कठै ?

जुग री वात चालगी जद कैणो पड़ै, जुग तो जुग ही है; जित्तो सरावो थोड़ो, *जित्तो थुथकारो नाखो कम; बस, कसर इत्ती ही है कै है ग्रांधो, बाकी चमत्कार* नै नमस्कार तो करणो ही पड़ै। सिनेमा में सागै वड़्या जित्ते तो घर वस्योड़ो, वारै नीकळ्यां पछै माड़ी-सी छूणगी, तलाक; घर इत्तो सांकड़ो हुयग्यो कै दोनूं दोरा-दोरा ही को मावै नी पण मौको पड़्यां भापण तो सह-ग्रस्तित्व रा छांटसी। टैम ही लैक्चर री है ग्रबार।

इण जुग में ग्रादमी जद चाद पर ग्रापरा गोरा, गंधहीण चरणारविंद राख दिया ग्रौर वठै बसण री वात करण लागग्यो तो ग्रा वात ग्रचम्भै री तो कांई ठा है क नहीं पण ग्राशंका री जरूर है। हूं सोचूं, जिको ग्रादमी ग्रठै निचळो को बस सकै नी बो चांद पर जावतो ही सूधो देवता वण जासी ग्रा कम ही जचै; कम काईं, डोळियो देखतां तो जचण नै जाग्यां ही कठै ? महल री वीडी पर वैठ्यो कागलो हंस हुयो ग्राज तांई तो किण ही को सुण्यो *नी, ग्रागै ठाकुरजी जाणैं। बठै पूगणग्राळां में हुसी तो कोई ग्रमरीकी सिरदार* हो, का कोई रूसो, का कोई ग्रंगरेज मावड़ी रो जायो ही। धरती पर, ग्रेक-दूजै नै देख्यां तो जिकां री ग्रांख्यां में लूण बरसै ग्रौर वठै पग धरता ही उणां रै नैणां में नेह री नदी ऊमड़ पड़सी, ग्रा कियां वणै ? बठै भी तो ग्रठली कमाई रा पुद्गळ ही काम करसी। ग्रमरीका ग्राप री वाड़ वधासी ग्रौर रूस ग्राप री। ग्रंगरेज रा बावनी पग तो इणां कामां में धरती पर नामी रैंयोड़ा है। वाड़ वधाणी सावळ तावै नीं ग्रायी तो दोनां में लड़ाई रा लाडू तो वांट

ही देसी । कैवरण रो मुतलब, बठै गयां पछै ऊगियोड़ा सोग ग्रौर वधसी ग्रौर बै ग्रापस मे ग्रळूभया बिना को रैवै नी । फेर का तो ऊपर फैंक्यै कांकरै-सा सैं पाछा ही नीचै, ग्रौर का सारै साथ रा राजीखुसी रा समचार ग्रावरण ही ग्रोखा, बठै ही पापो पाप समोसमा । राम करै इसी नहीं हुवै, बै समर्थ है तो जावै सुख वसै; पण बळै सिरकै ही कठै । फेर तो धरती री ग्राबादी री समस्या सुळझी ही पडी है । भगवान नै ग्रा ही माळा फेरो कै घणखरा समर्थ ग्रौर सोग ऊगियोडा चांद पर जावै परा ग्रौर गरीब सपूतां री जवानी मुक्त हुय'र सोरा सांस लेवै ।

(2)

सह-ग्रस्तित्व सूं म्हारो मुतलब ग्रेक पर-धरमो जात दूसरी सागै, ग्रेक काळो, ग्रेक गोरै सागै, ग्रेक ग्रादिवासी ग्रेक नूंवै सागै, ग्रेक साम्यवादी ग्रेक गैर-साम्यवादी सागै सावळ वास कर माण सूं ग्रेक-सैं हक-हकूकां री छाया में वसै, खांधै सूं खांधो मिला'र चाल सकै । सोचण री वात है कै धरती पर ग्रायोड़ा ग्रादमी धरती छोड़'र कठै जावै । कूवो-खाड करै का फांसी खा'र मरै ? धरती पर रैवण नै दो पावडा जागा चारै का नी ? ग्रौर वा सोरै सास कोई देवणो को चावै नी, सह-ग्रस्तित्व रा कोरा प्रस्ताव पास करयां तो की वटै नही ।

लका संसार रै नकसै मे ग्रंगूठी टिकै जित्तो देश है, बो ग्रायै दिन भारतीयां नै गोंदाम सूं विकी री बोरया निकाळै ज्यो निकाळ दै । बोरया तो बापड़ी निर्जीव है, ग्रठै तो सजीव रो हाल ही बेहाल है । बर्मी काल ताईं ग्रापणै घर रो ही ग्रेक सूबो हो, ग्राज उण भारतीयां नै, कोई हरचै खेत सूं गधां नै काढै जियां, काढ दिया । धन-माल जबत, बो पड़यो रस्तो, कूकीजै जित्तो कूको कठै ही । किसीक बात है ! जर्मनी यहूदियां नै ग्रर ग्रंगरेजा दक्षिणी ग्रफीका मे इसी राफड़लीला घाली कै जाणं धरती माथै गोरा काळां रा गांव ही न्यारा बसता हुवै । कबीर रै शब्दां मे* जाणै गोरां रै ग्रावण रो रस्तो ही न्यारो हुवै । काळां री खाल वासती हुवै ग्रर गोरा कोई सोनै री मीगणी करता हुवै ! नीग्रो ग्रमरीकन नै ऊमां ही को सुवावै नी, ग्रा नी वै कठै ही छिपा पड़गी ग्रौर कोढ लागग्यो तो किसं क हुसी ? ग्रायी तो ही छाछ नै वरणी धिरियाणी ! इंगलैण्ड री रक्षा खातर लड़ो, कटो, मरो हिन्दुस्तानी,

---

* जे बाह्मण तू बांमणी जाया, ग्रान बाट काहे नहिं ग्राया ।
जे तुरक तू तुरकनी जाया, भीतर खतना क्यू न कराया ॥

मौज लूटो अर मजा करो अंगरेज ! खावरा नें सूर कूटीजरा नें पाडा ! जोर धींगाणो और सोषापणो किसोक ? ससार रैं इतिहास में कठै मिलै इसो अनूठो उदाहरण ? ओ सह्-अस्तित्व कित्ता दिन निमैं ।

पैलां दुवै जिकै री गाय, गाय हुवो भलां ही किण री ही । अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमरीका, जठैई पोल लाधी, धंस बैठ्या । अंगरेज उणां रा दूजा भाईवन्ध । बठै रैं मूळवास्यां नैं कूट-पीट'र काढ दिया, रैंवण दिया तो डांगरां सूं ही माड़ा कर परोट्या ग्रौर अजै उण सागण ही लाठी सूं वियांई चरावै जाणैं बै सं अंग्रेज री भेड़ां हुवै । ऊन कतरता जुग वीतग्या, तोई थाप को आई नी । नागाई थारो ही आसरो । संयुक्त-राष्ट्र-सघ, विश्व-स्वास्थ्य-कल्याण-संस्था जिसी दीखत री फूटरी संस्थावा खोल लांबी-चोडी वातां छमकै, नांखां रुपियां रो परसाद प्रोपेगेंडा री प्रतिमा रैं भोग लगावैं । विश्व-धर्म सम्मेलन, नाटो, सीटो ग्रौर कुण जाणैं कित्ता-कित्ता कुड़का रचैं । सह-अस्तित्व ग्रौर लारैं रैंयोड़ा लोगां नैं स्वास्थ ग्रौर सबळ बणावण रा बिल पास करैं, घोषणापत्र त्यार करैं, मिशन भेजैं, मुलकां नैं ढकण नें भुगला-टोपी बांटै ग्रौर घर में भूवाजी मा रैं जायी जिसो फिरै । सद्-विचार रो डोरो ही ढोल पर हुवै किसी पोल पड़ी है । बैठा-बैठा होळै-सीक नीचलो वासण इसो वंगो खिसकावैं कै मरैं जिका तो मरैं, धम्मीड़ ग्रौर बोलैं । पछै उणां नैं लोग-दिखावैं रा होळै-सीक बुचकारैं न्यारा ही— क्यो, लागी तो को नी ? आप चूसैं आंतड़्या तांई, पण दूजां नैं समझावैं 'दया पाळो' । आ राजनीति है, साच ग्रौर स्नेह रैं तूळी लगावो । कागजी काम पक्को हुवणो चायीजै, जमानै री मांग है, साचो जुग आ ही चावै । जमानो आंधो, हवा बोळी, जोड़ी मिली रे जोगियां ! मांगो'र खावो ।

पाकिस्तान काल तांई मिनख री पूंछ-सो कठै ही को दीखतो हो नी । आज भारत मे उण भारत रा वाड़ा कर'र प्रजा सागण पण धजा नूंवी धारण कर लो । सागैं रैंवतां पीढ्यां गळगी; काका, बाबा, केय-केय'र कित्तीं सदियां गुजार दी, अबार इसा कांई खुर वधग्या हा कै साथैं उठणो-वैसणो मुसकल हुयग्यो । धरम खतरैं मे है, सह्-अस्तित्व को निमैं नी—अै आग-लगाऊ सुर कठै सूं निकळ्या, जिकां करोड़ूं मिनखां री समझ री ढिगली मे चिणग नाख दी ग्रौर आप आग सूं परियां तमासो देखण नें दूर जा बैठ्या । संकीर्णता इयांई कम को ही नी, धरम रैं नाव पर ग्रौर सांकड़ी हुयगी, नही, कर दी । कोई बात नी, थारो अस्तित्व रैंवणो चाहीजै, पण अंकर कोई पूछै तो सरी उणां नें कै अबै सोरा हो का पैलां हा ? दो जुगां सूं घणा हुयग्या,

आजादी री मोटियार जवान लुगाई अर्ज चुणाव रै टाबर रो मूंडो को देख्यो नी, थे वात करो सोराई री ! चालो, वाड़िया मिलग्या, पण उणां सूं धाप कठै ? भलै वधाऊ चावै, लड़ परा'र, कूक परा'र—जियां हो तावैं आवै। गुड़ दे नहीं तो छोरी हुय जासूं— आ कित्ताक दिन निभै ? काचर रा बीज जागां-जागा लुक्या ऊभा थापी देवै, कान में समभावै कै ग्रस्त्र-शस्त्र म्हे देसां, लाय लगावण रो सगळो सामान म्हारै कनै है, पइसो ही को लेवां नीं। गूंगा रे गूंगा ! गांव मत वाळी, भलो चेतायो। बस, गूंगसांड नै इत्तो ही चायीजै। म्हारी एक फूटै तो फूटो भलां ही, सामलै री दोनूं नहो रैवणी चाहीजै। रोटी, कपड़ो और रैवण नै जागां, इणां री चिंता नहीं, शस्त्र पाती भेळा करो; नकद, उधार और माग'र किया ही। इसी समभ्ह सोधी ही को लाधै नी।

आयै दिन भारतीयां नै ही नहीं, ग्रेशियावासियां नै भी कोई-न-कोई कर-चूण में देय'र काढ दे, कोई की करै तो करो देखां। समभावै बो पद्दू और पड़ै। मोडा घणा और मठो सांकड़ी। आगला ही पोचीजै, तोई सरकारी बापड़ी बसावै ही। पण समस्या द्रोपदी रै चीर सी सावटीजै ही नहीं। निप्सा री लाय समभ्ह री बाड़ में लाग्यां पछै लारै ऊबरै ग्रणसमभ्ह री राख, बा नागाई री पून मे मलां ही धाप'र उडावो। वातां धरम-करम री। इण सूं काई ? लाभ तो भाव मे है और बो घर में ही वीगड़ग्यो। पल्लून कैवै, स्वतंत्र हुयग्या, ग्रबै म्हानै ही म्हारी पून मे सोरो सांस लेवण दो। आ सुणै जद भाईजी चमकै। वाड़ियां में मळै वाड़िया। इण में ग्रचूम्भै री कांई वात ? ग्रै तो हुसी ही, नींव ही इसी लागियोड़ी है। फिटोळां रै कैवणै सूं ग्रेकर बंगाल (पूर्वी) नै ही मसाणियो वैराग ऊपड़्यो, मजब रा भगवां पैर'र बाबोजी वण बैठ्यो। आपरो घर बळण लागियो जद चेतो हुयो, पूर फूंक्या। ठंडै माथै सूं सोच्या ही लारो को छूट्यो नीं, चौईस-पच्चीस सालां रो खायो-पीयो सो निकळग्यो। निकळग्यो जिको तो नीकळग्यो, घरम्राळो और उजाड़ बैठ्यो। समभ्है तो है लोग पण कूट खाया पछै।

चीण कूटै तिब्बतिया नै, उणां रै ही देश में। हजारूं ही आयआयनै हिंदुस्तान में वसग्या। आ ही कोई बात हुयी ? लंका, बर्मा, कांगो, केनिया, युगांडा, स्पेन, पुर्तगाल सगळा नै हिंदुस्तान सोनै री चिड़ी दीसै, पाख्यां खुसगी तोई लारो को छोडै नी। पण दूजां नै दोष ही कांई देवां, घरम्राळा ही को समभ्है नी; सिखस्तान, जाटस्तान कांई ठा कांई-कांई तान छेड़ै। ग्रासाम ग्रेक रा तीन हुयग्या, पंजाब ग्रेक रा दो, ग्रांध्र सवाल करण नै त्यार। प्रांतां रै पूत जलमै। वडो तमासो है, नीवड़सी तो कुण जाणै किसाक ? ईसाइयां और

विदेशी कूटनीतिज्ञां मुफत रो जैर देवण री दुकानां न्यारी-न्यारी खोल राखी है; सह-अस्तित्व नैं बेमार करण खातर। तान लांबी, समझ सांकड़ी। देखां, कियां ताबै आवै।

आस्ट्रेलिया में सिवा अंगरेजां रै कोई वस ही को सकै नी, जाणै उण नैं किणी अंगरेजणी ही जण्यो हुवै। सह-अस्तित्व रै अस्तित्व में विजोकलो करण रो उळटो पाठ छेकड़ चाल्यो कठै सूं ? घणाखरो पश्चिम रै साम्राज्यवादी देशां सूं। उपनिवेशवादी देशां रो इळूझो इसो घालियोड़ो है कै जल्दी-सीक सुळझै जद फेर घाल्यो ही कांई ? कोरिया दो, वियतनाम दो, भारत दो-तीन, जर्मनी दो और अठै ताई कै बर्लिन दो। वसावणो ताबै नहीं आवै तो विचाळै भीत घाल'र ही सही। विगाड़णो जिकै रो कांई नाव ? दळिया रा गुठला और वीं ताबै नीं आवै तो धान रो सवाद तो विगाड़ ही दै। फूट घालो और राज करो—ओ मोटो और मूळ मंत्र अंगरेजां धरती नैं विशेष रूप सूं दियो। उणां रो गुण कियां भूलीजै ? पूजा हुवणी चाईजै उणां री तो। ताबै नहीं आवै बा बात न्यारी है। 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्' री राग करणिया तो अकल-बायरा अंबोड़िया हा। वै धरती रै वैभव नैं समझै ही कांई हा ? उण रो तो इतिहास ही बदळ दियो। घर रा राख्या न घाट रा। इण खातर ही इणां रै राज में कदेई सूरज को छिप्यो नी पण लूंकी री चाल नै लरयां पछै ताळ कितीक लागी ? सूरज देवता छिपतो ही दीस्यो। वायोड़ा तो काटणा ही पड़ै, मोड़ा-वैगा कदै-न-कदै।

(3)

आपरी भाषा री माग इसी पायी कै लोगां धरआळी ठंडाई री उळटी करणी सरू कर दी। जुगां सूं दसूं-वीसूं भाषावां जिकै उपमहाद्वीप मे तीजणी-सी फूटरी सह-अस्तित्व री आस्था रो इमरत पी'र हंसती-मुळकती ही, अंगरेजो अेकली उण रो सागै बसणो मुसकल कर दियो। गधै रो पूंछ पकड़ायो तो इसो कै मूंढै पर लातां कित्ती ही पड़ो, सोरै सांस छोडां जद झाल्यो ही कांई ? आप रै स्वार्थ खातर आदमी रो 'स्व' कित्तो सांकड़ो हुवै। 'स्व' जित्तो ही संकीर्ण, सह-अस्तित्व नैं बित्तो ही डर। 'स्व' रो विस्तार सह-अस्तित्व रो आधार। हूं कैऊं जिको साच, म्हारी पार्टी सोचै जिको ठीक—बस अै विचार ही पनपणा चाईजै, बाकी नहीं। सह-अस्तित्व नैं फेर आसरो कठै ? अबार आ ही अवस्था नागी हुय'र धरती पर नाच घालै; देखा, किया पार पड़ै ? दवाई जद ताई उलटी, बेमारी वधसी ही।

तो, धरती छेकड़ चावै कांई ? विविध वर्गां रो सह-अस्तित्व, उणां रो

सागै विकास-वैभव, श्रौर साची पूछो तो इण चाव श्रौर सदभाव सूं ही उण विधाता-बागवान ग्रापरी कळा रो विस्तार करयो है श्रो 'विश्व-बन'। पण जद सगळां सूं स्याणो, समझदार मिनख-विरवो ग्राप जिसै वगं सार्थं को रैय सकै नी, उण वेळा ग्राह श्रौर उसासां री पून इण बाग सूं श्रेक दुरगंध लेय'र ऊपर उठती सरमावै, बाग री सार्थकता इण में कठै ? मिनख रो मोल ही दूजां नैं सुख पूगावण मे है, ग्राप रो पेट तो कागला-कुत्ता ही भरै है। The glory of human life is to serve others and not to be served—साव जचती है। कोसीस तो श्रा हुवणी चायीजै के देवता मिनख री धरती पर उतरण नै मूंडो धोवे, श्रौर हुवै श्रा है के मिनखां नैं देख'र डागरा ई चमकै। फेर नो वाजो कियां पार पड़े ? 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'—धरती सूं मिनख रै इसै पारमार्थिक प्रयास री श्रेक दिव्य गंध जद-जद उठ'र ग्रनंत में फैलै जणां ही सह-ग्रस्तित्व री बाजरी रै मानवी वैभव रा सिट्टा नीकळै; गंधवती धरा रो ग्रर्थ फेर ही समझ में ग्रावै श्रौर फेर हो हुवै मिनख रो मोल।

साहित्यकारां रो तीरथ : गोरकी रो घर

रामनाथ व्यास 'परिकर'

मैक्सिम गोरकी रो नांव संसार रा मोटा साहित्यकारां में सिरै गिणीजै। म्हे म्हांरी जिग्यासा नैं पूरी करण सारू गोरकी-विश्वसाहित्य-संस्थान में उणां री पोती सूं मिलण नै गया। म्हारा गुजराती भायला श्री अतुल सवानी सागै हा। सोवियत्स्काया कल्तूरा (सोवियत संस्कृति) समाचार-पत्र री सवाददाता कुमारी लेविना इण प्रायोजन री सगळी व्यवस्था करी।

मैक्सिम गोरकी रै नांव जिसो ऊंचो अर ओपतो उण रो घर रूस रै सगळा सूं वडै रईस रो महल हो। घर में बडतां ही मैक्सिम गोरकी रै बेटै री बहू नदाज्दा मैक्सिम पेश्कोवा अर गोरकी री पोती घणै आदर सूं म्हां लोगां री अगवाणी करी। पूरो घर अेक स्मारक रो रूप है, जिण री देखमाळ अेक संग्रहालय रै रूप में करीजै।

मांय बडतां ही घर रै आंगणै में खुलता दो हाल (बडा कमरा) है, अेक में गोरकी रो साधना-स्थळ अर दूजै में उण रो निजी पुस्तकालय है। गोरकी री साधना अेक मोटी अर ऊंची मेज मार्थे हुती, कारण वै अेक फेफड़े रा मिनख हा अर राजयक्ष्मा रा रोगी हा। उणां रै छव फुटै कद रै माफक जमी सूं तीन फुट ऊंची कुरसी मार्थे सीधै बैठण री डाक्टरी सलाह मुजब आ रचना ही। मेज री कोई खास साज-सजावट नही ही, अेक कलम राखण री लकडी री ट्रे, दो पैड पानां रा, अेक दो खणां को दवातदान, रंगविरंगी पेन्सलां राखण खातर लकड़ी मार्थे लाख रै काम री गिलास बस आ ही ऊंची मेज री सामग्री ही। मेज रै डावै हाथ मार्थे कई पोथियां अर नोट हा अर अेक ट्रे राखियोडी ही।

मेज रै नीचै अेक मोटी टोकरी रद्दी मारू ही। कुरसी रै लारै अेक लाबी काच री अलमारी मे किताबा री कतारां लागियोडी ही। डावै हाथ पासी अेक घणी मोटी काच री खिड़की बाग में झाकती ही, जिण मार्थे पड़दो नी हो। कमरै रै दो दरवाजां मांय सूं दूजो रैवण रै कमरै मे खुलै। जीवणै हाथ पासी मोटी आठ-फुटी कपड़ा राखण री काच री अलमारी में

गोरकी रो ओवरकोट ओर कपड़ा अेक एक-फुटें तकड़े फौजों री पौसाक जिसा हा। अलमारी में नीचें अेक जोड़ो ऊंचा बूंट राखियोड़ा हा और गूंटियां माथै फैल्ट री नाइट-कैप ओर रेसवायू रें जिसा दो टोप हा। खूणें मे अेक ऊंची बेंत ही। सामलें पासो अलमारी मे गोरकी नै भेंट में मिली सामग्री में हिंदुस्तानी मूर्तियां ओर पीतळ री कला रा फूलदान हा। इणां रें अलावा हाथी दांत, चमड़ो, रेसम, लकड़ी, चांदी, सीप आदि री अनेक फठरी चीजां राखियोड़ी ही जिकी चीएा, फांस, जर्मनी, इटली, अमरीका, ब्रिटेन, यूनान ओर जापान देशां री ही। सोवएा रो कमरो ओर रेंवएा रो कमरो अेक हा हो, कारएा लिखतां-लिखतां थाकेलो आवतां ही सारखो आराम-कुरसी ओर छोटी मेज-कुरसी माथै उणां नै नींद लेंवएा अर फेरें उठनें लिखएा री आदत ही। कमरें मे अेक आठ-फुटो पलंग हो जिको सादो ओर सफेद ऊनी-सूती चादरां सूं ढकियोड़ो। सेज रें सिराणें कनें छोटी-सीक मेज माथै गोरकी रें पुत्र मैक्सिम री तसवीर ही। आ बात नैणां में जळ भरतां उणां री जोड़ायत म्हानें विशेष रूप सूं बतायी।

गोरकी आखरी बरसां में नीचली मंजल माथै रेंवता, कारएा खून रो दौरें ओर दमें री शिकायत हुवएा सूं ऊपरली मंजल माथै जावएो मना हुयग्यो हो। वातां-ही-वातां में नदाज्दा पेश्कोवा म्हांनै बतायो कै गोरकी दिन भर लोगां सूं मिलती वखत कारखानां, गांवां, खेतां मे आप रा नोट ले लिया करता ओर लिखएा री वखत सगळा नोट मेज माथै राखनें लिखता जावता। कणीं-कणीं नोटां माथै लाल-लीला सैंनाएा करता, ओर लिखाई रो काम पूरो हुता ही सगळा नोट रद्दी री टोकरी में भर देता, ओर अदीतवार नैं बारें बाग रै बेंचूबीच, उणां री होळी जगावता। सगळा टाबरां नै ओर दोस्तां नै बुलावता ओर सेवां रा पत्तां सागै मोटी कैंपफायर-सी लगावता ओर ठट्ठा-मसकरी करता। बगीचै में सेवा रा पौधां री संभाळ बैं खुद करता। आप री कुहाड़ी सूं नजीक रा जंगळां मे ईंधन काटएा रो शौक उणां नैं घणो हो। बर्फ रा खेल खेलता ओर घूमता रेंवता।

आंगएा रें पार नीचै री मंजल में गोरकी रो निजू पुस्तकालय हो, जिएा में च्यारूमेर भींत री जागां काच री अलमारियां पोथियां सूं अटी-टटी ही। बीच में अंडाकार आबनूस रो मोटी मेज ही जिएा रें च्यारूंमेर सोवएाी कुरसियां ही। अठै री घणकरी पोथियां माथै गोरकी रें हाथ रा सैनाएा ओर किनारें रा हाशियां माथै टीपां लिखियोड़ी मिलें। घणी खुशी री बात आ है कै इणां पोथियां री टीपां माथै गोरकी रें दिमाग ओर चिंतन री शोध लारता

बीस बरसां सूं बरोबर हुय रही है' भारत रा रवीन्द्रनाथ ठाकुर और गांधीजी बाबत कंई टीपां इणां री कलम सूं लिखियोड़ी मिलै जिणां माथै शोधप्रबन्ध उणां दिनां गोरकी-विश्व-साहित्य-संस्थान रा विद्वान त्यार करता हा। इण रै अलावा भारत-सम्बन्धी, कई दूजी भाषावां रा ग्रंथ उठै हा जिणां में रोम्यां रोला री पुस्तक 'महात्मा गांधी' री मूळ प्रति और स्वामी विवेकानंद री जीवणकथा, जिकी गोरकी नै भेंट में मिली ही, म्हांनै दिखायीजी। शोध रो दूजो विषय देश-विदेश में हजारां साहित्यकारां, राजनेतावां अर कलाकारां सूं हुयोड़ो गोरकी रो पत्रव्यवहार है। इण विषय मे रूसी, अंग्रेजी और दूजी भाषावां में गोरकी रा पत्र छप चुका है। लेनिन रै सागै गोरकी रो दोस्तानो हो। ओ पत्र व्यवहार भी गोरकी साहित्य रो अेक प्रमुख अंग है।

आंगण सूं ऊपर जावण रो रस्तो रूस री भवन-निर्माण-कळा रो जीवतो-जागतो चितराम है। भवन रो मालक रूस रो मोटो रईस हो जिकै इटली रा कारीगरां सूं पणोथियां री नाळ और हाथ धरण रो लैंरदार सायरो, वणवाया हा। हरयै रंग रै मकराणै में रंगबिरंगी धारियां री समुद्री लैंर रो ओ कट-कड़ो म्हारै जीवण जोयीड़ी अदभुत कळानिधि ही। आजकाल इण नाळ नै काम में नहीं लायीजै, जिण सूं बारलै पासी लोह री नाळ मायंकर म्हे ऊपरली मंजल में गया, जठै खाणै री मेज म्हारै स्वागत में सजी-सजायी त्यार ही। भांत-भांत रा पदारथां में रूस री चैरी, सेवां और फळां रा मुरब्बा, चटणियां, अर मीठी-नमकीन डबल-रोटियां, गोरकी री मनभावण, म्हारी भी भावण वणगी ही। 'समोवर' में राखियोड़ी चाय और मनभावता फळां रा रस पाणी री ठौड़। दही, दूध, माम्वण, पनीर, सूका मेवा, सैंत, साप री छतरिया, आलू री पापड़ियां और कासा (दळियो) भारतीय मैंमाना रो विशेष भोजन पैली सूं ही त्यार हो।

ऊपरली मंजल में अेक बडो कमरो साहित्यकारा रै चितरामां सूं च्यारू-मेर सजियोडो हो। भारत रा प्रेमचंदजी रो साधारण-सो फोटू बताबता श्रीमती पेश्कोवा म्हांनै कंयो कै अमृतरायजी वादो तो करियो पण आ सौगात भेजी। प्रेमचन्द रो सोवियत-संघ में विशेष सनमान है,—कारण वै जन-समस्यावां रा लेखक और जनवादी द्रष्टा गिणीजिया है। चतुर्वेदीजी इण बात रो कौल करियो कै चोखै कैनवास माथै रंगीन चित्र संग्रहालय खातर अमृतरायजी नै कंयनै भिजवासी। जनवादी साहित्यकारां मे तमिळ और तेलगू रा सोवियत क्रांति रा दिनां में छपियोड़ा ट्रैक्ट और पुस्तिकावां अठै घणा सभाळनै राखियोड़ा है। हरेक मुलक री पोथियां, जिकी गोरकी रै हाथा मायकर निकळी और जिणा रा अनुवाद गोरकी करवाया, अठै सार-संभाळ सू राखियोड़ी है।

सीख री वग्वत गोरकी वश री इणां लाम्बीणी लुगायां रै सागै म्हां गोरकी रै साहित्यकार नै सीस नवायो।

राजस्थानी काव्य :
ग्रेक निरख ग्रेक परख

कृष्णगोपाल कल्ला

समय पारखी री परख घणी करडी । इण मूप में जबरी बिसेसता या कै भो सार सार नै गहै, थोथै नै पण नीं झालै 'ग्रर फटकै देय उड़ाय ।' मिनख पारखी घणखरी बातां सूं सही निर्णय नीं दे सकै । बो ठहर्‌यो संसारी जीव, ग्रर ग्रापसदारी निभायां बिना जीणो मुसकल । पण समै किण रो संगाती । बो किणी नै पण नी बगसै ।

राजस्थानी काव्य में ग्राखर बो काई है, जो इण समै सूप में टिकसी ? इण रो बेरो पाड़ां, इण पैली जे राजस्थानी काव्य री चीरफाड़ करां तो की बात बणै । बियां चीरफाड़ सूं जीव मरै, सुंदरता बिनसै । पण जाणकारी खातर ग्रो जरूरी है । राजस्थानी काव्य रा दो पख : बिचार ग्रर उण री ग्रभिव्यक्ति रो माध्यम । ग्रभिव्यक्ति रो माध्यम बा भाषा, जिकी डिंगळ रै गोद बैठी, या उण री नान्ही लाडो । डावड़ यां जुड़वां ही । ग्रेक उमर ग्रर ग्रेकसै डील डोळ री । मां री दो ग्रांख्या सिरखी । दोन्यूं पळी पोसीजी । हरिरस में गंगा-न्हाण करण रै पैली बा बरोबर धन दड़बो दोन्यूं डीकर्‌या नै बांटयो । की भिसी सौंज ही, जिकी पर दोनुवां रो बरोबर रो धणियाप रयो । ग्रेक सलूणी रै ग्रागै परणीजी, ग्रेक परजंवाई पीव पाय पी'रै डटी । बा बारै निकळी तो ध्यान बढ़्‌यो । ग्रा ग्रजै बूल्या सूं उळझी, गणगोरया गाती, ईसर रिझाती-रमाती, टाबरी ई रंगी । घणा लाड लडायां टाबर बिगड़ै, घणा हेत जतायां भाषा । मुग्धा री बयसन्धि री ग्रेक सींव, उण रीझ-खीझ री की पुळ पड़ियां । घर ढाबण खातर कीं तो ग्रक्कल चाईजै । कोरै सरूप नै कोई कद ताणी निरखै । चाम नीं, काम ब्हालो री जगत पण साची । गुजराती री चटकच्यूनणी खिली, राजस्थानी ग्रजै खिड़या गावै, सिझारो करै, टाबरी-सी बिरम्यां गोवै-जोवै ।

राजस्थानी रै ग्रभिव्यक्ति पख नै देखां तो पावांला कै उण में बैणसगाई समदर रै सूख्यां बच्यो कादो-कीच मोकळो । ग्रनुप्रास री रुणझुण घणी ।

उण वैणसगाई रै मांय, चितण रो ग्रथाह हिलोळा लेता समदर नै बांधण रो प्रम हो। उण रै सूख्यां इण ग्रनुप्रास री वेकळू रेत मे वा सुरसती रमगी-गमगी। मन रो हिरण्यो ग्रजै मरीचका में उण समदर रो भ्रम करै, छोळां लेवै, तड़फा खावै, प्राण गमावै। ग्रा वरण-मैत्री घणी मंहगी पड़ै। जापानी छोर्‌यां रा पग, लोहै रै कसणै मे कसकै जियां छोटा नान्हा राख्या जावै, उणी तरियां राजस्थानी सरस्वती रा काव्य-पद ग्रा वरणमैत्री बांधे। 'बयण सगाई बांधियां पेलीजै' री उगत साव झूठी। राजस्थानी रै मरण रो मोटो कारण यो ई हुयो। पण ग्रजै तक मरण रपट में लोग ग्रैडी-बैडी बातां बकै। ग्राज री राजस्थानी जो बाजणा ग्राखरां रा बिछुवा बांवै, घूघरा घमकावै, चालता काव्य रा मावकां नै चैकावै-वैकावै, ग्रर साच पूछो तो घणो ग्रनरथ करै। ग्रो ग्राखरां रो ग्रन्तरमेळ कवि नै की ऊंची चीज फुरणै सूं रोकै। काव्य ग्रर कळा रा मूळ सुर यूनानी मूरतां ग्रर प्लाटो सुकरात रो बिचारेणां नै परख्यां निजर ग्रावै। उण मे जिण उदात्त ग्रर निरावरण निरलकरण काव्यश्री री बात है, बा घणी ऊंची। 'सूघे पाव न घरि परत सोभा ही के भार' या बाणी साची। शिव ग्रर सत्य तो सहजां सुन्दर हुवै। बिचार या कथा में काव्यतत्व हुयां, उण नै गैणां गाठां रो दरकार नी पड़ै। सोनै सूं पीळीजी सेठाण्यां कानी ग्रांख्यां रसिकां री क्यूं नी उठै? कालिदास करणफूल री जागां सिरस शकुन्तला नै क्यूं पैरावै? सिनेमा रा लोग गांवडै रा कथानकां कानी क्यूं दौड़ै? ग्रेक ई कारण है कै ऊंचो कळा ग्रभिव्यक्ति ग्रकृत्रिम चावै। मोनालिजा रा होठां री मुळक लिजटेलर सूं इधकी सोहणी लागै? यो क्यूंकर होवै? स्यात ग्रै सै ग्रावरण सूं रहित हुवै, इणा पर ऊपर सूं पोती-थथेड़ी कळा री लिपस्टिक नी हुवै। यो ई कारण निजर ग्रावै।

पद्य ग्रर गद्य री ग्रभिव्यक्ति में कांई फरक हुवै? पद्य कठै गद्य रो कोरो दूराम्वय तो कोनी? तो के गद्य पद्य रो ग्रातरो छन्द ग्रर व्याकरण सूं हुवै? गद्य री व्याकरण पद्य री व्याकरण मे कांई फरक हुवै? कारक, क्रियापद-हीण गद्य पद्य क्यूंकर गिणीजै? गद्यगीत कियां गीत कहीजै? पद्य में मांडयां क्यूं बैद्यक रा नुसखा भरम पैदा करै? तुकांत गद्य या चम्पू री बात भी उळझावै। बचनिका नै कांई गिणा? नाटकां-ख्यातां रा बोल संसै पैदा करै। बोलणै री लैकारी ग्रर चारण बचना चातुरी या कांणी रो मडाण बाघतो बारैठ बड़वो, कठै गद्य बोलै ग्रर कठै पद्य मे दूहो देवै, सोरठो समोवै? कानां, बचना, ग्रांख्या ग्रर हियै रो विभेद की दमखम राखै। दश्य काव्य ग्रर श्रव्य काव्य में घणो फरक कोनी। मैं कैवणो चावूंलो कै दश्य कोरो नाटक ई कोनी। उण मे लिखी ग्रोळी नै भी गिणो, क्यूंकै उण नै मांडयां पढ़ै ग्रर

देख्यां पछै ई काल्पनिक चितराम उपटै जद बचन फुरीजै, तो कोरा कानां पर कठै भरोसो हुवै ? मुगणियो मुखभगिमा देख्यो चावै । रेडियो सूं कठै मन तिरपत हुवै, बो टेलीविजन मांगै । ऊंची सूं ऊंची बिम्ब प्रतिबिंबित करती कमेंट्री कीं पण छोड़ देवै, जो मांख्यां देख्यी चावै । 'मांख्यां देखो परसरामजी कदै न भूठी होय'री बात सिरै । बज्जर पै बोरतै दुसमीं नै जद बाबूड़ा सुणै, तो बोलणै री निरमळाई मूंडै पर नी झलकै । की बात है जिणरो पूरो बेरो नीं पड़ग्यो । रूप, धथ्य अळगा-अळगा भावै तो मिनख या तो सूरदास बणै या बापड़ो गूंगो बोळो बणै । अभिव्यक्ति रो माध्यम इणी सूं दोनूं बात नै साणै चावै । नाटक री सफळता रो कीं कारण ओ ई लागै लखावै । तो काव्य गद्य पद्य रै भेद सूं नी परख्यो जा सकै, उण नै उण रै प्रभाव सूं परखणो चाईजै । जद नेहरूजी भाखड़े पर बोलता उण बांध में मिंदर देवरै रा दरसण करणै री बात करै तो उण नै गद्य गिण्यां इन्याव हुवै । लिकन गेटिसबर्ग में तीन मिनट बोलै बो गद्य को गिणीज सकै नीं । पूरणसिंह रा तीन निबंधां नै तीन खण्डकाव्य गिणां तो पार पड़ै । उण में गद्य रो ढोल है पण आतमा तो काव्य री ई निजर यावै । राजस्थानी री बचनिका, भावां रै उतार-चढ़ाव पर हिलोळा खाती, काव्य सिरखो लागै । उण नै गद्य नी कह सकां । बात कीं साफ हुई कै गद्य रो फरक छन्द-व्याकरण सूं नीं हुवै, उण में कथ्य री आत्मा ई उणां नै अळगा करै । आ काव्य री आतमा काई हुवै ? काई इण नै कल्पना गिणां ? पण कोरी कल्पना तो शेखचिल्ली सा सोकोट पड़ै-ढ़ावै । तो इण नै बिम्ब गिणां ? पण बिम्ब तो इण कल्पना सूं बणै-मिटै ? उगत री विचित्रता गिणां ? पण कैणी रो बेढ़ब ढ़ब तो खेचळ सूं भी हुय जावै, फेर कवि नै बिरमाजी जिस्यो मानणो नी संभवै ? इण आतमा नै, बीजा देशां रा बासी महत अर उदात्त कैवै । अर ओ उदात्त किण में बसै-बिरमै ? उदात्त कथण रै कथ्य में, सत्य मे हुय सकै । उदात्त भावना अर अनुभूति मे हुय सकै । उदात्त उण वायवी तत्व नै कय सका जिको मन रै आभै में इन्द्रधनुष ताणै । ओ इन्द्र धनुष कद तणै ? जद रस री बिरखा थमै । हियो हिलोळा खावै, लैरावै जदई ओ उदात्त रो इन्द्र धनुष खिंचै । बिरखा हुयां पछै, तिरपत शांति रो अनुभव हियै नै हुवै; कीं विसो ई अनुभव इण काव्यात्मा रा दरसण करयां पछै हुवै । संतां रा पद पढ़्यां हियो विभोर हुवै । 'एकोरस करुण एव' क्यूं कर लागै ? भाव की तो लौकिक हुवै, मर कीं मलौकिक । काव्य में जद लौकिक भावां रो रस बरसै, जद हियै मे की कसक हुवै, अेक तड़ड़ाट जागै । हियो हुळोळा खावै, पण उण नै शांति नीं मिलै । पिरथीराज संजोगिता हरै, कृष्ण रुकमणी हरण करै, पण भावक जद मोखाहरण पढ़ै, तो उण रै चित मे बीजळी

चमकै पण कुन मिला'र उण रै हियै नै मैं सारा रस शांति नी देवै। संतां री वाणी में जो शांति है, मीरां रा पदां में जो शान्त खीरसमंदर है, उण सूं चैन मिलै। स्रो चैन चित री दशा नी हुवै, हियै री हुवै, ग्रर भाव-लोक मे सारो मिनख रो ग्रस्तित्व खो देवै। स्यात ग्रा ई मोक्ष री दशा हुवै। निहचै ई काव्य रो ग्रा ग्रातमा संत साहित्य में मिळै। इण रै प्रभाव में काव्य लौकिक, हीण, हेठो रस-दसावां सिरजै, ग्रर उण नै हीणो-हेठो ई गिणणो पड़ै। सती जळै-बळै, जौहर करै—सूरो बिना कबंध जूझै, जूंझार हुवै, पण भावा में उदात्तता इणां रा करतबां नैं गायां नी ग्रावै। पण कबीरो ग्रटपटी वाणी में, मन घुड़लै ग्रसवार हुवै, मिरघला मारै तो शिकार हिंसक होतां थकां भी मनमोवणो हुवै; ग्रर निरगुण रा गायकां रै कीरत न लोक मे सिरजण मे सफळ हुवै; ग्रर समूह ग्रापो खो राळे, की ग्रलमस्त हुयो मन री हंस दसा पावै। पद्य लौकिक भावजगत सिरज सकै, पण काव्य ग्रलौकिक लोक में ले जावै। सूळी ऊपर सजी सेज मे मानखो इणी सूं रसियै सूं रीझै-मीजै।

छंदां रा फद घणा कृत्रिम। वेदां मे मैं कोरा सात हा। सायद सात सुरां रा समायोड़ा मैं ई छद मूल छंदां री ग्रोळ राखै। बो मतोळचो बिगड़्यो तो संस्कृत मे इण री बेल ग्रमरबेल सी बिना मूळ ई पसरी ग्रर काव्य रै मूळ बिरछ पर किसी छायी कै छंद ई छंद रैग्या, रूंख नैं बेल चरगी, ब्रह्म नैं माया खागी। ठगणी किसा नैण मटकाया कै कबीरो हाथ ई नीं ग्रायो, बी रो हुयनै मरग्यो। पुरुष रै पुरसारथ नैं जियां ठगणी बिस री बेल बणी हंस-खेल खतम करै, ग्रिसी होगी। बालमीक तेरा छंदां रा तोरण मार्‌या ग्रर काव्य राण्यां रै रणवास मे रास मांड्यो। वेदव्यासजी ग्रठारा छंदां मे महाभारत मांडी ग्रर भांडी। भागोत पच्चीस छदां मे बचीजी। पिंगल री पोथी छंदां री पैली पोथी गिणीजै। प्राकृत पैंगलम् नैं इण रै बाद लोगा मणी-गुणी। ग्रपभ्रंश में मैं छद टूट्या-फूट्या। कीं नुवै सिरै सूं सिरज्या गया। डिंगळ छंद इणी ग्रपभ्रंश रा छंदां रा जायाजाम गिणीजै। रतनू रो पिंगळ प्रकास, लखपत पिंगळ, जोगीदास चारण रो हरि पिंगळ, उदैराम रो कविकुळ-बोध, ग्रर मंछाराम रो रघुनाथरूपक डिंगळ छंदां रा ग्रंथ गिणीजै। किसनै ग्राढ़ै रो रघुवरजसप्रकास भी इणां पर प्रकास गेरै। पण मैं सै हररराज नैं सिरोमणी मानै। चंद नागराज रै पिंगळ री वाता ई सुणी; दरसण ग्राज ताणी उण रा कोई कर पायो नी। हरराज संस्कृत छंदां रै सागै दूहै-गाथा-छप्पै रा लक्षण-उदाहरण दिया है। उणन्तर छप्पै रो सागो पाप मडाण है। डिंगळ गीतां रो चाळीसूं भी सांवरो हुयो। जोगीदास तो बाईसो पै ई थमग्यो हो। ग्रा ई छंदां री ग्रंमरबेल राजस्थानी री मोटै रूप सूं मणीजै-गुणीजै। दूहै नैं छोडां तो बाकी रा छदां रा

दरसरा आज रै राजस्थानी काव्य में परा नी हुवै। बाकी रा छंद किसा छळ छंदां में लोग्या-खूटग्या ? राजस्थानी छंदां री ओळ सूं राजस्थानी लिखारो वाकिफ कोनी। वो हिन्दी रा छन्दां नै राजस्थानी में मांडै। आ बात घणी बेजां नी। रुकी तो राजस्थानी सांमा तोड़ देसी।

छंद विभेद रो आवर कारण काई ? क्यूं हुई री बकरी रा दो थण, चूंच-चूंच बकरीजाया बेबाट करै, मींगण्यां करै ? क्यूं नीं गायत्री फुरीजै ? सायद विषय अर छंदां मे की सगपण हो, मेळ हो, जिकां नै लोगड़ा भूलग्या। बात रोणै सूं मरी, अर छंद मूळ लै सोक री राखै, तो भी आज रा कवि कोकाट कूकई ज्यूं करै मुळकै। नासमझी ई गिणीजसी। उणां नै पिंगळ रो ग्यान ई कोनी। कई भाईड़ा तो कोरी तुकां जोडै, अर कीं चतर संगीत रा लंगा सा मलगा लोकगीत रा सुरां सागै सबद रळकावै। ठिम्मर बात तो या है कै छंद रा फंद कवि नै रहणै रै ढब रो अभ्यास करावै। सारै विश्व रै कवियां में प्रारम्भ रा प्रयासां मे अभ्यास री खेचळ लखावै, उण रै पछै ई वै सध्योड़ै सुरां सूं सहजै गावै। राजस्थानी लिखारां कनै ओ श्रम कोनी, जिणी सूं उणां री काव्य-चतराई छंद रै गढ़णै-पढ़णै मे ई खतम हुय रैवै। छंद तो साधन है, साध्य तो उण में कह्यो कथ्य ई हुवै, पण राजस्थानी मे अजै छंद ई छंद है। आ कथ्य री कमी इण भाषा नै मारसी। काव्य लोगड़ा कोरा छंदां रै खातर कोनी सरावै। गीता रा श्लोक अनहद छंद नाद रै पाण कोनी पूजीजै—इण नै समझो-कैणै रै सारू की हुयां ई केणो ओपै, नीतर मांगीलाल दरजी रै सागै रेशम रो घाघरो गुलाबी मंगजी ई भासी। गजानन्दजी री मोटी सूंड लाडू पासी, अर इण छोटै नान्हे मूंदरै पर सवारी गांठसी। कानसेनां रै कानां रस ढोळता औ तानसेन गवैय्या खुद नै कैवै, तो की आंट नई क्यूंकै उणां नै कोरो कैणै रो ढब है, काई कैणी है आ तो औ बापड़ा कदे सोची ई कोनी ? सायद आ सोचणै री सामरथ भी इणा गरीबड़ां कनै कोनी। देवतां री आ बात घणी दुरलभ। राजस्थानी काव्य रा विषया नै देख्यां दिवाळो चोड़ै आवै। ओ दाळद किया मिटै ? थोबड़ो चढ़ाया, गरबायां, मून धारयां तो ओ ढपै कोनी—'जागि परत है काक पिकु' तो अेक बोल सूं ई चाच चोड़ै करै—उण नै की पण पढ़णो चाईजै, गुणणो चाईजे ? पण पढ़ै तो काई पढ़ै, मुकलावा वहार पढ़ै कै स्याल ल्होड़ी देवर को पढ़ै ? 'सोनो निपजै रेत मे' पढ़ै कै काई पढ़ै ? उणनै पुराणै जूनै काव्या मे डुबकी मारणी चाईजै, अर नुवै विचारां सूं जाण-पिछाण काढणी चाईजै। जद ई निस्तार निजर आवै।

रचना रै अतस मे अभा उण में आनन्द लेणै रो ढब किसो ? सुन्दर अर

मूं'चा विचारां रै बिना बात किणी ढब पण नी बणै। काव्य उपयोगहीण ठाळप री कुबद कोनी ? उण सूं हियो क्यूं हरखै ? काव्य सूं हियो क्यूं हरखै ? स्यात उण मे कई चीजां है जो मोळप रै घणी नेडी। इणी सूं कवि जात रो मोळियो टाबर गिणीजै। जियां टाबरां सूं हांस्यां बोल्यां हियो हरखै, उणी तरियां कवियां री भोळप में भी मन बिरमै। कवि रै हियै संवेदना रा तार घणा झणकार भर्‌या। जाणै फिरांस रो डाळ। थोड़ै सै बिचार-बाव रै बह्यां जिया फिरांस झणकार करै, कवि भी उणी तरियां नाजुक संवेदना रो धणी। उण रै हियै जो ऊठै, उण नै बो पढ़णियै रै हियै उतारणो चावै। क्यूं चावै ? क्यूं कै आपां कनै ढबण नै फुरसत कोनी, निरखण नै साबक आंख्यां नही, सरावण जोग जबान कोनी। कवि नै विधाता इण तीनूं दात सूं मालां-माल पैदा करै—कवि जग रै पड्‌यै प्रभाव रो बाणी में बरणण करै, बो अनुभूति नै बाणी देवै, जो आतमा नै पोसै, ढाढस देवै, ध्यावस बधावै। कवि काव्य में प्रभाव कियां पैदा करै ? बो लय सूं, बिम्ब सूं, भाषा सूं, बिचार सूं, आखरां नै ओळ्यां में असो अक्षय क्रम देवै, जियां पटुवो जड़ियो गळपटियै में मणिया पोवै। अेक नै अळगो कर्‌यां तिमण्यो तीन-तेरा हुय जावै, उणी तरियां कवि काव्य री ओळी नै जडै-गढ़ै।

लय अर तुक रो काव्य में काई लेण-देण ? काव्य संगीत रै समंदर सूं निकळ्यो रतन। मन रो मंथण लय मांगै। दही बिलोती मरवण न देखो—बाजूबंद री लूंबां जाणै थिरकै, माथो झेरणै री झगर-मगर पै ताल देतो लहरातो मिणधर साप सो छिब पावै लहरावै 'अरे दहेड़ी जिनि धरै, जिनि तूं लेहि उतारि; नीकै है छींकै धुवैं ऐसैं ई रहि नारि'री अरज जो गवाळण सूं चितेरो [illegible]हारी करै, उण री मनमोवणी छिब रै आभा मे दही बिलोती देह री लयता[illegible] रा चितराम रो उतार हुवै। प्राकृत रा कवियां में ओ घणो व्हालो विषय रयो है। तो काव्य अर संगीत रो सगपण गाढ़ो। काव्य संगीत सूं निसरै, अर पद-पद ताल लगातो मन रो मानस लहरावै, जद ही कवि गावै। जद आखर नीं हा, उण बगत ध्वनि सूं काम चालतो। गाय रंभावै, बाछा डीडावै, कोयल कूकै, मोर टहूकै। क्यूंकर उण मे भावां रो प्रकट भाषा आरोपां ? सबद भो आखर काई है ? स्फोट अर ध्वनि री [illegible] मळगी इकाई ही तो सबद बणै—अर काव्य में जितरी फूटरी [illegible] सगत हुवै, वो निवरै—अरथ रो आरोप तो सबद पै [illegible] सोर ई मूळ मे गिणीजै—तो काव्य लय अर लयकारी सूं [illegible] कोनी।

मन री डांड्यां में मैं हाकोहाक मचाता [illegible] बणावै।

अरथ नीं करो तो भी पळ-पळ पळका मारै, बीजळी सी चमकावै, आंधो सूरदास सटकै सूं मिनतो नै पिछाणै—कोयल, काग देख्यां बिना सुण्यां भी जाणीजै। तुक आखर काईं करै ? वा अेकसी सोर रै मतावा काईं ? अेकसी सोर नाड़ी तंत्र पै अेकसी झणकार पैदा करै, जो कानां में मिसरी घोळै। आंख्यां अचमें सूं फाटी री फाटी रै जावे, अर कवि सरावणै जोग जीभ री धणी होणै सूं फुरै। हुकल्यै नै छंद्रयां वो पारोपार बोलै-मलै। लेडयो भी मुळक पै मस्तायो कबूड़े जियां गुटरगूं करै। तो बात आ रयी कै भावां रै चढाव-उतार में मिनख लय सूं बोलै—हियो धड़कै। सांस री मुरली बाजै—अेक वैढ क्यूं नीं हुयो धड़कै ? सांस चालै ? सहज सुभाव सूं वै सागर री लहरां री जियां उठै-गिरै। फजूल री तुकां में भी टाबरयां सुख पावे। 'भरयो समंदर गोपीचन्दर, बोल म्हारी मछली कितरो पाणी' नै जद टाबरया टेटै तो उणां री सम्पूर्ण अस्तित्व थिरकै। भो क्यूं होवै ? भो उण रे नियमित सोर रो प्रताप ई गिणीजसी। संगीत भी तो सोर ई है, पण सोवणो सोर होणै सूं लोगां री वो करणाभरण बणै। तुक आखर में नीं हुय'र बीच-बीच में आणै सूं कविता, विचार लय सूं छिटकी अर मटकगी। वरण-मैत्री ठकराई री ठसक सी लागै क्यूंकै वा आछी चीज री भति है, अर भति सर्वत्र वर्जयेत् में साच है। तुक रै आगम री सुगड़ाई इण में, कै वा मंजी सहजता सूं आवै, जोराजबरी रो बलात्कार नी होवै, तो भोवै ? जोराजबरी रै बलात्कार में लूंठाई नी थरपीजै, पण उण मे रस कठै ? मिसरी गिरयां किसो आनंद, या तो मूंडे घुळै, जद ई मिठास री अनुभूति हुवै।

पुराणै दूहां नै लोग तुकां रै खातर कठै पढ़ै। उण में कीं कथ्य ऐसो हुवै कै उण नै पढयां ई सरै। तुक विचारां री भी हुवै, पण वा घणी ऊंची अर सूच्छम बात हुवै। दृष्टांत अलंकार अर सूक्ति वृंद, रहीम, भाघ, भड्डळी री इण विचारां री तुक रै कारण ई पढ़ीजै गुणीजै। पण वा समानता माथै रै सूच्छम सवेदना सूं सम्बन्ध राखै, जिण रै विवेचन वास्तै भेजो चाईजै। अलकारां रो भो पख, अजे इण दीठ सूं निरखणो-परखणो अछूतो पड्यो है। सोर सार्थक अर बिरथा भी करयो जावै। तुक सार्थक सोर सूं न्यारी कोई बीजी बात कोनी लागै। तुक रो म्यानो यो ई लागै।

पण कै काव्य कोरो संगीत ई हुवै ? काव्य फुरतां ई पैलीपोत कानां तक नाद सौंदर्य नै उजागर करै। समझण सारू काव्य नै हियै तक उतारणै खातर बीजी बार पढ़णो पड़ै, जै समझ सांतरी नईं हुवै। संगीत दो भांत रो हुवै। अेक होठां-काना रो, दूजो हियै रो अर चित्त रो। कण्ठ, होठ कोरा सोर संगीत

करै-मरै । हियै रो संगीत माथै में उपजै अर देह रै देवरै मे भालर ज्यूं भणक पैदा करै । हिये मे गूंजै । कण्ठ सूं हियै रो सगीत ऊचो अर निहचै ई सिरै गिणीजै । गीता बेद रो पाठ दिव्य सुर जगावै । सागर री गरजण, बायरै री 'रणित भृंग घंटावली करत दानु मधुनीर, मंद-मंद आवत चल्यो कुन्जर कुंज कुटीर', काई गावै ? बास रै बोड़ में, जो भंवरा सूं भेद्या हुवै, पवन वेवै अर किसी मनमोवणी मुरली वाजै । सख घुरै, तुर्रा गूंजै, मजान रा सुर, रुद्री रा मंतरां रो पाठ किसो सगीत सिरजै ? जैपर में अेक हवामहल है । कितरा टूरिस्ट नित निरखै-परखै, पण उण रा बारजां-बार्यां मे सूं छणकारा करती हवा कीं किसो गावै जो इण लोक सूं परै री चीज । सात सुरां सूं की ऊंची इधकी सुरां री सहणाई ग्वालेर रै महलां री जाळ्यां-भरोखां सूं भोला खाती पुरवा बजावै । अगनैणी अर ग्वालेर घराणा ना तान तराणा, उण आगै फीका लागै— राणकपुर मे भाट भणकै-भणकै, नूपुर कंकण किंकिणि री बात कीं ऊंची चीज है, उण तक सबद नी पूगै । खरळ रो तामड़ो जिकी ततकार करै, दुनियां रै किणी बाजै पै उण री नकल पण नी हो सकै । मंत्राभिचार मे ही राजस्थानी रो 'ळ' 'लृ' 'ऋ' की अजब सी निसर्ग री धुन धुणै । मिनख उण सूं छिटक्यो-बिछट्यो घणो कंगलो लागै । संकीर्तन रो सोर किसी मन री अोस्था बणावै ? भांभर भणकै, घटै री गूंजती टंकार, गिरजै री घंटियां काई पैदा करै ? घणो अचंभो आवै, इण रै सोर पै । इणां रै सुरां सूं, सोर सूं सगपण करणो जरूरी, इणां नै हियो अरपो अर काव्य मे इणां सो सोर थरपो ।

अूंचै काव्य में यो ई आवै । यो सोर रो जादू घणो जोरावर । काव्य में इण नै लाणै रो ढब कियां आवै ? राम ई जाणै, अो कठै सूं आवै, अर कियां आवै ? हां, आयां पछै इण री चीरफाड़ पण करी जा सकै । अमृत-ध्वनि नै अमृतध्वनि क्यूं कर कैवां ? उण में ध्वनि री अमृत अवस्था री बात तो कठै कोनी ? ध्वनि लहर ज्यूं लहरावै, कठै खतम हुवै, अर कठै सूं सुर माडै, कीं बेरो ई नी पड़ै । जूभारू बाजा जूभार नै जूभावै ? लोगड़ा सांप रै फुफकार सूं सबद आयो बतावै । पण सांप तो बहरो । पूंगी रै सुरां पै वो कियां नाचै ? राम जाणै ? सांप, शेषनाग बहरो ई भलो । माथै धरती रो बोझ मार सांम्यो कठै कानां सूं सुर सुण सीस चालण करै तो अनरथ हुवै, इणी सूं सेसनाग बहरो लागै । कवि सेस सो सबद फूतकारै, उण रै अूंचै प्रभाव रो बेरो कोनी पड़ै ? काव्य रा आखरां नै पवित्र गिणो, उणां मे फेर-बदळ सूं घणो अनरथ हुवै ।

ध्वनि, जे विचार सूं रळमिळ चालै तो बात सांतरी रैवै । कोरी ध्वनि

सूं विचार पैदा करणो निहचै ई चमत्कार वै, पण वा पणी मूंघी बात कोनी। हां, विचारां री मोजू शबदावली, जे संगीत सूं कसीजै, तो सोनै में सुगंध सिरखी बात हुवै।

छंद वो डीलडोळ गिणीजै, जिण मे काव्य रो जीव जीवै। छंद भी जूण जीवै, मरै, ग्रोठा जलमै। छंद विषय वस्तु रै जोगा होणा चाईजै। नेपोलियन जे गांधी रै डील में ग्रोतार लेतो तो के होतो? गीता अनुष्टुप में नी हो'र हरिगीतिका मे होती तो काई ग्रांतरो ग्रातो? फूटरै शरीर सूं ग्रातमा रो फूटरापो जाणीजै। पण ग्रो सदा नई हुवै। ग्रोपरै डील में भी फूटरापो बापर सकै पण वो ग्रपवादी ई हुवै।

काव्य में बिंब रो काई ग्रोपार रवै? प्रतीकां रै रूप में काव्य फुरणै री जगां जे बिम्बां मे कवि बतळावै, तो रूड़ो लागै। जिसो क्यूं कर होवै? काव्य भणाई कोनी। साळा-पोसाळां सूं बारै निकळ्यां, पोथ्यां छुड़ायां, मानवी प्रतीकां सूं ग्रळगा मागै, क्यूंकै उणां में कृत्रिम ग्ररथ ग्राखरां सूं जोडणो पड़ै। कोड लैंग्वेज सी गत हुवै, वै मार्थ मे चितराम उघाड़ै तो सहजां हियै तक पूगै। प्रतीक दाळ भात मे मूसळचंद सा ग्रोपरा लागै। कबाब में हाडक्यो खटकै। काव्य रा बिंब, जड़ जगत री साच सूं भी इधका साचा ठहरै; क्यूं कै वै हियै रै नेड़ा हुवै। हियै री ग्रांख्यां सूं कही बात, संगत लाग्यां तुरतो फुरत ग्रसर करै—इणी सूं 'डिटेल' नी रूपै, ग्रोड़ स्वीपिंग लाइन्ज मे कवि चितेरणी करै। ग्राखरां रा सजोग सूं कवि मुहावरा ई नही, चितराम भी उकेरै-घड़ै। सबद सही जगां जड़ीजै तो चितराम जीवतो-जागतो लागै, नीतर ग्राखरां री रोळदट्ट लागै। सारा ग्रलंकारां सूं चितराम बणाणै रो काम ई लियो जावै। सातरो कवि वो जो नुंवा ग्राखर बिना जरूरत नई घड़ै, पुराणा ग्राखरां रा पूरा ग्ररथ चौडै करै, उणां नै नुंवो ग्यानो देवै।

ग्रलंकार ग्रोर काई काम करै? वै बणा बिम्बां मे रंग भरै। चितराम नै लाइट ग्रर सेड देवै। ग्रोपमा जुग जूनी ग्रर ग्रलकारां री मूळ गिणीजै। सादृश्यमूलक ग्रलकार इणी ग्रोपमा राणी रा जाया-जाम गिणीजै। काळिदास री ग्रोपमा विशेष क्यूं सराईजै? वो उणां रो प्रयोग इयां करै कै सारो प्रभाव केन्द्रीभूत हो, उण विषय कानी सांगोपांग ध्यान खींचै; किबननुमा जियां 'निडिन' नै खीचें, ग्रर चितराम नै पूरो बेरो दे उजागर करै। दीपशिखा सी इन्दुमति सुयबर मे ग्रागै बढी, जद वो कैवै तो दियै री लौ सिरखी इन्दुमति री देह ई निजरां मे नी फळफळै, सामी बैठ्या राजावां री पंगत रा ग्राभ। सूं ग्रूजळा मुख भी दीखै, पाछै छोड्या राजावा री निराश मुखकाळिमा भी चौड़ै ग्रावै। दीयो ग्रागै उजास करै, पाछै ग्रंधेरो। ग्रर ग्रेक ग्रोपमा सूं पूरो

चितराम जगमगातो सामो आवै। अो ई अलंकारां रो चमत्कार हुवै।

कल्पना री उड़ाण नैं अलंकार सा'रो देवै। विषय रो बेरो पाड़ती अर साथै ई चितराम उभारती अलंकार री सोंज घणी व्हाली लागै। अरथहीण सबदां री रामतरोळ काव्य नैं भंडती वणा छोडै। विचार सागै छिब सोहणी बात हुवै। अलकार आंख्यां ओलै नै आख्यां आगै करै, रहस नैं चोड़ै करै। उपमा-रूपक बात रो म्यानो खोलै. समानता अर दृष्टांत सूं बात लोजिकल हुवै, अर असरदार वर्ण हियै री उछाळ हुवै, जद ई आंख्यां आगै री चीज री समानता आळी बीजी चीजां रो बेरो आपूं आप आख्यां आगै निरत करै। याददास्ती अर पुराणी जूनी विगतां रो अो ई सुभीतो मिनखादेही नैं भगवान देवै। अलंकार विचार नैं भ. पैहराया जा सकै, सबदां नैं भी। लोगडा आं रा दो भेद करै: शब्दालंकार अर अर्थालंकार कैवै। अरथ में अलंकार देवै। अरथ मे अलंकार किया हुवै? उण रै विचारां मे जो बांकपण हुवै, अरथ रै कर्‌यां बो परो मिटै। मुळक नैं, मुच सूं अळगी कर्‌यां बा काईं रैवै? आंख्या नैं फिजिशियन जिण आंख सूं देखै, उण में क्यूं कर ई आनन्द री बात नईं लखावै। 'वा चितवन ओरे कछु'—तो आखर 'ओरे' क्यूं कर हुवै? उण रै ओळूं-दोळूं मंडळाता बिचार ई तो उण मे कदे इमरत देखै, अर जिनगाणी पावै, हळाहळ गळै उतारै, अर बिना मौत मरै। मद छकै, अर झुक-झुक झूमै। तो अलकार कथण सूं अळगै कोरै बिचार में भी संभवै। कवि बिचार नैं भी, छद देही ज्यूं सरूप देवै। भावना जद तरक रै गोद बैठै, अर कल्पना रा रमतिया घड़ै जद ई काव्य सिरजण संभवै। बड़बोल अर बढ़्यै-चढ़्यै बरणन नैं पढ़्या असर पड़ै। सत्य नैं असत्य रै आवरण सूं अलगो करणो भावक रै सारू करड़ो काम कोनी। अतरभेदी दीठ बारै रा आवरणां नैं भेद भीतर तक पूगै। परिचित सूं अपरिचित रो बेरो दियो जा सकै, इणी खातर मेघदूत रो डाकियो झूठो होतां थका भी मनमोवणो लागै। काव्य री झूठ जगत री झूठ सूं अळगी हुवै। काव्य री कारीगरी चावै अिसी आख्यां जिकी सुपना देखै, सुपना सिरजै, अर जीभ सूं आखरां री ओळ्यां बै सुपना वधे तो काव्य बणै। मूमल जनम सूं ई सरूपवती हुई हुसी, पण उण सरूप री घिर्‌याण्यां तो घर-वैठी चाकी झोवै, अर चून सवेरै। बो कवि भूल करी जिको उण रै सीसड़लै नैं सरूप नारेळ ज्यूं देख्यो, केसडला हतियारी रा वासग नाग ज्यूं—सूं जो डसीज्यो, बो उण न अमरता रो इमरत देग्यो। आज जिकी सुंदरता री देव्या अेक बरस सारू वबीन ऑफ यूनिवर्स बणी गरबावै, बा ई दूजै बरस अेक टींगर जण्यां, कूंडै री चीज पण वण परी करीजै।

यो क्यूंकर होवै? स्यात यो ई कारण लखावै कै उण हतियारी रा

इसया लोगड़ां रुनै जोम कोनी जिकी इमरत रा झावर फुरै । फीत रो नाप्यो-जोख्यो डोल प्रभाव रै बिना भी सुन्दर गिणीजै अर कबीर नै हांसी आवै । 'गुण नै रोऊं गंवार' जो सोरठ कैवै, पण आज तो जात अर लछमी दान नै झोकती टोगरड़ियां किसी अमरता पावै ? हेतना घणी, पण उणनै उजागर कर-णिया होमर कोनी । कवि तो पटबीज सो बिचारां री चमक देवै, अर अंधारे मे उजास हुवै । बो सुरज हुय सहस किरणां बरसावै, अर उजाळै री बाग सी फूटै, अधियाळो मिटै अर हिय रो पोयण पुळकै-मुळकै । चांद हुय'र इमरत बरसावै, अर कुमोदण्या कर्प-झर्प, खिल-खिल चिलै । चोखो मूं'घो काव्य इसो ई हुवै । उण री कळा, कळा हुवता थकां भी कळा रो भरम पण नीं हुवण देवै । हीरो हीरो कियां बणै ? उण री कटाई-छटाई सूं । उण तरियां काव्य कटाई-छटाई तो चावै, पण हर भाटै री चतर जोहरी भी कितरी ई कटाई-छटाइ करै, हीरो को बणा सकै नी ।

काव्य सारू सेचळ अर कारीगरी करणी किती चोखी ? घणी कारीगरी सूं बा कारीगरी हुय सकै । पण काव्य बो कोनी रैवै । नाच-कूद हरेक कर सकै पण नर्तक मे के विशेषता ? वो उण खातर लटै, अर ढब सूं उछळै-कूदै । ओ ई ढब काव्य मे चावै । भावना सूं कारीगरी मांमळी संयत करी जा सकै, पण कोरी कारीगरी सूं भावना किया जलमै ? 'पड़ड़ पड़ड़ बूंदां पड़ै, गड़ड़-गड़ड़ घण गाजै' कोरो फ्लैट बरणन है । इण मे किसी भावना रो सुरमो सरयोड़ो है ? राम ई जाणै । चैंकाणी नटणी री चाल, अर गजगामण री चाल मे जो फरक हुवै वो ई सहज काव्य अर सेचळ रै काव्य में जाण्यो जावै । बिचार री सघनता सूं काव्य निरावरण हुवै । बिचारां री सोभा उण कनै हुवै, तो सूधा पाव किया पड़ै ? साज-सिंगार री, गैणा-गाठां री झांकी तो बै बणै जां कनै इण सोभा री कमी हुवै । नानी के तो न्हावै अर काई निचोवै । न्यूड री कळा चावै के देह इसी हुवै कै देखणिया नै विदेह कर सकै, नीतर "लाज मरू थे माय" री बात रैवै—कीं हुयां ई दिखावो माडीजै । नी हुयां ई, घूंघटा खिचीजै, अेड़यां ढकीजै ।

भावरां सूं चितराम खींचणो काम लयावै । जद चितराम विचीजै, तो कवि नै सन्तोष हुवै, अर बो खुद री पूठ थपेड़ै । इसा जिण घणा कम आवै, अर माया या आपो खो अंड-बंड बकै - खुद नै खुदा मानै । तुळसी घणो ठिम्मर कवि गिणीजै पण जद-जद बो इसा चितराम खींचै, उण मे भी दरप आवै है, वो भी गरबावै । इसै थेक जिण मे बो चितराम खींच्यो तो वो बिरमाजी सूं बिसो चितराम नी खींवणै री गर्वोक्ति कर बैठ्यो- -रामजी सीता रै माथै सिंदूर दे रया है । तुळसी कैवै :

'उपमा कहि न जाय विधि पैं हीं । राम सीय सिर सैंदुर देही ।।'

चालो, उपमा विधि ई नईं दे सकै, तो फेर विधि रा घड़या पुतळा रो कांई विरतो—कुण उपमा देवै ? तुळसीदासजी म्हाराज फेरू खुद उपमा देण ढूक्या अर जो चितराम वै सड्यो कर्यो, निहचै ई विधि सूं दिसो ग्रो सड्यो हुय सकै नी— वो पिरजापत पांच तत्वां सूं पूतळा घड़ै-- तुळसी वापड़ो ग्रंक ग्राखरां सूं राम घड़ै, सीता चितेरै—उण री उपमा बो देवै— रंग है तुळसी थारी उगत नै, थारी सगत नै – वो फुरै :

'ग्रमिय पराग जलज भरि नीकैं । ससिय भूषि जनु लोभ ग्रमी कैं ।।

इण चौपाई मे न गड़ड-गड़ड़ है न पड़ड़-पड़ड़, पळ-पळ पळका मारती बीजळी भी को खिवै नी, ग्रर कोरो 'नीकैं' सूं तुळसी नीको चितराम मंडै । इण सबद सूं चौपाई चेतना री जोत बणगी, चितराम में राम ग्रायो – कियां बणग्यो ? सिंदूर रो पराग, कंवळ निसर्यो ग्रांगळ्यां मे नीकै सूं, ग्राछी तरै सूं, भरपूर भर्या हाथ रो रूप जो वणै, वो फण फैलाये सांप सरीग्यो बणै । ग्रर राम रो सांवळो हाथ साचै साप री ग्राकृति बणावै । ग्रर सीता रो मुख चंदरमा, चदरमा पर इमरत रो वासो, उण नै लेवण खातर जाणै राम रो सांप सो हाथ इमरत रै लालच चदरमा कानी फण फैलायो । तो ग्रेक नीकै सूं करामात हुयगी । बिरमाजी नै मात दे दी, ग्रर तुळसी वावो गरब्यो-गरज्यो । तो सबदां सूं चितराम इसा रामरोळा करै, खेला करै, मेळा मांडै ।

ग्रंत मे ग्रेक वात रैगी । ग्राखर काव्य मे उपयोगिता कांईं ? उण नै बियां तो सीख सारू भी लोगड़ा घोटै । 'बेताळ कहै बिक्रम सुणो जीभ समाळै बोलिये' में की तुकताल है ई । पण चेतावणी रा जूंघट्यां सूं कोई चेतै या नी चेतै— नहिं विकास इहि काल सूं कोई सबक लेवै नी लेवै—काव्य ग्रूंडी मार करै—काव्य ग्रच्छाई साखू हियो तैयार करै— साखरी कल्पना सूं मन निरमळ करै, सत्य सूं सोहणो सामेळो करावै । हियो काव्य सूं हिलै, काव्य हियै नै ग्रेक गेलै घालै । भेजै ग्रर हियै में जे की तालमेळ हुवै, तो काव्य उण नै भी संचै ढाळै । ग्रर नी हुवै तो ग्रहिंसकां नै 'पाणी पीवै छाण लोही ग्रण-छाण्यो गिटै' री उगत सांच होती नित देखां परखा ई हां । काव्य सीख नी देवै, बो प्रेरणा करै, मन मे फुरफुरी जगावै, उण नै सिहरावै । काव्य पैगम्बरां, नबियां रा वचनां सो गूढ —ग्राखरां री उलटबांसी हुवै, उण नै जाणणियो ई जाणै —हर कोई नी पिछाणै । उण गोरखधंधै रो ग्रसर पड़ै । पण ग्रो ग्रसर कियां पड़ै ? इण रो वेरो घणो मुसकल । बिया डील में दवा कियां ग्रसर करै ? बो प्रोसेस भी विज्ञान कनै कोनी । काव्य तो माध्यम ई बिण मिटती-बणती कल्पना रो राखै । काव्य सूं सीख ई देणी होती तो विधान री धारावा

कविता में मढीजती, भर लोगबा उण री पालण करता । पण बै टूटै-- हरि-चंद रो चद टरै--नीं टळै, बो नी टूटै भूठै । इसो क्यूं हुवै ? भो यूं हुवै कै बो 'इन्स्ट्रक्ट' नी कर, 'इन्सपायर' करै, जो 'इन्स्ट्रक्ट' सूं ऊंचो बात हुवै । काईं कैवै, भो जरूरी घणो कोनी, कियां कैवै, इणं. मे काईं कैवे कवि समावै, भर सफळ हुवै ।

काव्य जाणकारी री चाज कोनी, बो समभ री चीज हुवै काव्य रै मांय रस रसिक रै खातर हुवै । भरसिक रै खातर बो मैंसे भागे बीण सिरखो हुवै । इणी सूं 'भरसिकेषु काव्य निवेदनम् शिरसि मा लिख' री उगत कवि बिनवै-भर्ल । कंवळ रै कनै मीडको रैवै, पण भुंवरो तो दूर देस री वासी हुवै । बो कंवळ री पांख वधै, प्राण त्यागै । मीडकाजी कवळ कनै रै'र भी माछरां सारू छपाका मारै । सो काव्य रो रस काव्य में होणै रै सागै, रसिक मे भी हुवै । 'चंदा बर्स प्रकास' सी बात काव्य री होतां थका भी 'जो जाही को भावता सो ताही के पास', इणी सूं हुवै । भो ई कारण बणै कै कविता भेक उमर में दाय नीं भावै, पण बीजी उमर मे घणी रिभावै, मन भावै । करेला टाबरां नै कठै दाय भावै-- भावळा बाळकां रा स्वाद नै कठै तिरपत करै ? काव्य मे भनुभो हुई बात भथवा पाठक भूमै । भनुभव रै बारै री बात में साधारणी-करण धोड़ो मुसकल सूं हुवै--बठै ई कवि री चतरता परखीजै, रसिक री समभ जाणीजै ।

काव्य रै कथ्य में कथा नी भोपै, क्यूं'कै काव्य री का'णी, जिण छिबियां सूं संवरै, बै तत्व ई उण मे कोनी । काव्य तो विस्मय जगावै, सुपना रो संसार रचावै-बसावै भर दिखावै । मकराणै मे मूरत थोड़ी हुवै-- मूरत तो मूर्तिकार रै हियै में हुवै । बो छेणी सूं उण हियै री मूरत नै भाटै में सूरत देवै, उण नै ढाळै । तो काव्य जिण वायवी माध्यम सूं रूपाकार पावै, बो घणो सूक्ष्म रैवै । काव्य जो उगेरै, उण मे विषय-वस्तु भेक तत्व है, बो सारै काव्य री जगां कियां ले सकै ? सत्य तो सदा ई सापेक्ष रैवै । बो समय, स्थान, पात्र रै बदळणै सूं भी बदळै । इण सूं काव्य जो टेरै बो भावना री वस्तु बणै । काव्य जगत कल्पना भर भावना रो जगत हुवै तो कवि घडै । इसी सूं उण नै दूजो पिरजापत कैणो पड़ै । उण री जगती रो बो ई धणी-धोरी हुवै । महान घटनावां सूं ई कोरो महाकाव्य नी बणै, उण रै फुरणै मे भी मेरुमंद महानता रो सुर भर भावना रो स्फीत वक्ष चाईजै । सो टंच सोनो महाकाव्य नई हुय सकै, क्यूंकै महाकाव्य चावै महानता सूं भभिमन्त्रित खिण । भै खिण घणा थोड़ा, भर धागो तो माळा रा मिणियां नै जोड़ै भर है, उण नै हार किसां कैवां ? भै महाकाय महाकाव्य रा बै पद्य बणै जो विशेष सरस,

मरमभेदी मौसरां री मोळ्यां नैं जोड़ै । महाकाय काव्य नैं महाकाव्य गिणणो मरम हुवै, क्यूंकै डील सूं डाको को हुवै नी, उण डील में की डाकीपणो हुयां ई बो डाकी कहावै । इणी तरियां महाकाय काव्य में कीं महान काव्य हुयां ई बो महाकाव्य कहावै । मौसर मायां इण रो भी वेरो पाड़स्यां । पण इण निबन्ध में काव्य री चीरफाड़ री रपट मांडी है, सायद कीं मन्दरूणी झांकी रो वेरो इण सूं लागसी । काव्य रैं जीव नैं जाणबा री इंछा राख-णियां रो भरम मिटसी, बै मरम री बात जाणसी-सराहसी— मर रस्तो पासी ।

आलजंजाल

ब्रजमोहन जावलिया

कितरो भोळो अर कितरो दयालू है तूं म्हारै जामणजाये रा डीकरा, कितरो रूडो अर रूपाळो है तूं इण निरभागण बूढळी खातर, जो छिजोती रैवै आपरै काळजै नै अर बाळती रैवै आपरी कुंदण जिसी काया नैं, थारी जूनो पोळ रा पगोथिया सामैं न्हाळती, ओभका लेती अर देखती सपना, खड़-खड़ाती थारा कुंवाडा नैं। साच है या कै म्है तनैं घणो मान दूं, पण राणोजी भी तो देवै है मनैं घणो मान, उरळै मन अर खुलै हाथां। कईं अर्पित न कर दीधो वैं म्हारै खातर। सब कुछ तो सूंप दियो है मनैं। पण, म्हारा लाल! कठै मिल सकैली मनैं थारै हिवड़ै में भर्‌योड़ी आ मोहाळू ममता अर सहजा ई मिलतो आयोडो थो सनेव? आ ई अरदास है अब म्हारा पूत! म्हारो हिवडो फाटग्यो, काया जीरणाणी, अर टूक-टूक होग्यो है काळजो म्हारो। रजेक ग्रोरूं सैं म्हारै सागै म्हारा इण आफत रा दिहाड़ां नैं। जिंदगी री धूळ उड़री है नीचै, पण नीचै। आ बोदी माटी, अर गिणती रा मैं नान्हा दिहाडा, भूळस जासी इण धुंवाड़ै में।

घणो रूडो, घणो रूपाळो सपनो देख्यो है मैं—जाणैं म्हारो लाल, सत-रंगो इन्द्रधनुख सूं फूटतै उजास रै गाळ सूं उतरतो हेठै आयो म्हारै पसवाड़ै। हूं ओळख न सकी वीनैं घणी देर तांईं—अर जद ओळखणी, तो ओळखायो वो आपरी चौड़ी छाती माथै झिलमिलतै रगताळू सुरंगी सितारै सूं।

घणो भलो मिनख हो वो. जगमगातै उणियारै आळो, सगती अर रूप रो अोतार! थाम लीधी वो म्हारी आंगळी, अर अेक वार ग्रोरूं बणगी मैं रूड़ी-रूपाळी अर आकर्षक उणियारै आळी चतर नार। थाम लीधो म्हारो हाथ अर लेग्यो मनैं सात-सात इन्द्रधनुखी सतरंगी उजास रै राजमारग रै रूड़ै बाऊ माथै।

हे म्हारा राम! मैं जो करणी कीधी है, म्हारी इण जूण में वीरी बरो-बरी कठैई को दीसै नीं! जद सूं सूपनो है या धरती अर जद सूं जागी है या जगती. देखी है कठैई इसी कामण, जो पाळ सकै होड म्हारी करणी सूं! मैं जो करणी की है म्हारा नाथ! बा दोरी है मरस्या सूं भी, अर तेजवन्त है

सूरज रै ताप सूं। सैंग जगती जद काटै है आपरी जिन्दगी बैवतां पाप-करमा री धार में, अर पिछतावतां बां पर, रोतां अर कळपतां, मैं कीधी ही अिसी कग्णी जो सैं सूं ऊंची, आतमबळि सूं उठघोड़ी, गुणांआळी अर भलैपणां री करणी ही। रोती अर कळपती काटूं हूं मैं वीं बगत सूं ई म्हारै बुढ़ापै रा अै दिन—पछतातो आपरी करणी पर ! छिटक देस्यूं मैं म्हारी जिंदगी अर म्हारो ओ जीव, जिणां नै डुबो राखी है मैं पाप रा समन्दर मे झूठी आण लेवतां। अिसी आण जो थोथै तर्कां सूं तायोड़ी, झूठ रो पुळिदो हुवै, आवतो रै जो अणाचोक, अणथक नारी री जुबान पर !

अर अब म्हारो सैंस मेवाड रा राणोजी री अम्मर गादी रो धणी बणसी। सैंग मेवाड़, ओ गौरवआळो देश होवैलो बीरै पगां हेठै। इण सूं तो आछी ई है या जे महान सागाजी रै सिंगासण माथै अेक कायर, अेक कपटी बैठै अर उजड़ जावै आ सैंग धरती।

है अठै कोईक अिसा भी जो कैवै कै पन्ना झूठ बोलगी ' तरवार री तीखी धार देखर कांपण आळै इण राणें री धोळी धमणियां मे सांगा रो ई शोणित वहतो होसी, कियां करां पतियारो इण पर ? आ हत्यारी नार बचा लीधो आप रै लाल नै अर नांख दीधो अेक मूरख नै मौत रै सामी बळि रो बकरो बणावण सारू—कपट सूं भर्‌योडी अेक कूड का'णी रै आसरै महान सांगाजी री ऊजळ कीरत माथै धूळ उडावण नैं। अै सैंग मिनख बंध्योड़ा होसी म्हारै पाप-करमां सूं पण राम रै सामैं तो बोल्याई होसी बै साच, कै किण खातर कीधी ही मैं आ करणी। कंई ! किणी जबरी सगती रो जोर हो म्हां पर हर लीधी हुवै म्हारी सैंग चेतना नैं, आपरै अतस रै जोर सूं ? हुई है कदेई अिसी भी क कोई प्रेत आतमा कर लीधो हुवै अधिकार किणी जागती जोत पर ? कदास अभाव में जनम्योड़ी भय अर भ्रांत कल्पनावां री कोई छाया ही वा ? कुण कह सकै। क्यूं कीधी ही मैं आ करणी ?

हाड'र मांस री पजर इण छाती मझ वां गुणां रो बास कदेई नी हो ज्यारो बासो साधु-संतां रा हिवडा मे ई हुवै, कोरा संतां मे ई। मैं अेक गांवाळू गोरडी ही, घणाखरी असपळतावां, अणाधार कल्पनावां, धोखाधड़ी'र कूड़ वास्तविकतावा सूं भर्‌योडी कोरी अेक गोरड़ी। फेर भी मैं अिसी करणी कीधी है, जिणसूं सिकुड़ जावैला सगळा संत अर मुड़ जावैला बै अेकाकानी, थरथराता डर सूं। मनैं वीरागणा कैवै है अै सगळा, अर जाणै है चोखी तरां के सैंग जगत में म्हारी कीरत रो पसारो है। अै सैंग ऊचै सुर मे म्हारी सामधरमी रा गीत गावै। गुहिल, सीसादीत अर बापै री खाप रा, रावळ-

राणावा री प्रीत रा, अर मेवाड़ रा सामनां री निभायोड़ी आण रा बिड़द सुणावै। पण बिरथा है औ सब ! कई होणो-जाणो है इण सूं अब ! जो होणी ही, होगी पूरी। होणी आ ई ही कै म्हारो लाल चढ़ग्यो बळि पर, अर हूं रोऊं हूं आज तक भलाई सूं भर्योड़ी बी करणी नै, जिण सारू हलाल करायो मैं म्हारै लाल नै, परायै पूत री रक्षा खातर।

मैं घोटती री हूं इण करणी नैं सैंकड़ां दाण म्हारी काळजै री कोर ! अर घोटरी हूं अब भी अरदास करती थां सूं कै अेक बार ओरू सांभळलै म्हारी अरज। संजोग सूं ओ आखरी ओसर है म्हारा पूत ! अेक दाण ओरू सांभळनै तूं म्हारी आपबीतो नैं। अणमावता उद्‌गारां सूं म्हारो हिवड़ो फाटर्‌यो है म्हारा लाल ! उगळ जावण दे म्हारा इणां उद्‌गारां नैं अेक बार, जिण सूं शान्ति मिल सकै, म्हारी कळपती काया नै। आ करणी म्हारै पूत री कीरत बढ़ावण आळी है, मैं चोखी तरां जाणूं हूं इण नै। कदास बी री ई है आ करणी।

आछी तरां चीतो आवै है मनै बो दिन, जद राणा सांगाजी नैं महीनो भर भी नई हुयो हो सुरग सिधार्‌या। खेत हांकण नैं गया हा म्हारा धणी रामोजी हळ लेर। चित्तौड़ सूं दिल्ली जावण आळी गैल माथै बस्योड़ी नगरी मे रैवा हा म्हे आपरा सगा सबंधियां साथै। बरस डचोडेक हुयो हो म्हारा पीळा हाथ हुयां, अर म्हारी झोळ्या रामजी रो रमकडो, म्हारो लाल खेलै हो उछळतोर कूदतो, भरतो किलकार्‌यां। माथै मटको नैं कड़िया कीकै नै उठायां पणघट पर जावै ही मैं, कै सोनै रा गैणा सूं लदाबद भळभळातै माळआळो अेक राजवी पवन वेग सूं घोड़ो दोड़ातो आयो सामी तणकारी लगाम नैं . .घोड़ो थाम्यो अर बजातां बांसो सुरीलै सुर मे, हाक मारी . ....'मैं राणाजी रो दूत हूं ....राज री घोषणा सुणावण नैं आयो हूं ... सांभळो, चेतो लगार साभळो इण नैं अर आजमावो आपरा भाग नै कदास चमक उठै ओ इण ओसर पर । महान सांगैजी री राणी करमेतां जण्यो है टाबर.... मा मांदगी सूं जूझरी है... इण सूं टाबर नै धावण सारू अेक धाय चाईजै छतराणी . असल छतराणी, रजपूती रो रगत वैवतो हुवै जिण री धमणिया मे। जेज मत करो पुगो, वेगी ई पुगो आप-आपरा टाबरियां साथै चित्तौड़ रै रावळै। जावो, थे भी जावो, कदास थांरो ई चेत जावै भाग अर मिल जावै ओसर -धावण नैं धाय रै पद रो ओ गौरव।' . ... उड़ग्यो केकाण पाछो पवन वेग सूं अर लुकायो असवार साथै अंबर में उड़ती काळी-पाळी अर धोळी धूळ री बादळियां मे। कदास परो गयो हो.... ....पड़ोस रा गांवां में ढूंढो फेरण नैं धाय री खोज सारू। × ×

राज दरबार जुड़र्यो हो, मंत्रणा कररया हा भेळा होयर मोटा-मोटा सूर-सामंत। जो पूळ मैं, म्हारै ई बंस री दो दूजी गोरड़्यां सागै डाण भरती सांडयां माथै असवार होयर पूगी रावळै. . उठै म्हा पैलां ई पचासां गांवा सूं आयोड़ी गोरड़ियां री भीड़ देखी, मैं जो आई ही आप-आपरा छोरा-छोर्यां नैं कड़िआ उठाया, जांच करावण सारू आपरा दूध री, कै कुण रो दूध है सैं सूं सक्कड़, अर कुण री काया पर झिळमिळार्यो है किस्मत रो रूडो अर रूपाळो सैनाण। लजाती'र सरमाती, होळै-होळै बांतां करती मैं रावळै री डयोढी मे वड़ी। राणी मा ऊभी ही सामैं आपरै बूढळै पुरोहित सागै, दूध-पूत अर गोरडिया रा भाग री जाच करण सारू। भाई ओ भाई म्हारी किस्मत! तनैं रूड़ी कैयूं कै कूड़! मैं बानैं सक्कड अर साव निरोगी लागी अर चींतू हूं आज तांई बी वूढळै पुरोहित रा बोल, कै म्हारै जोवणै कांधै झिळमिळतो लाछण कररयो हो सिद्ध मनैं भाग आळी—जूनैं पुराणै बिसासा सूं। पणन्तरा लोभी, लालचो अर दुष्ट कागला, जे पोघो हो आपरो मावा रो बोदो दूघ, कांव-कांव करता ई रैया अर म्हारो लाल, अब राणो हो सैंस मेवाड़ री मोम रो। म्हारो वरण होग्यो अर नान्होसोक टाबर आण पड्यो म्हारी ज्वोळ्यूं, गरमावण अर धावण सारू, अर जिंदगीर मौत रैं मंझ हीडतै जीवण नैं पाछो पावण सारू।

म्हारी जामणजाई, जो आई ही म्हारै लारै अजमावण नैं आपरी भी किस्मत, झेलियो म्हारै लाल नैं अर लेगी आपरै घरा आपरै टाबर सागै पाळण नैं। पण, धीजग्या जद टाबर अर होग्या मादी पराई मावां री छाती रा, राणी करमेती राख्यो प्रस्ताव म्हारै लाल नैं पाछो रावळै लावण रो आपरै कुंवर उदैसिंघ रो भायलो बणावण सारू। आदरतो राणी रो आदेश, बुला लियो मैं म्हारै पूत नैं भी रावळै। साथ-साथ रमता, खाता-पीता, रोता-हंसता अर दिखावता हेत बिना झिझक रै, सुख-दुख बटावता आपस मे, धीरै-धीरै हिळ-मिलग्या परस्पर दोई। टाबर री सैंग रमता में म्हारो लाल, म्हारो जसवंत सैं सूं आगै रैवतो। सरदार हो बो कुंवर री नजर मे सब रो। सूरवीर, साचो, सक्कड़ अर सतवादो हो बो अर अक्कल में सब सूं आगै। अर कुंवर .... कुंवर मादो रैवतो सदा ई, निमळीर बोदी ही बी री काया। तो भी गजब री अेकरूपता पनपी बा दोई मायला मे, अर दोई जोड़ला लागता। दोई रजपूत हा, अेकई भात रा, दोयां री रगां मे दौड़र्यो हो म्हारो दूध, अर सजोग सूं बेमाता दीधी हो बानैं उणियारो अेकसो, इणी बंस रै किणी पुराणै पुरखै रो।

म्हारै हळवदतै धणी नैं भी रावळै ले आया बै, घणै मान, घणै आदर,

अर घरप्या वांनैं मोटयार राणी रै रक्षक रै रूप। खेतोर मळो री रुखाळी छोड़र रावळै में राणी री रुखाळी भादरतां पण राजी हा वै। पण राजी हा वै थापरै भंगां मावध लटकातां अर ढाल-तरवार थाम्यां रावळै री मोज री जिन्दगी बितातो।

कियां वर्णन करूं मैं राणी करमेती रै उणियारै रो, जिण मे बीरै समतळ मन सागै ई गजब रो रूप दीयो हो बेमाता .... कितरो रूड़ो अर कितरो रूपाळो कै मोटयार होतां भी टावर ई लागै हो बा—फेर भी कांपतां किणी भय सूं कदेई नी देखी मैं बीनैं। बीं रो निमळो छाती में वास हो किणी करड़ै, कठोर अर साहस भाळै काळजै रो। कितरी भोळी, कितरी मधुर अर कितरी मोहाळू मा ही बा। मैं कितरो प्यार करै हो बीं नै बीं बगत भापरो संग सगनां सूं अर भाज भी प्यार करूं हूं बी नै बिया ई तो, भो तो बा म्हारै हिवड़ै में रात दिन पनपती घोर घिरणा रो कारण ही, बिसी घिरणा जिणनैं जामण, कांरी जामण, म्हां जिसो जामण ई समझ सकै।

भांधी-भंधड़, झगड़ा-झाटां, भापसी फूट अर कळह सूं भर्‌योड़ो हो बो जुग। रात-दिन फेरबदळ होतो रैवतो हो जमानैं में। जेज कोनी लागै ही राज उळटतां अर पाट पळटतां। राणा सांगाजी सरस्या प्रभुभतां मन ई मत कै बांरा बिस्वासू सामत ई घो रो देग्या बांनैं अर मिलग्या भ्रणजाणं देश अर मणबिसासो जात मैं जलम्योड़ै सुलतान सूं ... भापरी मायड़-भोम री छाती में छुरी घोंपता। . महान सांगाजी रै पाटवी .. गंवार रतनैं, कर दो हत्या भापरै ई सगै बूंदी रै राव री, बसन्त री भाखेट री बेळा ....भर मरतां-मरतां उतारग्यो राव भी रतनै री नागो छाती में भापरी तरवार।... मेवाड़ गी गादी मार्थ भव विक्रम बैठ्यो भगगुण्यो घुण पोष्यां रो, बेमाता रो भारी स्राप। .. काया सूं काचो अर किस्मत सूं कांदो हो बो फेर भी हो जोगो भर चोखो मिनख। मेवाड़ रै सरबनास गी मूळ, फूट री ताकत नैं जाणै हो बो चोखी तरां भर पिछाणै हो बां तोपां भर बन्दूकां री ताकत नै जिणां भागै बी रै देश री समताहीणी सेना रो सरबनास हुयो हो देखता ई देखतां, कुछेक ई पुळां मे। बींरो जूने-पुराणै भावधा सूं सझ्योड़ो भेक-भेक जोधो बेसी हो भब भी कितराई चतराई बदूकचिकां सूं। भापरै गौरव भाळै कुळ री मरजादा सारू चौकड़ी भरतै केकाण पर चढ्योड़ो कोसीस कीधी बो भापरा जोधां नैं समझावण री, कटार भर कुंता छोड़र तोपा भर बंदूकां पकड़ावण री अर घोड़ा सूं हेठै उतर'र भापरा खारड़ा री खुरताळां चमकातां भापरो भमर दिखावण री। पण निपट नटारो करता भंग करदो सैंग सरदार .भापरी भनुशासन री भाण नैं भर परम्परा सूं चालतै भायोड़ै राणावां रै मान नै।

सैंग निरासावां सूं भरथोड़ी आपरी उमर सरदारा सूं कदम कदम पर जूझतां अर आपरी गळतियां खोजतां बिताई विक्रम। मड़कगी बसान्दर समस्त सामन्तां रै काळजै अर चढग्या सैंग घोड़ां माथै उद्याळो करण सारू। मागग्यो राणो बी डरतो विद्रोह सूं अर देखता ई देखतां टूट पड़ी अणाचोक तुरकां री फोजां री फोजां अर घेर लीधो दुर्ग नै- फासतां म्हांनै पिंजस में फस्योड़ै मूंदरै ज्यूं।

उडीकता रैया म्है बाट रैण तांई अर चिपायां री राणी मा उठा तांई आपरै लाल नै काळजै। बा अब झिला दियो कुंवर नै म्हारी झोळ्यां अर झाल लियो मैं बीनै म्हारा लाल रै सागै गढ सूं बारै निकाळण सारू। सोच ई री ही मैं कोई जतन कै पड्या सळ पड़दै माथै अर मोड़्यो जद मैं मूंडो तो देखी राणी नै पछाट खायर धरण पर पडतां। होळै सूं मुंडी मैं पाछी अर कैयो राणी नै—'म्हारी राणी! जीजी म्हारी!! मैं करूं हूं अरदास थांसूं म्हारै सागै आवण री। वै थारै लाल रो हरण करणो चावै है अर अठै रैवता वै कर देसी थारी भी हत्या बी रै खातर। आ, म्हारी जीजी! आ, म्हारै सागै आ! ओ गढ अबै आपां जिसी अबळावां रो रक्षाथळ कोनी रैयो। अठै ठैरण सूं तो कम रगताळू रैसी म्हारै साथै आवणो, अर थारो ओ लाडलो पूत भी रैसी थारै ई लारै, थारी आख्यां सामैं, जिणरै खातर िं तरा कष्ट उठाया है थे। इणसूं बधर कई होसी संतोष री बात थारै वास्तै।' अेक सूं सिसक अर उलड़ती उसास कपा दी बो री काया नै पर उठै बा कैती होळै सूं... ...'पन्ना! क्यूं करै है किणी र तरै री बात, रजपूत हां आपां, अर मैं राणी हूं थां सबा री। म्हारो ठोड़ अठै है म्हारी रैयत मे .. किया जा सकूं मैं म्हारी पन्ना! इण नैं छोड़र। जे अै तुरक तोड़ भी दे गढ री पोळा नैं, अर मांगता कोट रा कांगरा आण पूगै इण गढ माय, तो भी म्हारी इज्जत, म्हारो सतीत्व सुरक्षित रैसी धणां गिणती रा हाथां में .... जो गिणती रा भलै ई होवो, सामरथ राखै है बैरी नैं कणकणती रा करण री अर होड़ पाळै है वै बैरी रा बीस हजार जोधावां सूं। मोत रा मारग नै मैं चोखी तरां पिछाणूं म्हारी पन्ना! बढूंली मैं इण पर हरख अर उमाव रै सागै, हमतीर मुळकती, नाचतीर कूदती। ओ मारग ले जासी म्हनै म्हारै सावरियै रै देश, अठै उडीकरया है बै म्हारी वाट घणी देर सूं। जा, अब परी जा म्हारी पन्ना! छोडजा मनै म्हारै भाग पर, अर पाळ म्हारै काळजै री कोर इण नान्हैं कुंवर नैं, छाती-रै-चिपाया आपरै लाल रै सागै।' ... माथो झुकायो मैं, चरण छूया अर चाल पड़ी आपरी गैल माथै, पकडाता आगळ्यां आपरा कुंवरां नैं, अणजाणै देश कानी। फेर कदेई न देख सकी मैं म्हारी इण

जिंदगी में करमेती रो उणियारो, रूड़ो अर रूपाळो, जिण में टिमटिमाता दो-दो मोटा नैण देख लीधा हा मापरै यावण माळै दुरभाग नै।

गिणती रा ई दिन बीत्या हा म्हानै वीछुड्यां अर राणी कूद पड़ी बळती लाय में तेरा हजार गोरड़ियां नै साथै लेयर। कर लीधो वा जोहर अर जूझ मरण जूंझार केसरिया करनै—तुरकां सूं जूझतां रण में। हा उठै कईक मिसा भी जो धूजण लाग्या थर-थर करता, बीडरता अर धाड़ पाड़-पाड़र रोवता। पण म्हारी राणी, सती करमेती कदेई न रोकी आपरी नचीती गाढ निस्चैमाळी नजर, विजयाळू मुळकण अर हंसोड़ सुभाव नै, जो मुवाणम्यो वी नै मोह, ममता अर दयाहीणा सळा रा मणघड़ लाकडां माथै, जाणै सूती हुवै होयर नचीती कोई नुईं नवेली नार परणेत रै पलग माथै पैलपोत री रात। सदा शान्ति दीजै म्हारा नाथ, सती री अभीती आत्मा नै।

वी ई रात उठाया टाबरां नै मळसाई नींद सूं अर लेगी बांनै धोराऊ कानी, कोट कनै, जठै उडीकै हा म्हारी बाट म्हारा धणी, रामोजी। सींदरो हो सतरी कनै, जिण सूं उतार दिया वो म्हानै कोट हेठै, किलै बारै। कांधै तोवयां दो ई टाबरां नै उतार्या म्हे डूंगरी रै ऊबड़-खाबड़ उणियारै सूं, घोरंधार मांझल रात मे लुकतार छिपता, लेता ग्रोट झांक-झंखाड़ार चाठां-भाटां री मगरी री तळेटी में। पूगग्या म्हे रामोजी री साथ सूं ग्रोफळ मारग रै ग्रासरै तुरक छावणियां रै परलै पार, जठै उडीकै ही म्हारी बाट बूळयै रै रूंख हेठै बध्योड़ी सांडयां दो। जेकाई बांनै अर होवतां असवार, पलक मारता, लगाई म्हे रड़ी सो-सो कोसां ताईं ग्रेक घड़ी में। भागया, भागता रैया रात भर, दिन भर अर तीजै दिन पूग्या म्हे कुंभळमेर, मेवाड़ रै ग्रापतकाळ रै राजस्थान। लियां रैया ग्रासरो उठां रो, जठा तांईं भड़क न गी बसान्दर तुरका रै बारूद मे ग्रापोग्राप ग्रळगी जायर।

केवण दूयो का'णी इयातकारा नै रजपूता री परपराऊ सुरक्षा रै लांबै इतिहास री, जो ग्राफत री बेळां सदा थोथी ई सिद्ध हुई। केवण दूयो बांनै कांधै सूं कांधो भिड़ार रण में जूझता वीरा'र वीरांगणावां री वातां अर ग्रापरा गांव, पाळिया ग्रर परजा नै बचावण सारू ग्राशा निराशावां रा झाळरा मे गिरता-पड़ता मिनखां नै ग्रापरी ग्रसाधारण योग्यता सूं ग्रासरो देवणमाळी म्हारी राणी रा चरित री का'णियां। .. पण हाय! सब बिरथा है!

राणी मर जाणी चावै ही लाजां मरती, फेर भी वा भेज्यो ग्रापरै दूत नै, राखी रै कार्व धर्म सागै सामता सारू ग्रणबिसासी ग्रर म्लेच्छ दिल्ली रै सुलतान कनै, ग्रधिकार सागै, जतावतां जामणजायै रो संबंध। मूरख कवि

म्हारै जसवन्त री। म्हारो लाल अब राजकंवर हो अर उर्दीसिंग बीरो चाकर अर रम्मत रो मोड़्। जसवन्त निभार्‌यो हो पतराई सागै आपरो राजसी अभिनय अर उर्दीसिंग कर दियो साव समर्पण आपरै अस्तित्व रो आपरी इच्छा सूं। म्हे अब भी जो रैया हा सीळसोम री जिंदगी। जुग-जुग जीवै म्हारो कुंवर! कदे-कदे ई मनै लागतो कै अेक छांवळी म्हारै पसवाड़ै होयर निसरगी, परसती म्हारो हाथ अर म्हारो माल, गाळ्यां काढ़ती। प्रेत-आत्मा ही बा कोई जो कर री ही पैरवी अेक जीवतै मिनख री। बी रै प्रभाव नै परै नाखती सुणी-अणसुणी करगी मैं अर लाड लडाया म्हारै लाल रा घणै कोड सूं।

संतोस कर म्हारी राणी! सतोस कर! म्हारै अपराधां री सजा बांरा अनुपात सूं बेसी ई होणी चाईजै। इण सूं ई तो हीडता रैया हां म्हे अणासरै घर अर घरहीणां होयर आडावळ रा माखरा अर खादरां में। विक्रम सीम न सक्यो कदै भी बीरै देस मे हुयोड़ै सरबनास सूं अर रुक-रुक कर आवता झटकां सूं बगत पड़्यां सदा दुरभागी ई रैयो बो। सैंग सामंत कर दियो उछाळो अर बडबडाया जोर सूं। अेक दिन भर्‌यै दरबार विक्रम, सैंस मेवाड रो धणी विक्रम, दीयो निरणो मूरखता प ...
किणी बात पर, अर कीधी आपद इण पर श्रीनगर रो ठा...
आपरै अधिकार सूं। रीस खातो उठ्यो राणो उतावळ सागै अ
अर मार दी झापट बूढळै रै सळां भर्‌योड़ै गोरै गाल
टाबर री अर बा भी अेक कायर री अर ऊपर सूं बेरुतो
सामत रै सागै जो कदेई दियो हो आसरो सांगा नै
सागा नै जो विक्रम रो बाप हो अर सम्राट हो सैंग रा...
सक्या कोई भी इणनै उछळ पड़्या सैंग आप री
दियो राजमहल अर नीसरग्या बारै उछाळो करण ...
माथै, पड़दै रै पसवाड़ै उडीकती बारै, जद कहर्‌यो हो
हीळै सरदारा नै ..'हालताई तो कोरा फूल सूंध्या है ...
पळ तो अबै चाखणा है आपा नै।' कड़क उठी ...
मूंवारां ताई। हाथ बांधया मोरां पाछै थूकयो
लाग्यो मन ई मन चीतल ज्यूं घुरांवतो ।
लेस्यां चोखी तरां इण रो स्वाद आपा कालैई।'
रगां रो देखतां जोत वी बूढळै रा नैणां सूं नीसरती
हो अपळक दुरभागी राणं रै भाग पर। ऊमर में ...
पण जाणगी मैं चोखी-तरां कै मोत रै मूंडै ...
साधता बेवार मूरखता रो हर घड़ी, हर पुळ।

कदेई सोच तक कोनी सकी मैं कै विक्रम रै भाग पर मंडारतो मोत रै आमैं रो ओ मडाए फाट पड़सी म्हां पर भी आपूआप—अर न मैं सोच ई सकै ही कदेई कै म्हे भी सीरी हा वीं रै घोर सताप में। व्यापगी शाति उठै अर दिन पाचेक ई हुया हा म्हांनै जिन्दगी री सूदीसादीर बांकी-डोढी लीगेटी पर चालतां कै अेक दिन मागफाट्या ई मूं अधारै ऊभी ही मैं पलंग पथरणा छोड़र भरोखै मायं अर म्हाळो हेठै तो पैल्पोत री नजर सागै ई ओळख्यो मैं करमचंद नै करतां होळै-होळै कानांफूसी उळझ्योड़े केसां माळै, कोयलै ज्यूं काळै उणियारै माळै अेक दैत सूं, जिरारै काळै-कळूटै उणियारै पर चमकै हा भरणभीता दो नैण भाळां उगळता—अर लटकै हा अंग-भंग पर आवघ भांत-भांत रा। मायै मोड़ बांध्यां म्हाळतो आवै हो वो हर छिण हर पुळ महला री भीता पर भितरी तीखी, भितरी गाढ अर भितरी उतावळी नजर सागै जाणै कदेई न देख्या वो इणां नै इण सूं पैली अर ओ सैंग दिरस नुंवो ई हुवै बी सारू। चकराई मैं देखतां ई वींनै—'कुण हो सकै है ओ मानवी ? नेचैंई अजनबी है ओ—कोई पैलपोत ई आयोडो इण दुर्ग में।' बी ई पुळ परसतां होळै सूं हाथ म्हारो, धीरै सूं बोल्या म्हारा नाथ... .. 'देख ! पन्ना देख ! इण घोळै कागलै अर वी काळै कांवळै नै देख, जो लड़ा रैया है चूंचा आपरी—परस्पर। जाण पड़ै कै आनै आरी है बास कठेई अड़ैभड़ै ई सडते मांस री। विक्रम नै राखणी चाइजै नजर इण पर।' पूछ्यो मैं, 'कुण है ओ' जद उत्तर हो म्हारै घणी रो 'पन्ना ! खवासण रो जाम है ओ बणवीर, पीथल रो पूत अर घणी गिरवा रो। हाऊ नीं है इण रो अठै आवणो सांगाजी रा बंस सारू।' ...निरखता रैया म्हे वांनै उठै ताई बिछट न ग्या जठै तक आघा जार। .. 'पन्ना ! जे ओ बणवीर कर दे हत्या विक्रम री तो कई तूं कांपती नई, थर-थर करती बीडरती, पाळ-पोसर मोटा करयोड़ा थारै घरमपूत अूदै री जिंदगी खातर।' ...... पूछ रैया हा रामोजी अर उत्तर हो म्हारो.......'भितरो साहस कर लेसी बो म्हनै पतियारो कोनी'.. ... पण कापग्यो म्हारो काळजो पड़ूत्तर सागै अर आवण लाग्या अणाचोक, भय सूं मरयोड़ा निरासार दुरासावां रा भाव टकराता म्हारै हिवड़ा सूं... ... 'कई साची ई कर देसी हत्या ऐ म्हारा नरमोल्या होसा नानकियां री....... सांगाजी री इणां आखरी ओलादां री भी.......मेवाड़ री गादी रो घणी अेक गोलै नै, अेक पासवानियै नै बणावण सारू ? सामघरमा है ऐ सगळा सामंत ...... कदास नई करैला अै भिसो दुस्साहस, नई करैला बै कपट आपरै कुळ सूं....... भितरा लाजबिहूणा होर।..... पण... .. पण जे बै कर ई ले दुस्साहस पन्ना ! तो कई कर सकैली तूं म्हारा इण नान्हां टाबरिया नै, म्हारै काळजै री कोर इण नानकियां नै आं कसाया की कटारां री

म्हारै जसवन्त री। म्हारो लाल रूव राजकंवर हो अर उदैसिंघ बींरो चाकर अर रम्मत रो मीढ़ू। जसवन्त निभार्‌यो हो चतराई सागै आपरो राजसी अभिनय अर उदैसिंघ कर दियो साव समर्पण आपरै अस्तित्व रो आपरी इच्छा सूं। म्हे अब भी जी रैया हा सीळखोम री जिंदगी। जुग-जुग जीवै म्हारो कुंवर! कदे-कदे ई मनै लागतो कै अेक छांवळो म्हारै पसवाड़ै होयर निसरगी, परसतो म्हारो हाथ अर म्हारो भाळ, गाळ्यां काढ़ती। प्रेत-आतमा ही बा कोई जो कर री ही पैरवी अेक जीवतै मिनख री। बीं रै प्रभाव नै परै नाखती सुणी-अणसुणी करगी मैं अर लाड लडाग म्हारै लाल रा घणै कोड सूं।

संतोख कर म्हारी राणी! सतोख कर! म्हारै अपराधां री सजा बीरा अनुपांता सूं वेसी ई होणी चाईजै। इण सूं ई तो हीडता रैया हां म्हे अणातरै घर अर घरहीणां होयर आडावळ रा भाखरां अर खादरां मे विक्रम सीग न सक्यो कदै भी बीरै देस मे हुयोड़ै सरबनास सूं अर रुक-रुक कर आवता झटकां सूं बगत पड्‌यां सदा दुरभागी ई रैयो बो। सेंग सामंत कर दियो उछाळो अर बडबड़ाया जोर सूं। अेक दिन भर्‌यै दरबार विक्रम, सैस मेवाड़ रो धणी विक्रम, दीधो निरणो मूरखता सूं भर्‌योड़ो किणी वाद पर, अर कीधी आवद इण पर श्रीनगर रो ठाकर करमचन्द आपरै अधिकार सूं। रीस खाती उठ्यो राणो उतावळ सागै आपरी गादी सूं अर मार दी झापट बूडळै रै सळा भर्‌योड़ै गोरै गाल माथै। पाप! अेक टाबर री अर बा भी अेक कायर री अर ऊपर मूं बेहत्तो बेधार अेक जिसै सामंत रै सागै जो कदेई दियो हो आसरो सांगा नै आपरो झूंपड़ी मे, बी सांगा नै जो विक्रम रो बाप हो अर सम्राट हो सैंग राजस्थान रो। सह न सक्या कोई भी इणनै उछळ पड़्‌या सैंग आप री आसंद्यां सूं, छोड़ दियो राजमहल अर नीसरग्या बारै उछाळो करण सारू। मैं ऊभी ही गोखड़ै माथै, पड़दै रै पसवाड़ै उडीकती बारै, जद कहर्‌यो हो चूंडावत कानजी होळै-होळै सरदारा नै ..'हालताई तो कोरा फूल सूंघ्या है ठाकरां, कोरा फूल—कडा फळ तो अवै चाखणा है आपा नै।' फड़क उठी करमचंद री मूंछ्यां अर तणगी भूंवारा ताई। हाथ बाथ्या मोरां पाछै थूक्यो बो जमीं पर अर मुळकण लाग्यो मन ई मन चीतल ज्यूं घुर्रावतो । 'कड़ा कै मीठा...... चाख लेस्या चोखी तरा इण रो स्वाद आपा कालेई।' सीळो पड़ग्यो रगत म्हारी रगां रो देखता जोत बी बूढळै रा नैणां मूं नीसरती घोर चमक री, जो पड़ री ही अपळक दुरभागी राणै रै भाग पर। ऊमर मे हाल ताई टाबर ई हो बो पण जाणगी मैं चोखी-तरां कै मोत रै मूंडै ऊभो म्हाळै हो वो टुकर-टुकर, साचता बेधार मूरखता रो हर घड़ी, हर पुळ।

कदेई सोच तक कोनी सकी मैं कै विक्रम रै भाग पर मंडारतो मोत रै आभै रो ओ मंडाण फाट पड़सी म्हां पर भी आपूआप—अर न मैं सोच ई सकै ही कदेई कै म्हे भी सीरी हां बी रै घोर सताप में। व्यापगी शाति उठै अर दिन पाचेक ई हुया हा म्हांनै जिन्दगी री सूदीसादीर बांकी-डोढ़ी लीगेटी पर चालतां कै अेक दिन मागफाट्या ई मूं अधारै ऊभी ही मैं पलंग पथरणा छोड़र झरोखै माथै अर न्हाळी हेठै तो पैलपोत री नजर सागै ई ओळख्यो मैं करमचद नै करतां होळै-होळै कानांफूसी उळझ्योड़ै केसां आळै, कोयलं ज्यूं काळै उणि-यारै आळै अेक देत सूं, जिणरै काळै-कळूटै उणियारै पर चमकै हा अणभीता दो नैण भाळां उगळता—अर लटकै हा अंग-अंग पर आयध मांत-मात रा। माथै मोड़ बांध्यां न्हाळतो जावै हो वो हर व्हिण हर पुळ महलां री भीता पर अितरी तीखी, अितरी गाढ अर अितरी उतावळी नजर सागै जाणै कदेई न देख्या बो इणां नै इण सूं पैलो अर ओ सैंग दिरस नुंवो ई हुवै बी सारू। चकराई मैं देखतां ई बांनै—'कुण हो सकै है ओ मानवी ? नेचैई अजनबी है ओ—कोई पैलपोत ई आयोड़ो इण दुर्ग में।' बी ई पुळ परसतां होळै सूं हाथ म्हारो, धीरै सूं बोल्या म्हारा नाथ... .. 'देख ! पन्ना देख ! इण धोळै कागलै अर बी काळै कांवळै नै देख, जो लड़ा रैया है चूंचा आपरी—परस्पर। जाण पड़ै कै आनै आरी है बास कठैई अड़ैभड़ै ई सडते मांस री। विक्रम नैं राखणी चाइजै नजर इण पर।' पूछ्यो मैं, 'कुण है ओ' जद उत्तर हो म्हारै धणी रो 'पन्ना ! खवासण रो जाम है ओ बणवीर, पीथल रो पूत अर धणी गिरवा रो। हाऊ नीं है इण रो अठै आवणो सागाजी रा बंस सारू।' ...निरखता रैया म्हे बांनै उठै तांईं बिछट न ग्या जठै तक आधा जार। .. 'पन्ना ! जे ओ बणवीर कर दे हत्या विक्रम री तो कंईं तूं कांपैली नई, थर-थर करती बीडरती, पाळ-पोसर मोटा करयोड़ा थारै धरमपूत अूदै री जिंदगी खातर।' ...... पूछ रैया हा रामोजी अर उत्तर हो म्हारो.......'अितरो साहस कर लेसी बो म्हनैं पतियारो कोनी'... ... पण कापम्यो म्हारो काळजो पड़ूत्तर सागै अर आवण लाग्या अणाचोक, भय सूं भरयोड़ा निरासार दुरासावां रा भाव टक-राता म्हारै हिवड़ा सूं... ....'कईं साची ई कर देसी हत्या ऒ म्हारा नरमोल्या होसा नानकियां री........सागाजी री इणा आखरी ओलादां री भी... ...मेवाड़ री गादी रो धणी अेक गोलै नैं, अेक पासवानियै नै बणावण सारू ? सामधरमा है ऒ सगळा सामंत ...... कदास नईं करैला ऒ अिसो दुस्साहस, नईं करैला बै कपट आपरै कुळ सूं... ... अितरा लाजबिहूणा होर।... . पण.. . . . पण जे बै कर ई ले दुस्साहस पन्ना ! तो कईं कर सकैली तूं म्हारा इण नान्हां टाब-रियां नैं, म्हारै काळजै री कोर इण नानकियां नैं आं कसायां की कटारां री

तीखी धारां सूं बचावण खातर।' नेचैई आ अेक साच ही ....प्रणी मोड़ी परख पाई जिणनैं मैं। कदरो ही पसरग्यो हो आळ च्यारूं कूंट, कई तो दातार कंई मोटयार, फंसग्या सैग इण मोत री फांदी में .. ...अर म्हे . ....कई न कर सक्या म्हे वांरै बचाव सारू। चोपता रैया म्हे मणमणा होयर बिल-खतार बीडरता. . . बेमाता री लीला री इण परिणति री वाट देखता।

होळै-होळै वगत बीत्यो ...... सांसा जो म्हे ले रैया हा... ...घणा दुखां सूं घणी आफतां सूं भरयोड़ी ही वा। खटखटायो मैं म्हारै भेजै नैं ...... उळटयो नै पळटयो कोई उपाय निकाळण सारू पण सब व्यर्थ ! सूरज आंथग्यो घड़ी डोढेक मे ई अर पोढग्या टावर दूध-भात खायर अेक ई ढोलयै पर नांखता गळबायां अेक दूसरे रै गळै में। सांमळतीर सोचती री मैं बैठी पसवाड़ै .... कै अणाचोक आई साद भागती भीड़ रा खारड़ां री, खड़गा री खडकावण अर अवर में उड़तै क्रंदण री . अर अणाचोक आंधी-अंधार सूं जुड़ता-उघड़ता कुवाड़ां री खड़क अर उड़तै खारड़ै री धमचक सागै बड़या रामाजी हाफतार नांखता निसासा . .. .बोलता उखड़ती उसासां सागै ... 'बणवीरै कर दी है हत्या विक्रम री अर अबै आरभो है अठी नै ई करतो मन्सूबो मूंदै नै मारण रो। आगळ अटका दी है मैं कुंवाड़ां आडी, कदास रोक सकैली वा बणवीर नै कुंवाड़ां नै भांगर अठा ताईं आवण सूं।... झला दे .. ... मनै म्हांरो लाल झला दे.... लुका लेस्यूं हूं बीनै म्हारै वागै मे अर निकळ जास्यूं कोट बारै इण ई पुळ। बावळै ज्यूं बरड रैयो है बणवीर हत्या री लाळा मूंडै टप-कावतो अर अवसकर मारसी वो आपरै खड्ग सूं सांगा री इण आखरी औलाद नै भी। डर है म्हनै, कठै ई उतार न दे वो मौत रै घाट आपणै जस-वन्त नै भी इणी तरवार सूं। दे दे ....मनै म्हारो लाल दे दे.. .मनै म्हारो लाल दे दे।' पूरा हुया न हुया बोरा बोल कै आई बार .. ....लांबी घण लांबी, किणी कामण रै कंठ री. ....सांभळ चुकी ही जिणनै मै केई दाण इणी राजमहल नै इण सूं पैलां भी। बार ही आ पुळ अर पैलो ई सुरग सिधारया किणी जोधै रै सम्मान री।

आई...... आती गी भगदड़ पगलियां माथै... . मारो पगां री नाद सागै अर टकरावण लागी गुरजां बज्जर होसा सवकड़ किवाड़ां माथै। रड़बड़वा लागी मै अठी-उठी माळियै मे बावळी होयर अर सोच तक भी सकी लाल नै बचावण सारू म्हारै धणी री दियोड़ी राय पर। बळ रैयो हो जीवतो-मरतो गूगळो दिवलो मिलातो सांसा आपरी इण टावरिया री सास सूं। अर जद मैं लुळी ढोलियै माथै तो ओळखी अेक छाया नै नीसरती आर-पार उर्दसिप रै

उणियारै सूं । टकराग्या टिमटिमाता दो निरमोही नैण म्हारै नैणां सूं—ग्रेक रोगी दूबळी पतळी लहराती काया रा । छाया ग्राई ग्रर गी । घुमड़तै दिवळै री लो रै ग्रूगळै उजास में उठग्यो ग्रेक हाथ होळै-होळै उर्दसिय रै भाळ माथै.... ..मुठग्यो हुवै जाणै बी री रिच्छा खातर । 'राणी . ... राणी करमेती ।' पाड़ी वार में जोर सूं ग्रर मुड़गी पाछै । होळै-होळै हालतां होठ छाया रा कह रैया हा ग्ररदास करता ...'पन्ना ! हे म्हारी पन्ना ! बचाले म्हारै लाल नैं' .. ..बावळी होगी मैं ग्रर लुटगी सैंग चेतनावा म्हारी । ग्रणमणीर ग्रमूभती मुड़गी मैं पाछी ....जाणै खोसली हुवै कोई सैंग इच्छावां म्हारी....... ग्रण-बोल्यां उठा लीधो मैं मूंदै नै ग्रर लपेटतां राली में लुकातां उणियारो बीं रो भिला दियो म्हारै धणी नै.... थरथराता, बीडरता, नैणां में गळगळा लावता मूभा हा जो म्हारै सामै । उतरग्या रामाजी उतराध रै गळियारै ग्रर उडीकती री मैं, ऊभी छानी-मानी, गिणती सांसां ग्राखरी म्हारै लाल री, ग्रितरी निर-दयी ग्रितरी निरमोही होयर जाणै म्हारो ग्रर बी रो कोई सम्बन्ध ई न हो । न वो म्हारो पूत हो ग्रर न मैं ई ही बीं री जामण ।

पड़ री ही घात गुरजा री हाल तांई माळियै रा कुंवाड़ां पर । टूटग्यो दरूजो चरमरार ... . ग्रर बावड़गी मगदड़ पाछी, कदास लाजां मरती । चांप, किणी रा पगां री ग्रावती गी ऊपर, नै ऊपर . . हटग्यो पड़दो ग्रेकां कानी ...... ग्रर मूंमो हो वणवीर सामै तोलतां तरवार ऊंची, भरग्यो हो रगत जिणसूं करतो रगद-बगद बी रा हाथ, बी रा भुज, बी रा केस ग्रर बी रै चौड़ै माळ नै.. ग्रर हो री ही बी री ग्राख्या चोळ-बोळी, साव सिंदूरी इण सूं होड पाळती । कड़क्यो बो बेग सूं भादरवै रै मेघ ज्यूं धुजातो माळियै री भीतां ग्रर कपातो म्हारी काया नै....'तूं ई पन्ना, धाय मूंदै रो ? देख ! ग्रठी देख ! ग्रा मोत ऊभी है थारै सामै जे रजेक भी भूठ बोली तो । कठै है मूंदो ?' म्हैं नुंवा लियो माथो ग्रर उठादी ग्रांगळी धूजतै हाथां पलंग कानी । उछळियो बणवीर ग्रणचोक ग्रर खीचतां खोसलो म्हारै लाल री काया सूं, उठाई ग्राव-धाली भुज ग्रर.... खच्च .. .. देखतां सिमटगी काया बेमाता री ग्रेक ई पुळ में । उजड़गी दुनिया म्हारी खिण भर में.. ....फूट पड़्यो फूंवारो म्हारै लाल री काया सूं, छोड़तो छाप सुरंगी सितारां री बी री चोड़ी छाती पर । खुलग्या नैण बी रा सातरी निजर सागै ग्रर मुंदग्या बी ई पुळ सदा-सदा रै खातर । लटकगी नाडकीर गुड़कगी मूंडकी ढीली होयर ग्रर सूग्यो पाछो होळै सूं जियां देखती ग्राई हूं मैं बीं नै सैकड़ां वार गुड़कतां सदा सूं । पण ग्राज बो सोयो है सदा रै खातर, नचीतो होयर . मायड़ रै हिवड़ै नै किलकार्‌यां सूं भरण सारू फेर कदेई नीं उठैलो बो ।

बड़बड़ायो बणवीर, अेक उद्दाम खळखळाटै सागै .. ..'अब राणो हूं मै इणी पुळ सूं इण भोम रो' बावड़्यो बरड़ातोर परोग्यो खड़खड़ातो खारड़ा उतरतो माळियै सूं हेठै। परी गी साद दूर, घणा दूर, डूबती राजमहल री सुनाड़ में। अर छोड़गी बा छाया मी, अस मेली ही जो म्हारी काया नै, म्हारै मन अर म्हारै हिवड़ै नै घणी देर सूं, कराती भान मनै म्हारी करणी रो, जो भागै हो इण रा फळां री लार-लार म्हारै अंतस में। हत्यारो हो मैं. ......मरा नांख्यो मैं म्हारै ई लाल नै... ... सूत्यो हो जो सुख भर नींद, करतो सोरो म्हारो जीव अर म्हारी काया नै। संभळ न सकी मैं........लड़खड़ावा लाग्या पग अर रुळवा लागी रड़बड़ती अेकली, लातां ठोकरा अंधारै में। गुड़ती-पड़ती, खावती तांवरा, पड़गी मैं पिलग माथै अर होगी निढाळ. ......अर परस्या पाव म्हारै पूत रा, होता जार्‌या हा जो सीळा घणा बेग सूं। अणाचोक आयो भाव म्हारै अंतस मे अर झणझणाग्यो म्हारी काया नै बबड़ातां पाछी मनै होस में....... होगी, होणी ही जो होगी जिवड़ा....... बळि मी अब तो पूरण होगी। घणी मूरखता होवैली अब जे थारै लाल रो ओ बळिदान अेंळो ई जावै। होणी चाईजै जाणकारी किणी नै भी कै बळि पर अरप्योड़ो ओ निरदोष टाबर पन्ना रो पूत है।

ओळख्यो मैं म्हारै लाल नै.. ...म्हारै काळजियै री कोर नै..... मुरझायोड़ो मुखड़ो जिण रो, छितरायोड़ो हो रगत बी रीं चोड़ी छाती पर। नाई मैं आभूषण माणक-मोत्यां रा आळै सूं अर बाध दिया बी रै कंठ, बी री भुजा अर बीरा पूंचां रै ओळदोळ। कितरो रूड़ो अर कितरो रुपाळो लागै हो वो.... लीधो मैं बाच्यो बीरै भाळ पर अर असगो म्हारी भावनावां म्हारी उजड़ी आशावां रा घोर उकसावा सूं। आई म्हारै कनै अेक लुगाई डरती बोडरती थरथराती बेग सूं अर उडीकण लागी म्हनै जो बड़बडावै ही सन्निपात मे, बध्योड़ी ही मूठिया म्हारी, कूटै ही छाती, हंसती अर रोती बरड़ाती बावळी ज्यूं ......अर करतो जार्‌यो हो आख्या सूं आपो परनाळो उकळता आसुवा रो। अंतस मे आवण आळै घणा करड़ै तणाव मे भी राख मेल्यो हो मैं बाध्योड़ो अेक रहस नैं, पाळतो हिवड़ा मंझ आपरी वोदी चतराई रै आसरै ......निरदोस रगत बैणो न चाईजै अेळो ई... ....अर कुंवर री रिच्छा खातर करणी चाईजै मनै असी करणी जो भर्‌योड़ी हुवै छळछदम सूं सगळै झानी ......उठा ताई जठा तक पनप न जावै आ झूठ निपट सांच में।

म्हारा भाया! कई कैयो तूं ...."सूरज आंथग्यो"......मैं सोचूं कै पसरर्‌यो है अचरज भर्‌यो उजाळो चारूंमेर अर फूल रैया है फूलड़ा लाल-

पीळा नै धोळा रंग-बिरंगा सैंग चराचर में। मैं देख्या है वांनै काल ई तो अर लेती री हूं वास मीठी-मीठी बी री सांसां री सागै जोबन काळ री इण जोरणायी छाती में। क्यूं दाबै है म्हारो हाथ...... अर क्यूं बोलै है बोल म्हनै ? लेवण दे म्हनै अणत शांति। सांभळ... ....पैली सांभळ म्हारा बोल, पूरी करूं हूं मैं म्हारी का'णी। आ आखरी बगत है म्हारा पूत जद कैरी हूं तनै हेत सूं।.. ... वीं रात वैंभुण्यो हो सळो, राजसी ठाठ सूं, काठ रो, अर पोआयो हो बी पर घणै मान घणै आदर म्हारै लाल नै . राणावां रै जोग सैंग सस्कारां सागै लगायो वै लांपो। देखती री मैं अर देखूं हूं अब ताईं भळ-हळती झाळां अर घुमड़तो धुंवाड़ो ....अेक लहराती लपट, उड़ै ही जो सुरग तांई सरंग तक। न्हाळ म्हारा लाल न्हाळ ! सगळो जगत जगमगा रैयो है सतरंगै उजास सूं। कितरी स्वादू अर सोरमआळी है इण फूलां री बास। व्यापरयो है उजाळो म्हारै ओळदोळ अर लागै है म्हनै जाणै होगी मैं मोटयार फेर सूं। म्हारी कथा....बणगी अब लहराती घुंघराळी धुंधाड़ै री बादळी। बादळी .. उकेरती अेक भिळमिळतो उणियारो, भागती सरपट, हेठै ढाळ सू सतरगी उजास सागै। कितरो रूड़ो, कितरो रूपाळो भिळमिळतो उणियारो है वीं रो....सुरंगो सितारा ! म्हारा लाल ! म्हारा लाल !!

मरतियाजी री जीवण-लीला उणां री 61 बरस री ऊमर में संवत् 1971 मे इंदौर में समाप्त हुयी।

(2)

मरतियाजी रै जीवण री सब सूं बड़ी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य री सेवा। उणां साहित्य नैं समाज सूं रत्ती भर भी जुदो कोनी राख्यो। राजस्थानी जन-जीवण रै स्तर नै उणां आंख्यां खोलनै देख्यो, नै देख्यो कै राजस्थान री जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळां नै लोग हीण दीठ सूं देखै है। राजस्थानी जन री आंख्यां खोलण सारू उणां कलम उठायी अर लोगां नै दरसायो कै आपां रो समाज रसातळ नै जाय रैयो है, 'मारवाड़ी' नांव री महत्ता घट रैयी है और आपणी भाषा री तो लुटिया ही डूब रैयी है!

गैराई सूं सोचणै पर उणां नै राजस्थानी समाज री अपमानजनक अवस्था रो मूळ कारण अंत-पंत ओ लाग्यो के समाज में अजै तांई अशिक्षा रो घोर प्रसार है। इण नैं मिटायां बिना समाज सुधरण रो कोनी, मारवाड़ी 'मारवाड़ी' ही रैसी। शिक्षा रै प्रचार-प्रसार सारू उणां जनता री बोली नैं ही माध्यम बणावणो ठीक समझ्यो। मातृभाषा सूं आछो दूजो भाषा किण तरै हुय सकै है? उणां री मीट मे आ बात आयी कै 'मारवाड़ी' रो उद्धार मारवाड़ी भाषा ही कर सकै है—

"मारवाड़ी भाषा आपणी मातृभाषा छे। मारवाड़ी भाषा आपणी बोधदात्री छे और मारवाड़ी भाषा आपणी स्त्रियां की सुधारकर्त्री छे। म्हारो तो सिद्धांत छे के आषा लोगां को लक्ष्य आपणी मातृभाषा मारवाड़ी कानी नहीं रहणे सूं आपणो समाज हाल तांई इणी हीन दशा मांहे पड़्यो हुयो छे। मारवाड़ी भाषा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाठशाळा तांई भी पूग जाती तो घणाखरा मारवाड़ी सरदार विद्वान बण जाता। आप ... भाषा ने हीण समझणे सूं आपणो उद्धार [illegible] हो सके?"

कोनी नहीं। छोटी-मोटी कोई पुस्तक वणाय ने सरदारां के सामने राखणी तो खरी। देखां भला, ग्रादर होवे के ग्रनादर होवे।'

मातृभाषा में रचना करण री उणां री इच्छा इण कारण भी ही कै ग्रशिक्षित मारवाड़ी ग्रनै उणां री लुगायां तो इण रै ग्रलावा भारत री दूजी भाषावां नैं जावक-ई को जाणैं ही नी, फेर उणां भाषावां में लिखण सूं मारवाड़ी समाज नै कांई फायदो ? ग्रेक ग्रौर भी सबळ कारण राजस्थानी में लिखण रो उणां ग्रो बतायो कै उण समै इण भाषा रो साहित्य दूजी भाषावां रैं साहित्य सूं जावक ही थोड़ो लिख्यो जा रैयो हो। राजस्थानी रैं गौरव नैं भी दुनिया रै सामनैं लावणो हो। 'केसर-विलास' री भूमिका में उणां लिख्यो है—

'ग्रापणो नोकोटी मारवाड़ ग्रौर मारवाड़ी बोली कठो कें ग्रधेरा मांहे पड़ी छे, सूं ग्राप जाणो नहीं कांई ? ग्रग्रेजी तो रैवा दयो पण बंगाली, गुजराती, मरेटी, हिन्दी कानी तो जरा नजर करो, किशा-किशा ग्रंथ इणां भाषा मांहे तैयार हुवा छे ग्रौर हो रह्या छे तिकां री गिणती नही। ग्रापणी मारवाड़ी बोली ग्राज इशा सुधार का कळास ऊपर पूग्योड़ी दुनिया मांहे पण ग्रधेरी गुफा के मंदर गोता खाती रव्है, इण को ग्रभिमान ग्राप सरदारां ने नहीं कांई ?'

ग्रर भरतियाजी राजस्थानी समाज नैं ग्रंधेरी गुफा सूं बारै लावण सारू कमर कसो ग्रौर ग्राप री कलम री जागती जोत सूं उण रो मार्ग प्रशस्त करण रो प्रयास करयो, घरछूट प्रयास करयो।

(3)

भरतियाजी री लिखयोड़ी पुस्तकां री संख्या राजस्थानी में 9, हिंदी में 17, मराठी मे 13 ग्रर संस्कृत में 3 है। सं. 1963 में छपी 'बुढापा की सगाई' नाटक रै छेड़लै पृष्ठ रैं विज्ञापन में उणां री रचित पोथ्यां रो विवरण इण भात है—

"सिद्धेंदुचंद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पद्यावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)—दूसरी बार छप रही छे, कनकसुन्दर (मारवाड़ी), प्रवास-कुसुमावली गुच्छ 10 (हिंदी), बुढापा की सगाई—नाटक (मारवाड़ी), मोत्यां की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), राज्यारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी)।

लिखकर तैयार— फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलास नाटक

भरतियाजी री जीवण-लीला उणा री 61 बरस री ऊमर में संवत् 1971 मे इंदौर मे समाप्त हुयी।

(2)

भरतियाजी रै जीवण री सब सूं बड़ी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य री सेवा। उणां साहित्य नै समाज सूं रत्ती भर भी जुदो कोनी राख्यो। राजस्थानी जन-जीवण रै स्तर नै उणां आंख्यां खोलनै देख्यो, नै देख्यो कै राजस्थान री जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळा नै लोग होण दीठ सूं देखै है। राजस्थानी जन री आख्यां खोलण सारू उणां कलम उठायी अर लोगा नै दरसायो कै आपां रो समाज रसातळ नै जाय रैयो है, 'मारवाड़ी' नांव री महत्ता घट रैयी है और आपणी भाषा री तो लुटिया ही डूब रैयी है!

गैराई सूं सोचणै पर उणा नै राजस्थानी समाज री अपमानजनक अवस्था रो मूळ कारण अत-पंत ओ लाग्यो के समाज में अजै तांई अशिक्षा रो घोर प्रसार है। इण नै मिटायां विना समाज सुधरण रो कोनी, मारवाड़ी 'मारवाड़ी' ही रैसी। शिक्षा रै प्रचार-प्रसार सारू उणां जनता री बोली नै ही माध्यम बणावणो ठीक समझ्यो। मातृभाषा सूं आछो दूजी भाषा किण तरै हुय सकै है? उणां री मीट मे आ बात आयी कै 'मारवाड़ी' रो उद्धार मारवाड़ी भाषा ही कर सकै है—

"मारवाड़ी भाषा आपणी मातृभाषा छे। मारवाड़ी भाषा आपणी बोध-दात्री छे और मारवाडी भाषा आपणी स्त्रियां की सुधारकर्त्री छे। म्हारो तो सिद्धांत छे के आपां लोगां को लक्ष्य आपणी मातृभाषा मारवाडी कानी नहीं रहणे सूं आपणो समाज हाल ताई इसी हीन दशा मांहे पड़यो हुयो छे। मारवाड़ी भाषा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाठशाळा तांई भी पूग जाती तो घणखरा मारवाड़ी सरदार विद्वान बण जाता। आपणी मातृभाषा ने हीण समझणे सूं आपणो उद्धार किण तरे हो सके?"

('कनक-सुंदर' री भूमिका)

'केसर-विलास' नाटक री भूमिका मे उणां री मातृभाषा रै प्रति आ हूंस इण रूप में प्रगट हुयी है—

'म्हारा दिल मांहे हमेशा विचार आवता के आपां वाण्यां के कुळ मांहे जनम लीनो, रुजगार-धंधो मोकळो कीनो, दो-चार भाषा को अभ्यास करने सैकड़ों पुस्तकां वांची और संस्कृत, मरेठी, हिन्दी मांहे रचना भी करी, कविता मोकळी कीनी, पण आपणी जनम-भाषा मारवाड़ी तिका कानी तो नजर भी

कीनी नहीं। छोटी-मोटी कोई पुस्वक वणाय ने सरदारां के सामने राखणी तो खरी। देखा भलां, ग्रादर होवे के ग्रनादर होवे।'

मातृभाषा में रचना करण री उणां री इच्छा इण कारण भी ही कै ग्रशिक्षित मारवाड़ी ग्रनै उणां री लुगायां तो इण रै ग्रलावा भारत री दूजी भाषावां नै जाणक-ई को जाणै ही नीं, फेर उणां भाषावां में लिखण सूं मारवाड़ी समाज नै कांई फायदो ? ग्रेक ग्रौर भी सबळ कारण राजस्थानी में लिखण रो उणां ग्रो बतायो कै उण समै इण भाषा रो साहित्य दूजी भाषावां रै साहित्य सूं जाबक ही थोड़ो लिख्यो जा रैयो हो। राजस्थानी रै गौरव नै भी दुनिया रै सामनै लावणो हो। 'केसर-विलास' री भूमिका में उणां लिख्यो है—

'ग्रापणो नोकोटी मारवाड़ ग्रौर मारवाड़ी बोली कठो के ग्रधेरा मांहे पड़ी छे, सूं ग्राप जाणो नहीं कांई ? ग्रंग्रेजी तो रैवा दयो पण बंगाली, गुजराती, मरेटी, हिन्दी कानी तो जरा नजर करो, किशा-किशा ग्रंथ इणां भाषा मांहे तैयार हुवा छे ग्रौर हो रह्या छे तिकां री गिणती नहीं। ग्रापणी मारवाड़ी बोली ग्राज इशा सुधार का कळास ऊपर पुग्योड़ी दुनिया मांहे पण ग्रंधेरी गुफा के ग्रंदर गोता खाती रव्हे, इण को ग्रभिमान ग्राप सरदारां ने नहीं कांई ?'

ग्रर भरतियाजी राजस्थानी समाज नैं ग्रंधेरी गुफा सूं बारै लावण सारू कमर कसी ग्रौर ग्राप री कलम री जागती जोत सूं उण रो मार्ग प्रशस्त करण रो प्रयास करयो, ग्रखूट प्रयास करयो।

(3)

भरतियाजी री लिखयोड़ी पुस्तकां री संख्या राजस्थानी मे 9, हिंदी में 17, मराठी मे 13 ग्रर संस्कृत मे 3 है। सं. 1963 में छपी 'बुढापा की सगाई' नाटक रै छेड़लै पृष्ठ रै विज्ञापन में उणां री रचित पोथ्यां रो विवरण इण भांत है—

"सिद्ध बुधचंद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पद्यावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)—दूसरी बार छप रही छे, कनकसुन्दर (मारवाड़ी), प्रवास-कुसुमावली गुच्छ 10 (हिंदी), बुढापा की सगाई—नाटक (मारवाड़ी), मोत्यां की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), राज्यारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी)।

लिखकर तैयार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलास नाटक

मरतियाजी री जीवरा-लीला उरगां री 61 बरस री ऊमर मे संवत् 1971 मे इंदौर मे समाप्त हुयी।

(2)

मरतियाजी रै जीवण री सब सूं बड़ी उपलब्धि ही उणां द्वारा करी गयी राजस्थानी भाषा और साहित्य री सेवा। उणां साहित्य नै समाज सूं रत्ती भर भी जुदो कोनी राख्यो। राजस्थानी जन-जीवण रै स्तर नै उणां आख्यां खोलनै देख्यो, नै देख्यो कै राजस्थान री जन-संस्कृति, साहित्य, भाषा और प्रतिष्ठा—सगळां नै लोग हीण दीठ सूं देखै है। राजस्थानी जन री आख्यां खोलण सारू उणां कलम उठायी अर लोगां नै दरसायो कै आपां रो समाज रसातळ नै जाय रैयो है, 'मारवाड़ी' नांव री महत्ता घट रैयी है और आपणी भाषा री तो लुटिया ही डूब रैयो है!

गैराई सूं सोचणैं पर उणां नै राजस्थानी समाज री अपमानजनक अवस्था रो मूळ कारण अंत-पंत ओ लाग्यो के समाज में अजे तांई अशिक्षा रो घोर प्रसार है। इण नै मिटायां बिना समाज सुधरण रो कोनी, मारवाड़ी 'मारवाड़ी' ही रैसी। शिक्षा रै प्रचार-प्रसार सारू उणां जनता री बोली नै ही माध्यम बणावणो ठीक समझ्यो। मातृभाषा सूं आछी दूजी भाषा किण तरै हुय सकै है? उणां री मीट में आ बात आयी कै 'मारवाड़ी' रो उद्धार मारवाड़ी भाषा ही कर सकै है—

"मारवाड़ी भाषा आपणी मातृभाषा छे। मारवाड़ी भाषा आपणी बोध-दात्री छे और मारवाड़ी भाषा आपणी स्त्रियां की सुधारकर्त्री छे। म्हारो तो सिद्धांत छे के आपां लोगां को लक्ष्य आपणी मातृभाषा मारवाड़ी कानी नहीं रहणे सूं आपणो समाज हाल तांई इसी हीन दशा मांहे पड्यो हुयो छे। मारवाड़ी भाषा विश्वविद्यालय तो दूर तथापि छोटी-मोटी पाठशाळा तांई भी पुग जाती तो घणासरा मारवाड़ी सरदार विद्वान बण जाता। आपणी मातृ-भाषा ने हीण समझणे सूं आपणो उद्धार किण तरे हो सके?"

('कनक-सुंदर' री भूमिका)

'केसर-विलास' नाटक री भूमिका में उणां री मातृभाषा रै प्रति आ हूंस इण रूप मे प्रगट हुयी है—

'म्हारा दिल माहे हमेशा विचार आवता के आपां वाण्यां के कुळ मांहे जनम लीनो, रुजगार-धंधो मोकळो कीनो, दो-चार भाषा को अभ्यास करने सैंकड़ों पुस्तकां बांची और संस्कृत, मरेटी, हिन्दी माहि रचना भी करी, कविता मोकळी कीनी, पण आपणी जनम-भाषा मारवाड़ी तिका कानी तो नजर भी

कीनी नहीं। छोटी-मोटी कोई पुस्तक बणाय ने सरदारां के सामने राखणी तो खरी। देखां मलां, ग्रादर होवे के ग्रनादर होवे।'

मातृभाषा में रचना करण री उणां री इच्छा इण कारण भी ही कै ग्रशिक्षित मारवाड़ी ग्रनै उणां री लुगायां तो इण रै ग्रलावा भारत री दूजी भाषावां नै जावक-ई को जाणै ही नी, फेर उणां भाषावां में लिखण सूं मारवाड़ी समाज नै कांई फायदो? ग्रेक ग्रौर भी सवळ कारण राजस्थानी में लिखण रो उणां ग्रो बतायो कै उण समै इण भाषा रो साहित्य दूजी भाषावां रै साहित्य सूं जावक ही थोड़ो लिख्यो जा रैयो हो। राजस्थानी रै गौरव नै भी दुनिया रै सामनै लावणो हो। 'केसर-विलास' री भूमिका में उणां लिख्यो है—

'ग्रापणी नोकोटी मारवाड़ ग्रौर मारवाड़ी बोली कठो के ग्रंधेरा मांहे पड़ी छे, सूं ग्राप जाणो नही कांई? *ग्रंग्रेजी तो रैवा दयो पण बंगाली, गुजराती,* मरेटी, हिन्दी कानी तो जरा नजर करो, किशा-किशा ग्रंथ इणां भाषा मांहे तैयार हुवा छे ग्रौर हो रह्या छे निकां री गिणती नही। ग्रापणी मारवाड़ी बोली ग्राज इशा सुधार का कळास ऊपर पुग्योड़ी दुनिया मांहे पण ग्रंधेरी गुफा के ग्रंदर गोता खाती रव्है, इण को ग्रभिमान ग्राप सरदारां ने नहीं कांई?'

ग्रर भरतियाजी राजस्थानी समाज नै ग्रंधेरी गुफा सूं बारै लावण सारू कमर कसी ग्रौर ग्राप री कलम री जागती जोत सूं उण रो मार्ग प्रशस्त करण रो प्रयास करयो, धरणूट प्रयास करयो।

(3)

भरतियाजी री लिखयोड़ी पुस्तकां री संख्या राजस्थानी में 9, हिंदी में 17, मराठी में 11 ग्रर संस्कृत में 3 है। सं. 1963 में छपी 'बुढापा की सगाई' नाटक रै छेहलै पृष्ठ रै विज्ञापन में उणां री रचित पोथ्यां रो विवरण इण भांत है—

"सिद्धेदुचंद्रिका (संस्कृत, मराठी), गीतार्थ-पद्यावळी (मराठी), केसर-विलास (मारवाड़ी)—दूसरी बार छप रही छे, कनकसुन्दर (मारवाड़ी), प्रवास-कुसुमावली गुच्छ 10 (हिंदी), बुढापा की सगाई—नाटक (मारवाड़ी), मोत्यां की कंठी (मारवाड़ी), गुर्वष्टक (संस्कृत), राज्यारोहण-प्रशस्ति (संस्कृत) शोककानन (हिंदी)।

छपकर तैयार—फाटका-जंजाळ नाटक (मारवाड़ी), मतिविलास नाटक

(मराठी), अनुताप तीर्थ शतक (मराठी), आर्या लहरी (मराठी), विज्ञान पाशुपत (हिंदी)।

तैयार हो रही छै—अब क्या करना चाहिए ? (हिंदी, मराठी, गुजराती, बंगाली और मारवाड़ी), बोधदर्पण (मारवाड़ी)।

भरतियाजी री आखरी छप्योड़ी पोथी 'सूर्यचक्रवेध' मिलै है जिकी उणां रै 'विचार-दर्शन' नांव रै अेक विशाल ग्रंथ रो अेक अंश है। उण रो विषय योग-विद्या और वेदांत सूं सम्बन्धित है।

पोथी लिखण रै सिवा उणां हिंदी पत्र 'वैश्योपकारक' रै सपादन में भी घणो सहयोग दियो। सामयिक समस्यावां पर उण रा जिका विचार हा वै मोकळी कहाण्यां अर निबंधां रै रूप में उण मे नियमित रूप सूं प्रकाशित हुया हा।

भरतियाजी री राजस्थानी रचनावां मे 'कनक-सुन्दर' नांव री कृति राजस्थानी भाषा रो पैलो उपन्यास है और भरतियाजी री प्रतिनिधि राजस्थानी रचना मानी जा सकै है। उण रो पैलो भाग ही छप सक्यो, दूसरो भाग प्रकाश में नहीं आयो। ओ उपन्यास उण टैम प्रकाशित हुयो जद हिंदी में चंद्रकांता-संतति, भूतनाथ जिसा तिलस्मी नै जासूसी उपन्यासां रो बोलबालो हो। कनक-सुन्दर सामाजिक उपन्यास है। इण मे उण टैम रै मारवाड़ी समाज री कथा नै जिण सरस ढग सूं प्रस्तुत करी है उण नै देखनै लोग घणा प्रभावित हुया। कनक और सुन्दर इण उपन्यास रा नायक-नायिका है जिकां रो प्रारंभिक जीवण हो ले भाग में आ पायो है। उपन्यास रो प्रारंभ इण भांत हुवै—'दोपहर को वगत। चारघां कानी लू चाल रही छे। हवा का जोर सूं वाळू अठी-की-उठीने उड-उडकर बी-का नवा-नवा टीबा हो रह्या छै, और भीजण भी रहया छे, मुंह ऊंचो कर सामने चालणो मुस्कल छे। लू कपड़ा मांहे बड़कर सारा सरीर ने सिकताव कर रही छे। धूप इसी जोर की पड़ रही छे के जमी ऊपर पग देणो मुस्कल छे। रास्ता मांहे दूर-दूर कठेही भाड़ को नांव नही। बाळू उड़कर जगां-जगां नवा टीबा होणे सूं रास्ते को ठिकाणो नहीं। आदमीं तो दूर, रास्ता मांहे कोई जीव-जिनावर को भी दरसण नहीं। इसे वखत अेक जवान आदमी जिण की उमर सोळा सत्रा बरस की थी, मांथो कपड़ां सूं बध्यो हुवो, हुश-हुश करतो-करतो अजमेर कानी चल्यो आ रह्यो छे। रेती गरम होणे सूं पगा के चरका लागकर फोडा आ रह्या छे, तो भी जोर सूं चाल रह्यो छे।'

उपन्यास मे आपणे देश में फैली फूट री जिकी कमजोरी ही उण कानी

भी भरतियाजी संकेत करण में कोनी चूकया 'श्रपणा देश मांहे श्रेको नहीं जरां तो श्रापणी राज्यसत्ता पराया लोगां के हाथ गयी ... देखकर सारा झट बोल्या के श्रा तो 'फूट' छे। साहेब हंसकर बोल्या के श्रो इशो श्रनोखो फळ थांरा देश मांहे छे जरां तो म्हा लोगां को राज हुवो; नही तो म्हांकी कांई मगदूर थी सू हजारां कोस पर श्राकर थाके ऊपर हकूमत करता ? इण मांहे कांई झूट छे। इण फूट तो सारा देश को सत्यानाश कर दीनो।'

'केसर-विलास' (प्रकाशन समै संवत् 1957) भरतियाजी री पैली राजस्थानी रचना श्रौर राजस्थानी रो पैलो नाटक है। इण श्रादर्शोन्मुखी यथार्थवादी नाटक री स्वाभाविकता श्रौर यथार्थवादिता हिंदी रै पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी नै भी घणा प्रभावित करया। उणां 'सरस्वती' में लिख्यो—रचना इसकी बहुत ही स्वाभाविक है। कहीं-कहीं पढ़ते समय, स्वाभाविकता का इतना ग्राविर्भाव हो उठता है कि इस बात की विस्मृति हो जाती है कि कल्पित कथा पढ़ रहे हैं। (सरस्वती, श्रक्टूबर, 1904, पृ. 368) इण नाटक में श्रणमेळ ब्यांव री समस्या उठायी है। श्रणमेळ ब्याव री बुराई बतायनै समाज नै उण सूं विमुख करणो ही इण रो ध्येय है।

श्रर लगभग श्रा ही समस्या 'बुढापा की सगाई' नाटक (प्रकाशन समै संवत् 1963) मे उठायी है। भरतियाजी उण री भूमिका में लिख्यो है—'इण मांहे स्त्रियां की स्वतंत्रता की हद, बीं का परिणाम बुढापा माहे ब्यांव की इच्छा, बीं को श्रविचार, सगाई, वी को बंधन श्रौर बी बंधन को परिणाम, इत्यादि सरल मारवाड़ी बोली मांहे दरसाया छे। जगां-जगां नीति, उपदेश, बोध, शिक्षा, धर्म श्रौर विचार को बण्यो जठे तांई उल्लेख कीनो छे। मारवाड़ी समाज की स्थिति, घर की श्रौर बाहर की वातां, विचार की भिन्नता, पचायत श्रोर स्त्री-पुरुष का बरताव पर खूब विचार करके कथाभाग इशो जमायो छे के जाणे श्रा इशी-की-इशी कठे हुवोड़ी सांची बात छे।'

'फाटका-जंजाळ (रचना समै संवत् 1964) भरतियाजी रो तीसरो नाटक है। उणां इण में मारवाड़ी समाज नै फाटका (सट्टा) श्रर इण सरीखा दूसरा दुर्गुणां सूं हुवणवाळा नुकसाण रो चितराम खैंच्यो है—'प्रेम श्रनुभव बिना जाण्यो जावे नहीं। मधुपान करयां विना वी की माधुरी मालम होवे नहीं। जिण सूं श्रनिर्वचनीय श्रानंद होवे, जठीने हृदय खिंचीजे, जिण के वास्ते प्रबळ इच्छा उत्पन्न होवे श्रौर जिण का लाभ सूं हृदय स्नेहपूर्ण होवे बो ही प्रेम। श्रो भाव परस्पर को हृदय श्रेक के कानी श्रेक ने खींचे। बीजळी का तार का ठोका के ज्यूं श्रेक का हृदय ऊपर श्रेक का हृदय को श्राघात करे। प्रेम का

भाव, प्रेम को सावुक और प्रेम की भावना इण माहे सूं अेक को भी लोप हो जावे तो फ़िर दूजो रहे नहीं ।'

भरतियाजी री साहित्य-सेवा री मूळ प्रेरणा समाज-सुधार अर देश रो उत्थान है। विदेशी शोषण कांनी भी उणां रो ध्यान हो—'अंगरेज लोगा कानी तो जरा नजर करो, अठे सूं माटी के नांई पावड़ा सूं रुपया खींचकर आपका देस ने ले जाकर इन्द्रपुरी बणा दीनो छे। अपणा देश ने भिखारी कर दीनो छे।'

समाज-सेवा री भरतियाजी री कित्तो हूंस ही, 'कनक-सुन्दर' री भूमिका रै इण उद्धरण सूं आ आछी तरै जाणी जा सकै है—

" 'हाय पैसो ! हाय पैसो !' करबाळा म्हारा सारा सरदारां ने राजा-महाराजा अर श्रीमंत बणाकर, हळका छळ-छिद्र का वेपार सूं छुडाकर खरा-खरा वैश्य बणा दयूं, उण की सारी कुरीतां मेट दयूं, उणका घर को सुधार कर दयूं, उणकी फिजूल-खरची मिटा दयूं, उणकी राहरीत सुधार दयूं, उण का बेजोड़ ब्याव नहीं होबा दयूं, मोटयारां ने का बाळविवाह रोक दयूं, उण का बेजोड़ ब्याव नहीं होबा दयूं, मोटयारां ने विद्या सिखाकर स्त्रियां ने शाणी कर दयूं और वेश्या भी नही बोल सके उशा फीटा बोलां का गीत गावणा छुडा दयूं ।"

स्त्री-शिक्षा रा बै गैरा हिमायती हा। नारी री हीण अवस्था देख-देखनै उणां रो काळजो कटीज्या करतो। नारी नै उण री महानता और उण री जिम्मेवारी जतावण रो उणां जबरदस्त प्रयास करयो हो। उणां 'कनक-सुन्दर' री भूमिका में इण बाबत आप रा विचार प्रकट करया है।

भाषा रै संबध में भी उणां रा विचार स्पष्ट नै महत्त्वपूर्ण हा। कोई भी राष्ट्र जद ही सबळ हुय सकै है जद उण री भाषा अेक हुवै। 'कनक-सुन्दर' मे उणां लिख्यो है—

"हर-अेक देश री सर्वत्र अेक भाषा होणी अत्यन्त आवश्यक छे। यूरप, अमेरिका, विगेरा माहे अेक भाषा होणे सूं उण लोगां की दृढ अेकता होकर वे आज सारी दुनियां माहे श्रेष्ठ हो रह्या छे। आपणा हिंदुस्तान की अेक भाषा होती तो आज आपणा देश की इसी अवनति होती नहीं।"

आपणै राष्ट्र रै इण मांत रै मूर्धन्य विचारक अनै समाजसेवी और राजस्थान-भारती रै सपूत-पूत री सेवावां रै प्रति सही-सही आभार तो जद ही मान्यो जावेला जद कै उण री नै उण रै समै रा दूजा प्रवासी राजस्थानी साहित्यकारां री सारी रचनावां नै अविलंब आछै-सूं-आछै रूप मे प्रकाशित करायनै उणा रो प्रचार करांला।

राजस्थानी रै इण समर्थ सेवक री अमर स्मृति नै पुनः पुनः प्रणाम !

राजस्थान रै इतिहास माथै भूगोल रो असर

जहूरखां मेहर

भूगोल अर तवारीख रो घणो नेड़ो नातो है अर दोनुई अेक बीजै सूं काठा जुड़्योड़ा है। इण बात नै रिचर्ड हैक्लूट,[1] हेनरी बक्कल,[2] ई. ई. केलेट,[3] अे. अेफ. पोलार्ड,[4] रिचर्ड हैक्स्टर,[5] वी. अे. स्मिथ[6] अर हेरोडोटस[7] सरीखा धुरन्दरां अंगेकारी है। सायद इण सारू इणां सगळां इतिहास मनै भूगोल में काठो नातो मानियो कै तवारीख मे मिनखां री करणी रो लेखो-जोखो व्है अर मिनखां री करणी माथै आब-हवा, सियाळो अर उन्हाळो घणो असर नाखै। जळवायु रोजीनाई मानखै रै जीवन-दर्शण अर जीवण-पद्धति रै मूळ में रैवै है अर उणा रीं आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक अर वैचारिक परम्परावां नै अेक खास तरै सूं ढाळण मे घणो हाथ राखै। टंड्रा रा अेस्कीमोज, समन्दर सूं घिरयोड़ा डेन्स, पुराणी नदियां आळी क्यारूंई सभ्यतावां, हिमाळै रा सेरपावां, थळी रै वासियां बीजां रै रोजमर्रा रो जीवण उठै री जळवायु री देण नीं है तो पछै काई है ? दुनियां में पनपी अर मुरझाई सगळी सभ्यतावां रै बिच्चै जे कीं खास फरक है तो उण री असल वजै जळवायु इज है। इतिहास अर भूगोल रै इण लूंठै नातै नै देख'र जे इतिहास ने भायो-भाय भूगोल केवां तो की घणापो को व्हेलानी। आज रै संसार नै जे गौर सूं देखां तो इण विज्ञान रै जुग में ई घणी-घणी अेड़ी सभ्यतावां दीखैला जिकी भूगोल री वजै सूं आधी-सभ्य बाजै। आपारै अठै भारत में भी अेड़ी ठोड़ां है जठै मानखै माथै भूगोल रो सावसीधो असर दीखै। निकोबार द्वीप अर आसाम रै मिनखा री करणी घणी कर भूगोल सूं ढकियोड़ी इज

---

1 रिचर्ड हेक्लूट, 'भूगोल इतियास री आख्यां है'।
2 बक्कल, हेनरी, स्टोरी आफ सिविलाइजेशन।
3 केलेट, ई. ई., आसेक्टस आफ हिस्ट्री।
4 पोलार्ड, अे अेफ, फेक्टर्स इन माडर्न हिस्ट्री।
5 हैक्स्टर रिचर्ड, रिअेप्रेजल इन हिस्ट्री।
6 स्मिथ, वी. अे., आक्सफोर्ड हिस्ट्री आफ इण्डिया।
7 हेरोडोटस, दी हिस्ट्रीज।

लखावै । च्यार पांच सो बरां रै राजस्थान रै इतियाम मायै निजर नाख्यां भ्रा ठा पड़ै कै भ्रो भारत रै इतियास रो भ्रंग हूता थकां भ्रापोभ्राप में भ्रेक निर-वाळी सांस्कृतिक चोखाई राखै भ्रर इण री भ्रेक न्यारी भ्रर सुतंतर ठोड़ है ।

भारत रै इतियास मायै भूगोल रो भ्रसर विद्वाना मेनत भ्रर गहराई सूं घणी बेळा बतायो है । भ्रो भ्रसर बतावतां थकां सगळा मानीता विद्वान भारत नै इणां च्यार टुकड़ां में बांटे—घोराऊ (उत्तरी) माखर भ्राळो खेतर, घोराऊ मगरा, विंध्यावटी भ्रर लंकाऊ भारत । घणै विस्तार सूं नख-चख समेत इणां च्यारूं हिस्सां रै भूगोल रो भ्रठै री तवारीख मायै भ्रसर बतावण वाळा री कसर कोनी । इण रो सामो भ्ररथ भ्रो हुयो कै राजस्थान री थळी घोराऊ भाखरां भ्रर विंध्यावटी रै बिचलै घोराऊ मगरां (तालरा) में भेळो ठू सियोड़ी है । जै भ्रापां इणां घोराऊ तालरां रै भूगोल रो उठै री तवारीख मायै भ्रसर देखां तो ठा पड़ै कै भ्रो खेतर घणो उपजाऊ है, भ्रर पेलां री सोनै-रूपै री चिड़ी भ्रो इज है जिणनै दाबण खातर घणा बारला ललचाया भ्रठै भ्रा खप्या । इणां तालरां में पुराणियां महाजनपद पनप्या, कळा-सहित भ्रठैई निखरियो भ्रर घणकरी नदियां इण खेतर में इज बेवण सूं भ्राव-जाव सोरो रैयो । हमै जे मगरा में भूगोल री वजै सूं हुयोड़ी ऊपरली बातां राजस्थान में जोवण बैठा तो इणां मांयली भ्रेक ई बात भ्रठै को मिळेनी । नी तो भ्रठै उपजाऊ जमी है नी नदिया-नाळा, कळा-साहित भ्रर नी महाजनपद । सोने री चिड़ो इण रो नांव कदैई को बाजतोनी, हां, मौत री बाड़ी भ्रनै मौत रै खेतर जेड़ै नावां सूं मिनख इण नै जरूर जांणता हा । भ्रठै केई-केई कोसां ताई पसरि-योड़ो मरू खेतर हो जिणनै डाकणो काळी भीत गिणीजतो । इण मरू खेतर में मिनख कांई घोड़ा तांई गरक व्है जावता ।[1]

राजस्थान नै जै न्यारो भौगोलिक खण्ड मान'र भ्रठै रै इतिहास मायै निजर नाखां तो ठा पड़ै कै इण खेतर मायै भूगोल रो जित्तो भ्रसर है उत्तो मळै किणी बीजै खण्ड रो उठै री तवारीख मायै भ्रसर को व्हैलानी ।[2] इण भ्रसर नै बतावण सारू घणी पंडताई छांटण री जरूत को पड़ैनी, भ्रो साव सोरो हर किणी भ्रोमजी-मोमजी नै ई दीस सकै । राजस्थान 342, 274 वर्ग

1 मुणोंत नैणसी री ख्यात ।

2 Sharma, G.N., Social Life in Medicval Rajasthan, p. 33. "History provides no clearer example of the profound influ-ence of geography upon a culture than in the historical deve-lopment of Rajasthan."

कीलोमीटर तांई फैलियोड़ो है ।[1] जिए में तीन करोड़ नेड़ै मानखे रो वासो है ।[2] इए रै ग्राथूरणै सिन्ध, घोराऊ—ग्राथूरणै, घोराऊ ग्रर घोराऊ-ग्रगूरणै पंजाब, ऊगूरणै यू.पी. ग्रर ग्वालियर नै लंकाऊ सामां गुजरात ग्रायोड़ा है ।[3] भूगोल रै जाएकारां राजस्थान नै ई ग्रापरी जाएकारी रै पांए न्यारी न्यारी पांतियां मे वांटयो है ।[4] राजस्थान 23.3° सूं 30.12° घोराऊ ग्रक्षांश ग्रर 69.30° सूं 78.17° ऊगूणी देशान्तर रै बिच्चे पसरियोडो है ।[5] राजस्थान मे तीन रितवां व्है । उन्हाळो पणकरो मार्च सूं जून रै मईनों रै बिच्चे गिएीजै । पर ठेट जनवरी रै नारले पाड़ै सूं ने'र ग्रगस्त तांई भुलसरण वाळी लू, धूड री काळी-पीळी ग्रांधियां, लूंठा बतोळिया जिका धूरावां सूं ले'र टिगर-टांगर तांई नैं लपेट ले जावै ग्रर तड़तड़तो तावड़ो बण्यो रैवै । बराळो यूं तो ग्राघे जून सूं ले'र सितम्बर रै बिच्चै ताई मानीजै पए मेह ग्रावै नी ग्रावै किन्नेई ठा नी । खास कर थळी रा तो केई-केई बर लेरणों-लेए बिना छांट निसर जावै । सियाळो ग्रक्टूबर सूं फरवरी तांई, ठारी रैत सूं कर'र ग्रणूंती पड़ै ग्रनै बिना ताप ग्रर पट्टूड़ै रै मिनख ठर'र ठाकर व्है जावै ।

भूगोल रै मुजब राजस्थान मोटै रूप सूं दो हिस्सा में पांतीज सकै—ग्रेक ऊगूणों भाखर ग्रर दूजो ग्राथूणियो मरू-खेतर । ऊगूणै हिस्सै मे ग्राडावळ भाखर री लड़िया है जिकी ठेट दिल्ली सूं गुजरात तांई ग्रायोड़ी है ।[6] भाखरियां रो लंकाऊ-ग्राथूणो खुणों माउण्ट ग्राबू ग्रर घोराऊ-ऊगूणो भुन्भनू जिले रै खेतड़ी ताई पोचियोड़ो है । सगळा सूं ग्रबखो भाखरिया ग्राबू सूं ग्रजमेर तांई है । ग्राडावळ सूं न्यारा भाखर भी निरा है । ग्रामेर ग्रनै ग्रलवर भाखरां

---

1 (ग्र) धरमपाल, इण्डिया लैन्ड ग्रेन्ड पीपल, राजस्थान, पृ. 1
(ब) राजस्थान रो क्षेत्रफल सगळे भारत रै क्षेत्रफल रो 11 2 की सदी है ।

2 (ग्र) 1961 री सरकारी मर्दमसुमारी मुजब ग्रा तादाद 20,155 602 ही ।
(ब) राजरी जनसख्या सगळै भारत री जनसंख्या री 4 6 की सदी है ।

3 इम्पीरियल गजेटियर राजपूताना प्रोविन्स सिरीज, पृ 1

4 (ग्र) ग्रमल कुमार सेन, 'ज्योग्राफिकल रीजन्स आफ राजस्थान' ट्राजेक्सन ऑफ दी इण्डियन कौंसिल ऑफ ज्योग्राफर्स स्पेसल आई. जी यू., वोल्यूम, पृ 99-104.
(ब) धरमपाल, इण्डिया लैन्ड ग्रेन्ड दी पीपल, राजस्थान, पृ 1-7
(स) वी. सी मिश्रा, 'ज्योग्राफीकल रीजन्स ग्राफ राजस्थान', दी इण्डियन जनरल ऑफ ज्योग्राफी, वोल्यूम 1, न. 1.1966, पृ. 35-48.

5 (ग्र) इम्पीरियल गजेटियर, राज. प्रो. सी, पृ 1
(ब) ईणीज देशान्तरां बिच्चै जिका बीजा मुलक बस्योड़ा है उणा में घोराऊ ग्ररब, पणकरो मिश्र, साईबेरिया ग्रर ग्रफीका रा कीं भाग है ।

6 धरमपाल, इण्डिया लैन्ड ग्रेन्ड दी पीपल, राजस्थान, पृ. 1

सूं घिरयोड़ाई है अर भरतपुर रै आड़ै-पाड़ै घणांई भाखर है। करोली अर मुकुन्दवाड़ा रा भाखर भी घणां चावा जांणीजै। इण भाखरां वाळै ऊगूणै राजस्थान में आबू, उदैपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, अजमेर, कोटा, बून्दी, अलवर अर जैपुर है। घणकरो राजस्थान रेगिस्तानी है जिणमें जोधपुर, बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर अर गंगानगर बीजा भेळा है।[1]

राजस्थान मे पाणी री कमी अर घणी-घणी मो विखरयोड़ी धूड री वजै सूं अठै री जमी सगळै भारत री 11.2 फी सदी है पण मिनख नानी-नांनी ढाणियां अर गांवड़ां में फंटयोड़ा है अनै उणां री तादाद देश री आबादी री सिरफ 4.6 फी सदी इज है।[2] देश रै पशुधन रो 10 फी सदी अठै इज है पण इण मे घणकरा गाडर, लरडियां अर ऊंट है। देश रै कुल बकरा-बकरियां रा 13.2 फी सदी, भेड़ 18.2 फी सदी अनै ऊंटां री बात ई छोडो सगळै भारत रा आधा सूं बत्ता ऊंट अठै है।

राजस्थान री आब-हवा रो इतिहास मायै घणै खुलासै सूं असर बताणों तो अठै वाजब कोनी। थोडै में जिकी बातां कै सकां उणा मे पेला ऊगूणीं भाखरियां वाळै खेतर मायै जळवायु रो असर देखां—

—अे ऊगूणां भाखर आडावळ रा हिस्सा ई है। इण खेतर में चम्बल,[3] बनास,[4] बेतवा, अर माही बीजी नदियां रै पांण जमीं उपजाऊ है। सिचाई भी व्है सकै इण सारूं आपूणं थळी विन्नै ओ राजस्थान थोड़ो खावतो पीवतो है। भाखरियां रै आड़ै-पाडै रै रिन्द-रोई सूं जड़ी-बूटियां बीजी उपजै जिकी उठै री आबादी रो पेट पाळै। अे नदियां केई वेळा हमळा करण्यां नै मारग सूझावण रो काम काडियो। केई वेळा अे नदियां बचाव रो आछो साधन बणी। रजवाड़ां रा कांकड नदियां सूं न्यारा फंटता। चम्बल, जैपुर अर कोटा, करोली अर ग्वालियर रो कांकड़ रैई। माही बांसवाड़ा अर डूंगरपुर, खारी उदैपुर अर अजमेर नै न्यारा फांटती वैवती।[5]

---

1 राजस्थान रै सगळै क्षेत्रफल रो घणों नो तोई 63 फी सदी हिस्सो धूड़ वाळो है।

2 वी. सी. मिश्रा, राजस्थान रो भूगोल, पृ 6

3 बाबर नामा, 207, ओ. येफ. बेवरिज, II. पृ. 485

4 (अ) मुणोत नैणसी री ख्यात टी. 13 अर 34
(ब) फरिस्ता, पृ. 419

5 शर्मा, जी. अेन., सोसियल लाइफ़ इन मेडिवल राज, पृ 15
(अ) अचलेश्वर लेख अर श्रेकलिंग लेख।
(ब) इम्पीरियल गजेटियर (1908). 4, पृ. 407 408

—झीलां अर तालाब घणकरां अठै इज है। प्रकृति री चोखी जागां री अठो कमीं को नी। उदयसागर, पिछोला, लक्की अर जयसमन्दर जेड़ी झीला अनै अणासागर, राजसमन्द जेड़ा तळाव इण हिस्सै मांय ई है जिणां रो फूटरापो अळगै-अळगै मुलकां रै मिनखां नै आप सामी खांचै।

मध्यकाल मे अबखा अर लूंठा दुरग किणीं दरबार रै जोर अर मान री वजै मानीजता। ऊणूणियै राजस्थान री माखरियां में चित्तौड़, कुम्भलगढ़, रणथम्बोर, आमेर अर तारागढ़ जैड़ा सेन्ठा दुरग हा जिका ठीक शिवाजी रै पन्हाला, परतापगढ़ अर पुरन्दर दाई झगड़ां री बेळा घणां कारज साजिया।

—माखरियां अर घाटा रै पांण ठीक महाराष्ट्र दाई गुरिल्ला युद्ध करीजिया। इणां दावपेचां सूं ई कोटा, बूंदी अर चित्तौड़ रा रावराणां थोड़ीक फौजां ले, मोटी-मोटी मालवा, गुजरात अर मुगली फौजा सूं लोहो लै सकिया। कुम्भा, प्रताप अर राजसिंह री बादरी रै सागै अठै रो भूगोल उणां री घणी मदद करी।

—अै माखरियां राजस्थान रै बीजै रजवाड़ां रो भी आडै-बकत मे कारज साधियो। अजीतसिंह, रामसिंह, चन्द्रसेन अर दुर्गादास तांई रै बीखै री बेळा री ढाल अै माखरियां ई बणी।

—इणां भाखरियां में आधी सभ्य जातियां भील,[1] मीणां, ग्रासिया, बावरी अर गाडोळिया लवार बीजा अठै री अबखाई री वजै सूं ई आज तांई आप री रीत-पांत नै ज्यूं री त्यूं राख सकया। इणां री सभ्यता आपरी सगळी चोखी-भूण्डी बातां रै सागै अजै तांई जीवती है।

—जिण तरै शिवाजी रा मावला फौजी हा उणी तरै राणावां नै भील अर मीणां घणी मदद करी। कुम्भा, प्रताप अर राजसिंह रो साथ मीलां घणी मरदानगी सूं दीयो।[2]

—ज्यूं दिल्ली, मालवा अर गुजरात री मोटी फौजां रो आव-जाव भाखरां में दोरो हो जिण सूं राणां री छोटी-मोटी फुड़तीली फौजां आसानी सूं उणां रो सामनो करती कै बच निकळती उणी तरै धाड़ायती अर विद्रोही सिरदार,

---

1 (अ) स्हेई, पृ. 6
(ब) दी इम्पीरियल गजेटियर राज. प्रो. सी. पृ 86-89
2 (अ) शर्मा जी. थेन., सो ला. इन मे. राज, पृ. 7
(ब) फरिस्ता, तारीख, ब्रिग्स, 4, पृ 42
(स) वयोतराज, पाठ्य रत्नकोस।

राणां री मोटी फौजां रै मुकाबलै लड़ता-भिड़ता आप रा दिन काढ सकता हा।

—अै भाखरियां घणी अवखी ही सो मुलक रै उणी-खुणै सूं धरम नै समझणियां वैरियां सूं धरम नै बचावण खातर अठै आ पौंच्या अर ऊंची टेकरियां माथै मोटा-मोटा मिन्दर चुणीज्या, परसराम महादेव, नाथद्वारा, अेकलिंगजी जेड़ा नामी मिन्दर इणां भाखरियां में ई बणियोड़ा है। सगळै मुलक रा जैनी मध्यकाल में आप रै धरम नै बचावण सारू अठी आय पूगा अर देलवाड़ा-आबू, ऋषभदेव, रणकपुर, केसरियाजी अर महावीर जैन मिन्दर (उदैपुर) जैड़ा फूटरा मिन्दर चुणीज्या।

-अै भाखरियां राजस्थान रै कांकड़ माथै आयोड़ी हुवण सूं अठै रा रीत-पात, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश अर गुजरात सूं न्यारा रै सक्या। राजस्थान री संस्कृति री खास विशेषतावां नै बणायोड़ी राखण मे अै भाखर घणां आडा आया।

—राजस्थान री 63 फी सदी जम्मी रेतीली है।[1] रामायण री साख रै पाण मानीजै कै इणीं थळी री ठोड़ पैलां द्रमकुल्य नांव रो समन्दर हो।[2] समन्दर शास्त्र रा जाणकार भी आ मानै कै इणा धोरां मे आज तांई सीप-संख मिळै सो पक्कायत सूं, पैला अठै पाणी व्हैला।[3] सगळै रेतीलै खेतर मे ऊंचा-ऊंचा रेत रा धोरा बिखरियोड़ा है जिका बायरे रै झोकै आपरी जागां बदळ'र मारग बेवतां नै धोखो देवै। इण रेगिस्तान मे पाणी री घणी कमी रैवै। कठैक जे बेरा है तो वे दस-दस बीसी सूं पन्दरै-पन्दरै बीसी हाथ तांई उण्डा है अर इणां में पाणी बेगोई निसर जावै। बाडमेर अर जैसलमेर रै धोरां मे रैवणिया मिनखां री अेक रोजमर्रा रो काज आठ-आठ दस-दस कोस सूं ऊंठा माथै पखालां लाद पाणी लावणो है।[4] इण रेगिस्तान अर पाणी री कसर रो असर अठै रै मिनखा, जीव-जिनावरां अर रूंखड़ां माथै तांई साव सोरी दीसै। इण खेतर मे जीवणो दोरो, मेनत घणी, मिनख रात-दिन अवखतो रैवै, झूंझतो रैवै, जद जीवै। सोरापो नाव री को चीज नेडो ई कोयनी।

मरुखेतर में मिनखां रा घणां जमघट कठैईक दीसै। घणकरा वे नांना नाना गांवड़ां अर ढाणियां मे छीण-छीण बिखरयोड़ा है। अठै वर्ग किलोमीटर

1 मिश्रा, वी. सी., राजस्थान का भूगोल, पृ 23

2 बाल्मिकी रामायण, युद्ध काण्ड, सर्ग 22

3 'वो पाणी मुल्तान गयो' कावत भी इण बात री साख भरै कै अठै कदेई हिलोळा लेवतो समन्दर हो।

4 धरमपाल, इण्डिया लैण्ड अेन्ड पीपल, राजस्थान, पृ 4

दीठ 59 मिनख रैवै जिको भारत भर मे कश्मीर रै पच्छै सगळां सूं कम आबादी रो रैवास है। आज भी देश मे जमीं रै हैसाब सूं सगळां सूं मोटो ससद रो निर्वाचन क्षेत्र, इण मरू-खेतर रो जैसलमेर-बाड़मेर ई है। इण रैवास रै भीणापै री वजै आब हवा इज है। मरू-खेतर में रैवणों अर इणनै पार [illegible] निस- [illegible] है।[1] पाणी री कमी, बळती लू, बूंतोळिया अर कळीजण जोग धूड़ सूं मोटा लस्कर तो इण खेतर मे फुरक ई को सकता हानी। मोमद बिन कासिम 711 ई. में ठेट अरब सूं सिन्ध तांई आय धमक्यौ पण मरू-खेतर में बढ़ण री हिम्मत को कर सक्यौनी। पाणीपत नै जुद्ध रो मैदान बणावण रो जिम्मो भी मरू-खेतर रो ई है। खैबर, मोमा कुर्रम अर बोलन बीजै दर्रां सूं मांय बड़ण आळा हमलावर नी तो कश्मीर री बर्फीली माखरियां कानी सूं आगै बढ़ सकता अर नीं मरू-खेतर सूं, जद बापड़ा, हड़बड़ाय इण विचल्लै मारग, पाणीपत नै पकड़ता। राजस्थान री आ आथूणी पांती अठां रा भिड़मलां रै गाड रै सागै ई भूगोल री वजै सूं हमलावरां सूं कोरी रै सकी।[2] दिल्ली रा सुल्तांण मुगल अर अंगरेज पेलां भारत रा बीजा मुलक जीत्यां पछै घणां मोड़ा अठी मूण्डो करयौ। भूगोल रै पाण ई अठै मोटा साम्राज्य नी पनप'र नाना रजवाड़ा अर गणतंत्र बस्या। यौद्धेय जोहियां रा राज अठै ई हा। सिकन्दर रै हमले री बेळा सूं भिड़मला रै बेखटके बसण जोग राजस्थान ई रियो।

घणै वरसां हमलां सूं कोरा रैवण अर अबखै जीवण सूं अठै मिनखां मे सुतंतरता रा भाव, मान अर अहंम घणो हुयौ। जै कदैई हमलो हुवतो तो दोरो घणो लखावतो अर अठै रा मिनख बिवणै खार सूं भिड़ता। भूगोल रै पांण ई अठै सुतंतरता अर मान सारूं बलिदान अर त्याग रा भाव बीजै मुलका सूं घणां हा। अै सूरमा मान अर सुतंतरता खातर बैरयां सूं भिड़ पड़ता। साका अर जौहर घणै चाव सूं हुवता। शेरशाह मुठ्ठीक बाजरी सारूं, दिल्ली गमाय बैठतो।[3] सिरदार अर जमीदार अठै घणां गाडवाळा अर सुतंतर हा,

1 (अ) गुलबदन, हुमायू नामा, पृ. 151-155
(ब) अकबर नामा, 1, पृ. 182
(स) फरिस्ता, पृ. 219

2 फरिस्ता, पृ. 228

3 अब्बास सरवानी, तारीख अे शेरशाही, 4, 406

अर राजावां नै उणां नै ढाबण मे घणां जतन करणा पड़ता ।[1] सामन्त-जमींदार जित्ता सेंठा मारवाड़ में हा दूजी ठोड़ां को व्हैला नीं ।[2] राज धणीपणो भो ताई बिखरियोड़ा हूता थकां राज रा चाकर दुण्यां-गिण्यां ई व्हैता अर कीं आछो राज रौ ढांचो को जम सक्योनी । थोड़ै मे आ केय सकां कै अठै रै मानखै में बादरी, त्याग, बलिदान, स्वामीमान अर सुतंतरता जैड़ा गुण, भूगोल इज पनपाया ।[3] अठै री राजनीति रै मूळ में सगळां सूं लूंठी कीं बात ही तो वा ही जळवायु ।

राजस्थान री इण आपूणी पांत रै समाज माथै सावळ निजर नाख्यां इण माथै भी भूगोल रो भार घणो दीसै । बीजा सूं साव आगा अेकला रैतां रैतां अठै रो समाज निराळो ई बण गियो । अेकण कांनी इणमें घणो अेकठपणो अर अपणायत दीखै तो बीजै कानी ओ भीर-भीर बिखरयोड़ो, ऊंच-नीच, जांत-पांत अर ठाकर-चाकर सूं किड़योड़ो लखावै । न्यातां अर जातां रो जोर अठै ठेट सूं ई घणो रियो । बीजां वारलां नै समाज में की ठोड़ को ही नीं । जातां में भळै जाता अर खांपा अर कुळ, रोजीना ई कळयै रा मूळ बणयोड़ा रिया । न्यातां अर पञ्चा रो ओ जाब इण सारू ई हो कै मिनख बीजै संसार सूं कटयोड़ा हा अर न्यात-जात सूं अळगा होय जीव ई को सकता नी । ऊंच-नीच रो घणो बखांण नी कर अेक उदाहरण देणो चाऊं । राजावां रै गोला हूवता, ठाकरां रै न्यारा, मामूली रजपूतां अर ओसवाळां रै न्यारा अनै मजै री बात आ है कै अै ऊंच-नीच रै भावा सूं अेड़ा भरयोड़ा हा कै ट्या में आपस में सगपण तांई नी व्है सकता । घमंड इत्तो कै अेक चोखी गवाडी रा जवांई बीजा नीं बणै सो छोरी जलम जावै तो मार नाखै ओ ओखाणो चावो हो—

पेण्डो भलो नी कोस रो, बेटी भली नी अेक ।
देणो भलो नीं बाप रो, साहिब राखै टेक ।।

अठा रा मुसलमानां तांई मे जात-पांत घर करयोड़ी ही, मोची, महावत,

---

1 (अ) टाड, अनल्स अेन्ड अेन्टीक्वीटीज आफ राज, 1, पृ. 560
(ब) श्यामलदास, वीर विनोद, पृ. 806
(स) तवारीख-जोधपुर बन्डल, 40, पत्र 7, (पुरा लेखागार, बीकानेर) ।
(द) तबकात-अे-नासीरी, पृ 465
(य) शर्मा, जी. अेन., सोशियल लाइफ इन मेडिवल राजस्थान, पृ. 512
2 मारवाड़ में आ कावत चावी ही 'रिड़मलां थाप्या तिकै राजा' जिणरो अरथ है जिन्नै ,सिरदार गादी माथै थाप देता व्हौई राजा बणतो ।
3 ' पाबूप्रकाश, सर्ग, 16, श्लोक, 33-39

छींपा, धोबो, जुलाहा, कायमखानीं, सिन्धी, सलावट, लखारा, रंगरेज, पींजारा वगैरा मे अेक दूजी जात में समपण नीं व्है सकता ।[1] पण राजस्थान रै समाज रै इण घणापै रै मांय अेकटपणो भी घणों हो ज्यूं सगळा जातियां में अेक ई गांव री खांपा व्है ठेट राजघराणं सूं लेअर बाणियां, कसाई, छींपा, लवार, चमार, पांची, मोची अर मंगी तांई री जात सोलंकी, चौहान, राठौड़ कै दूजी कीं भी अेकई व्है सकै। सो घणापै रै बिच्चै अेकटपणं रो अो भाव तो होई कै सगळा भायां रा भाई हां। इण घणापै रै थकां आपसी हेत अर अेकटपणो भी मण तो हो। 'सहकारी-खेती' पेलापोत अठै सूं ई जलमी। हर अेक री उपज मांय सूं दोरावै री बेळा तोळणियो रावळो अर पिंडत, मांभी, भील, मोची, सांसी, नाई, अेवड़ वाळै, सूथार वगैरा रो हिस्सो हूवतो जिका 'आय' बाजतो। रावळै नै टाळ उपरला सगळा आपरी खेती को करता नी क्यूं कै गांव रा सगळा इयां नै आय देता। 'ला' री वेळा जिण अपणायत सूं सगळा गांव आळा नाठ-नाठ अर 'ला' करण वाळै रै सूड़, निनाण, सिटियां खूंटण में अर लाटै री बेळा बिना किणी लालच रै काम करावै, देखण जोग व्है। अै लासिया, बड़ियां सूं दोवड़ो काम करै। नवां झूंपड़ा ठावण में भी सगळा गांव वाळा 'ला' जेड़ं उत्साह सूं ई काम करै। ठाकरां अर सेठजो सूं लेअर सगळा गांव वाळा नवां झूपां नै दड़बावण अर किड़ावण में हाथ बंटावै। अैड़ो अेकटपणं रो भाव पनपावण मे भूगोल रो पूरो हाथ है।

खावण में थळी री उपज बाजरी अर ज्वार, मोठ नै कठैक गेहू काम आवै। कड़ी मेनत करण सूं भोजन दिन में च्यार वेळा व्है—सिरावण या कलेवो, रोटी, बेफारो (दोपारो) अर ब्यालू। पण च्यार बेळा खावणियां थोड़ा ई है। खावण में घणो नी तोई आठ तोळा भार रो बाजरो रो सोगरो, राब, खीच, घाट अर दळियो रोज रै जीमण री चीजां हो। साग सगळा रै लिख्योड़ो को हूंवतो नीं पण जिका जोग हा व्है केर, कूमटिया, सांगरियां, मोठ-फळी अर फोग वगैरा खावता। अै सगळी चीजा कम सूं कम पाणी री ठोड़ां निपज सकै इण सारूं अठै अेड़ज निपजती। बाजरी अठै तो बूढ़ा अर बीमार तांई पचावै पण जे बीजा मुलकां रा मिनख खावै तो को पच्चै नीं। डोकरियां अेक अंग्रेज साब री बात बतावै। खेत में निसरतां साब री भूख भड़की। खेतवाळो उणां नै सोगरै माथै सांगरियां घाल'र थमाई। दोरा-सोरा साब सांगरियां मुळमुळाई अर सोगरै नै अेके पाड़ै घनघनाय बोल्या कै अठै लोगां में आई कसर है वे पलेटां साफ नीं करै। बापड़ै साब को कसूर को हो नी सोगरो

---

1 गहलोत, जगदीशसिंह, राजपूताने का इतिहास, भाग 1, पृ. 102

व्हैई ग्रेड़ो करडो खीरां माथै सिक्योड़ो कै साव जे उणनै पलेट समझ गिया तो उणा री घणी गलती को ही नी। अठै भिनख रावांडियां रो साग घणा चाव सूं खावै जिणरो जलम ई मूगोल रै असर रो फळ है। बराळै में घास-फूस घणो व्है जद जिनावर दूध भी घणो देवै उण बेळा घी-छाछ घणोई व्है। पण आगै आठ-दस मइनां मेह-पाणी नी व्है अर आगलै बरस तांई री ठा नी पाणी पड़ै अर नी पड़ै। धरावां नै मालवै लेजाणा पड़ै इण सारू जद घणी छाछ व्है उणनै सुखाय माटां मे भर लेवै अर आडी-वेळा काम मे ले लै। अठै रै फल-फरुटां सारू दिसावरा पोंच्योड़े ग्रेक थलिये री बात घणी चावी है। उणनै किणी पूछियो कै थांरी थळी में खजूर, दाड़म, दाख ग्रौर ग्राम्बा तांई नी व्है पछै केडा फळ व्है। इण माथै वो थळियो कियो—

खोखा (ज्यूं) खारक खोपरा
ढालू (है) दाडम दाख
मुठ-काचर रै उपरै
वारां आम्बा लाख

पेरावै कानी निजर नाखां तो उठैई भूगोल दीखै। झीणा पतळा मलमला रा नीं व्है अर गाबा जाडी दो सूती खादी रा व्है सो डील बळती लू अर तड़तडतै तावड़ै सूं बच सकै। मिनखां रै सगळै गाबा रो धोळो रंग सायद तावड़ै रो फळ ई है। अर मूगोल री वजै सूं ई गाबा नै डील ढापण वाळा नी परा रक्षक मानै। इण सारू ई अगरखा या अंगरखी अर पगरखी इणां रा नाव बाजै क्यूं कै ग्रे तावड़ै, लू अर बळती घूड़ सूं डील अर पगां री रक्षा करै। हासळी, कड़ला अर चूड़ै मूठियै रो भार थळी री लूंठी लुगायाई झेलै। मोटो फैंटो ई तावड़ै, लू अर दुस्मणां रै सोटां सूं माथै नै बचावण रो कारज साधै।[1] इण री बखत ठीक ग्राज रै लो-रै टोपे (हेलमेट) दाई ही जिका तेज ग्रस्वारियां वाळा, माथो-फूटण सूं बचण खातर पेरै।

जीवण मार-धाड़ अर लड़ण सूं भरयोड़ो हो। इण सारू अठै सगती री अम्बा, जगदम्बा, दुर्गा, भवानी, चामुण्डा जैड़ै न्यारै न्यारै रूपा मे पूजा व्हैती।

अठै रा कला-साहित भी मूगोल रै असर सूं कोरा को रै सक्यानी। खुदाई अर मीनाकारी री इमारतां नी बण, मण्डोर, जोधपुर, सीवाणा, जाळोर, बीकानेर, जैसलमेर अर तन्नोट रा सेठा दुरग चुणीज्या जिणा री भीता बीस बीस फिट चवड़ी है। गावा रै भूपां री बिणगत गोळाई मे, अर छाजत ठेट

---

1 फैंटे रा पाग, साफा, पोतिया, खिड़किया पाग इत्याद बीजा नाव व्हेता।

ऊपर सूं साव पतळी अर तर तर नीचै घणी मोटी इण खातर ई व्है कै ग्रै घणी तेज बायरै सूं बच सकै। गांवां रै पक्कै घरां री छतां में ढाळ मायलै कानी राखै सो पनाळां सूं पाणी घर रै टांके में भेळो व्है सकै।

मायड़ राजस्थानी भी घणी पुरानी, सुतंतर रूप सूं फळी-फूली अर आपो-आप में अणमावती चोखायां राखै। राजस्थानी भाषा रै विकास रै सागै भूगोल जुड़योड़ो रियो। मिनख छीण-छीण बिखरयोड़ा रंवता, अेक बीजै सूं साव कटयोड़ा हा इण खातर अेके-जागा री बोलीचाली मे बीजी जागा सूं थोड़ो फरक रैंयो। थळी मे आ कावत घणी चावी है कै 'बारा कोसां माथै बोली बदळै।' पण ग्रै सगळी बोलियां अर भाषावां साव न्यारी को है नी, इयां मे साव चिन्योक फरक ई है। राजस्थानी में बोलण-सुणण मे भारी लखावण वाळा आखर घणा। मूर्धन्य आखर ट, ठ, ड, ढ, ण जित्ता राजस्थानी मे है दुनिया री बीजी भासा में को व्हैलानी। ळ अर स् जैड़ा आखर इण मे इज है। आ मायड़ भाषा मालदार घणी गू थीजण मे अेडी चोखी कै थोड़ेक आखरां सूं घणी बात केईज सकै। रेगिस्तान सूं जुड़योड़ी चीजां रा जितरा सबद इण में है वे आपोआप मे मिसाल है। उदाहरण सारूं बीजी भाषावां में ऊंट री लुगाई सारू न्यारो नांवई कोयनी। हिन्दी, उर्दू में 'ऊंठनी' अर लाई अंग्रेजी वाळा तो 'She Camel' सूं काम चलावे। राजस्थानी में सांइड नांव तो है इज, ऊंटरी ऊमर रै वदावै रै सागै जुड़योड़ा टोडिया, जाखोडा, पागल, करसळिया, मैंया, सुतर अर ढागा जैड़ा नांव भी मौजूद है। इणी तरै खेजड़ी रा नोखा सूकण सूं पेलां पीतळ, मिमजर, लौंक, टोडया अर सांगरिया वाजै। ख्यात साहित अठै रै इतिहास रा आरसी है अर घणाकरी रचनावां वीर रस री है।

पिणयारी, लूरा, गरमां, घूमर अर डंडिया जैड़ा नाच भेळावै सूं तो व्हैई, घणां लूंठा भी लखावै। डंडिया मे ठोकण अर बचण रा भाव भेळा है तो पिणयारी पाणी री कमी सूं जुड़योड़ो।

लारै जावतां थोड़े में आ केणो चाऊं कै राजस्थान नै घोराऊ मगरां मे भेळो ठूंसणो वाजब कोयनी। अठै रो भूगोल इणां मगरां सूं साव न्यारो है अर ओ अठै रै राजनीत, समाज अर धरम माथै तो हावी रियोइज, स्थापत्य, नाच अर साहित, धराव अर रूंखड़ा ताईं इण सूं कोरा नीं रै सक्या। सो आगै सूं भूगोल रै मुजब भारत रा च्यार नी पांच न्यारा खण्ड व्हैणा चाइजै। इणां मे पांचवों नुवों खण्ड राजस्थान बणै।